JAINA

POOJAVALI

सचित्र

पूजावली

श्रीयुक्त राय शेताव चन्द नाहार बाहादुर के

आज्ञा से

अजिमगञ्ज बिश्वविनोद-यन्त्रालय में

दुसरी दफे

श्रीरामाधिन सिंह नें छापा

ओ प्रकाश किया ।

सम्बत् १९६८

आषाढ़ ।

निछरावर १) जिल्द बन्धा १।०)

सूचना ।

यह "पूजावली" का द्वितीय संस्करण बम्बईके सुस्पष्ट अक्षरोंमे प्रकाशित किया गया. यह संस्करणमे कार्याकार्योपयोगी विषयोंकी परिवर्त्तण और परिवर्द्धण करके ग्रन्थ कलेवर बृद्धि कीया गया, पर निछरावर बढ़ाई नही गई। अतएव आशा है की आप लोग अवतक इस ग्रन्थको जिस तरह आग्रह से ग्रहण करते आय हैं, इस बारभी तद्वत आदर करेंगे। इस ग्रन्थके छापनेमे जो कोई अक्षर खोंट, काना-मात्रा भूल हुवा होय वा कोई तरहकी छापनेमे ज्ञानादिककी आशातना हुई होय, सो, मन बचन काया करके मिच्छामि दुक्कड़ं करताहूं, और जैन भाईयोंसे प्रार्थना है कि यह ग्रन्थ जयणासे उपयोग कर पाठ करें, किं बहुना. उत्तरोत्तर मङ्गलीक. मिति ।

सूचीपत्र ।

सूचीपत्र।

* ॥ इति सूचीपत्र सम्पूर्णम् ॥ *

॥ दोहा ॥

हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजन्त ।
जे जिनवर पूज्या नहि, वो पर घर काम करन्त ॥ १ ॥
भक्ति करो भगवानकी, धरो धरमका ध्यान ।
क्रोधादिककुं दूर कर, त्यागद्यो अभिमान ॥ २ ॥
प्रभुकी पूजा किजीए, उत्तम सद्गुरु पाय ।
वलिहारी वा गुरुतणी, जिनजी दिया बताय ॥ ३ ॥
भाव भक्तिका मूल है, भाव करो सब कोय ।
विना भाव भक्ति विना, मुक्ती कीस विध होय ॥ ४ ॥
अपनी अपनी गरजकुं, अरज करे सब कोय ।
मे गरजी अरजी करूं, प्रभु जेसी मरजी होय ॥ ५ ॥
जीवड़ा जिनवर पूजिये, पूजाना फल जोय ।
राजा नमें परजा नमै, आनन लोपे कोय ॥ ६ ॥
पांच कोड़िना फुलड़ा, पाम्या देश अठार ।
कुमारपाल राजा थयो, वरत्यो जय जय कार ॥ ७ ॥

॥ ॐ नमः ॥

पूजावली ।

सर्वज्ञं जिनमानम्य नत्वा सद्गुरुमुत्तमं ।
कुर्वे पूजाविधिं सम्यग् भव्यानां सुखहेतवे ॥

अथ श्री देवचन्दजी कृत स्नात्र पूजा ।

॥ पांखडी गाथा ॥

चौतीसे अतिशय जुर्ज, वचनातिशये जुत्त
सो परमेश्वर देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासन बैठा जगभाण, देखी भवियण गुण मणि खाण
जे दीठे तुझ निम्मल ज्ञाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १
कुसुमाञ्जली मेलो आदि जिनन्दा । तोरा चरण कमल चोवीसें
पूजोरे, चोवीस सोभागी, चोवीस वैरागी, चोवीस जिनन्दा
कुसुमाञ्जली मेलो आदि जिनन्दा ॥ १ ॥ इतना कही, कुसु-

माञ्जली चड़ाई जै, चरणां टीकी दीजै, हाथमें कुसुमाञ्जली लेई, नमोर्हत् सिद्धा० कही, पढ़ै ॥

॥ गाथा ॥

जोनिश्र गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त।
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योति सुरङ्ग निरत्त॥ १

॥ ढाल ॥

जो निज आतम गुण आनन्दी। पुग्गल सङ्गे जेह अफन्दी॥ जे परमेश्वर निज पद लीन। पूजो प्रणमो भव्य अदीन॥ कुसुमाञ्जली मेलो शांति जिनन्दा। तोरा चरण कमल चोवीस पूजारे, चोवीस सोभागी, चोवीस वैरागी, चोवीस जिनन्दा; कुसुमाञ्जली मेलो शांति जिनन्दा॥ २ कुसुमाञ्जली चड़ाई जै, गोड़ां टीकी दीजै, फेर हाथमें, कुसुमाञ्जली लेके नमोर्हत्सिद्धा० कही पढ़ै॥

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयासकर, निम्मल गुण सम्पन्न।
निम्मल धम्मु वएस कर, सो परमप्पा धन्न॥ १

॥ ढाल ॥

लोका लोक प्रकाशक नाणी। भविजन तारण जेहनी वाणी॥ परमानन्द तणी निसाणी। तसु भगतें मुझ मति ठहराणी॥ कुसुमाञ्जली मेलो नेमी जिनन्दा। तोरा चरण

कमल चोवीस पूजोरे, चोवीस सोभागी, चोवीस वैरागी,
चोवीस जिनन्दा ; कुसुमाञ्जली मेलो नेमी जिनन्दा ॥ ३ ॥
दोनुं हाथे टीकी दीजै, मुखै पढ़ै, नमोर्हत्सिद्धा० ॥

॥ गाथा ॥

जे सिद्धा सिद्धन्तिजे, सिद्धिस्सन्ति अनन्त ।
जसु आलम्बन ठवियमन, सो सेवो अरिहन्त ॥ १

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकालै । सम परिणामें जगति निहालै ॥ उत्तम साधनो मार्ग देखालै । इन्द्रादिक जसु चरण पखालै ॥ कुसुमाञ्जली मेलो पास जिनन्दा । तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे, चोवीस सोभागी, चोवीस वैरागी, चोवीस जिनन्दा ; कुसुमाञ्जली मेलो पास जिनन्दा ॥ ४ ॥
दोनुं खांध टीकी दीजै, मुखे पढ़े नमोर्हत्सिद्धा० ॥

॥ गाथा ॥

सम्म दिठी देशजय, साहु साहुनी सार ।
आचारज उवज्झाय मुनि, जो निम्मल आधार ॥ १

॥ ढाल ॥

चौवीह संघ जे मन धार्‌यो । मोक्ष तणां कारण निरधार्‌यो ॥ विविह कुसुम वर जात गहेवी । तसु चरणे प्रणमन्ति ठवेवी ॥ कुसुमाञ्जली मेलो वीर जिनन्दा । तोरा

चरण कमल चौवीस पूजोरे, चोवीस सोभागी, चोवीस वैरागी, चोवीस जिनन्दा ; कुसुमाञ्जली मेलो वीर जिनन्दा ५ ॥ मस्तक टीकी दीजै, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही चमर हाथमें लेवै ॥ इति ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर । नमिय मनरङ्ग ॥
कल्याण कविह संठविय । करि सुधम्म सुपवित्त सुन्दर ॥
सयइक सत्तरि तित्थंकर । इक समय विहरन्ति महियल ॥
चवन समय इगवीस जिण । जन्म समय इगवीस ॥ भत्तिह भावें पूजीया । करो सङ्घ सुजगीस ॥ ६ ॥ इति

एकदिन अचिरा हुलरावती (ए चाल०)

भव तीजय समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या । तजि इन्द्रिय सुख आसंसना, करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अतिराग प्रशस्त प्रभावता, मनभाव ना एहवी भावता । सवजीव करूं शासन रसी, एसी भाव दया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरमलूं । आउबन्धै विचइ एकभव करी, श्रद्धा संवेग ते थिरधरी ॥ ३ ॥ तिहां चवीअ लहे नरभव उदार, भरत तिम एरवत तजसार । महाविदेह विजय परधान, मज्झखण्डे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

पुन्यें सुपना ह देखै, मनमां हरष विसेषै । गजवर उज्जल सुन्दर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निरभय केसरी सिंह, लखमी अतिहि अबीह । अनुपम फूलनी माला, निरमल शशी सुकमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपै, इन्द्रधजा जग जीपै । पूरण कलस पण्डुर, पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥ इग्यारमें रयनायर, देखै माताजी गणसायर । बारमें भुवन विमान, तेरमें रतन निधान ॥ ४ ॥ अगनि शिखा निरधूम, देखै माताजी अनोपम । हरखी रायने भासै, राज अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्यै पुत्र मनोहर । इन्द्रादिक जसु नमसै, सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ॥

पुन्य उदय पुन्य उदय, ऊपना जिननाह । माता तव रयणी समें, देखि सुपन हरखन्त जागीय ॥ सुपन कही निज कन्तने, सुपन अरथ सांभले सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्यै पुत्र निधान । इन्द्रादिक जसु पायनमी, करसै सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल (चन्द्रा उल्लालानी ॥

सोहमपति आसन कम्पीयो, देई अवधि मन आनन्दीयो मुझ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो

जिहाज ॥ १ ॥ भव अडवी पारग सत्थवाह, केवलनाणा ईय गुण अगाह। शिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उलस्यो आसाढ़ि मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसं तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु नमाय। सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिन्द, प्रणमन्तो जिन आनन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअड़ पय समुहा आवितत्थ, करी अञ्जली प्रणमिय मत्थ सत्थ। मुख भाषे एक्षण आजसार, तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रेरे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु समेव। तसु शान्तिकरण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुड़वान ॥ ५ ते देव जगत्तारण समत्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ। इम जम्पी शक्रत्तव करेवी, तव देव देवी हरखे सुणेवी ॥ ६ गावै तब रम्भा गीतगान, सुरलोक हुवो मङ्गल निधान। नर खेत्रें आरज वंसठाम, जिनराज बधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ पिता माता घरे उच्छव अलेख, जिन शासन मङ्गल अति विशेष। सुरपति देवादिक हरखसङ्ग, संयम अरथी जननें उमङ्ग ॥ ८ ॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ, जन्म्या इन्द्रादिक हर्ख साथ। सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव, वधाई वधाई थई अतीव ॥ ९ ॥ फूल अक्षतसें वधावे, ३ प्रदाक्षिण देवे, (पीछे शक्रत्तव, ठाणं सम्पाविउंकामस्स, तक कहे (पीछे) रोली तथा) केसरका हाथमें साथिया करै, धूप खेवै ॥

॥ ढाल ॥

श्री शान्ति जिननो कलश कहि सुं० (ए चाल ।

श्री तीर्थपतिनो, कलश मज्जन गाइयै सुखकार ; नर खेत्र मण्डण दुह विहण्डण, भविक मन आधार । तिहां रावराणा हरख उच्छव, थयो जग जयकार ; दिशि कुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी सङ्ग कुमरी, गावती गुणछन्द ; जिन जननी पासे आय पहुती, गहकती आनन्द । हे माय तें जिनराज जायो, शचि वधायो रम्म; अम जम्म निम्मल करण कारण, करिस सूईअ कम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि शोधन दीप दरपन, वाय वींझणधार; तिहां करिय कदली गेह जिनवर, जननी मज्जन-कार । वर राखड़ी जिनपाणि वांधी, दीयें इम आसीस । युगकोड़ कोड़ी चिरञ्जीवो, धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥

॥ ढाल (उल्लालानी ॥

जिनरयणीजी दश दिश उज्जलता धरै, सुभलगनेंजी ज्योतिष चक्रते संचरै । जिन जनम्याजी जिण अवसर माता घरे, तिण अवसरजी इन्द्रासन पिण थर हरे ॥

॥ त्रुटक ॥

थरहरै आसन इन्द्र चिन्तै कौन अवसर ए बन्यौ, जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आनन्द ऊपनो । निज सिद्ध

सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगतें ऊमह्यो, विकसन्त वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

तव सुरपति जी घन्टानाद करावए, सुरलोके जी घोषणा एह दिरावए । नरक्षेत्रें जी जिनवर जनम हुवो अछै, तसु भगतें जी सुरपति मन्दिर गिर गछै ॥

॥ त्रुटक ॥

गछै मन्दिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिन तणो, जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सविसुर घणो । तुम सुद्ध समकित थास्यै निरमळ देव देवी निहालतां, आपणा पातिक सर्व जास्यै नाथ चरण पखालतां ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

इम सांभलजी सुरवर कोड़ी बहु मिली, जिन वन्दन जी मन्दर गिरि साहमी चली । सोहम पतिजी जिन जननी घर आवीया, जिन माताजी वांदी स्वामी वधा विया ॥

॥ त्रुटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्यहुं कृतपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देवदीठो मुझ समो कुण अन्यए । हे जगत जननी पुत्र तुझचो मेरु मज्जन वरकरी, उच्छङ्ग तुझचै वलिय थापिस आतना पुन्यं भरी ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या, पांच रूपें जी अतिशय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव बत्तिस आगल वहै, सुरकोड़ी जी जिन दरसणनें ऊमहै ॥

॥ त्रुटक ॥

सुर कोड़ि कोड़ी नाचती वलि नाथ शचि गुण गावती, अपछरा कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती । जय जयो तूं जिन राज जग गुरु एमदै आसीस ए, अम्ह त्रान शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

सुरगिरवर जी पांडुक वनमें चिहूं दिसै, गिरसिल परजी सिंहासण सासय वसै । तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या, चौसट्ठ जी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रुटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगतै कलश श्रेणि वणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थओषधि सर्व वस्तु अणाव ए । अच्युय पति तिहां हुकमकीनो देव कोड़ा कोड़िनें, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर कर जोड़िनें ॥ ५ ॥ (सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकै खड़ा रहै, मुखसे पढ़ै)

॥ ढाल ॥

शान्तिनें कारणै इन्द्र कलशा भरै (ए चाल)

आत्म साधन रसी देव कोड़ी हसी, उल्लसीनें धसी खीरसागर दिसी। पौमद्रह आदि द्रह गङ्ग पमुहानई, तीर्थ-जल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अट्ठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासनें सुभतरा। उपगरण पुप्फचङ्गेरी पमुहासवे, आगमें भासिया तेम आणीठवे २ ॥ तीर्थ जल भरिय करकलश करि देवता, गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमरनें हर्ख उपजावता, धन्य अह्म सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित वीज निज आत्म आरोपिता, कलश पाणीमिसें भक्तिजल सींचता। मेरु सिहरो वरै सर्व आव्या वही, शक्रउच्छङ्ग जिन देखि मन गह गही ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

इंद्दो देवा अनाई, कालो अदिठ पुवो, तिलोय तारणो, तिलोय बन्धु। मिछत्तमोह विद्धन्सणो, आणाइ तिन्ना विणासणो, देवाहि देवो दिठ्वो हिअय कामेहिं ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहज ॥

सुम पभणन्ति वण भुवन जोईसरा, देव वैमाणिया भत्ति

धम्मायरा । केवि कप्पाट्टिया केवि मित्ताणुगा, केई वररमण वयणेण अइउच्छगा ॥ ५ ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थु अच्चुय २ इन्द्र आदेश ॥ करजोड़ि सर्व देवगण, लेय कलश आदेस पामीय । अदभुत रुप सरूपजुय, कवण एह पुच्छंत सामीय ॥ इन्द्र कहै जगतारणों, पारग अह्मपरमेस । दायक नायक धम्मनिहि, करियै तसु अभिषेस ॥ १ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥

तीर्थ कमल वर उदक भरीनें, पुषकर सागर आवै (एचाल)

पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा, जिनवर अङ्गै न्हावे । आतम निरमल भाव करन्ता, वधतें शुभ परिणामें ॥ अच्चुतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकान्त, सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेक करन्त ॥ १ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशान सुरिन्दो, सकं पभणेइ करिहु सुपसावो ।
तुह्म अङ्के मह नाहो, खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १
ता सकिन्दो पभणई, साहमीय वच्छलंमि वहुलाहो ।
आणाइवंतेनं गिएहह, होउ कयत्थाओ ॥ २

इतना कहके, सर्व स्नात्रिया, भगवान ऊपर कलश ढाले । मुखैपड़ै ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, न्हवन करै प्रभु अङ्ग । करिय विलेपण पुष्फ मालठवि, वर आभरण अभङ्ग ॥ सो० १ ॥ तव सुरवर बहु जय २ रव करै, नच्चेधर आनन्द । मोक्ष मारग सारथ पति पाम्यो, भांजिसु हिव भवफन्द ॥ सो० २ कोड़िबत्तीस सोवन्न उवारी, बाजन्तै वरनाद । सुरपति सङ्ग अमर श्री प्रभुनें, जननीनें सुप्रसाद ॥ सो० ३ ॥ आणीथापै एम पयंपै, अम्ह निसतारिया आज । पुत्र तुम्हारो धणीय अम्हारो, तारण तरण जिहाज ॥ सो० ४ ॥ मात जतन करी राखिज्यो एहनें, तुम्ह सुत अम्ह आधार । सुरपति भगति सहित नन्दीसर, करै जिन भगति उदार ॥ सो० ५ ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्ज्जर, कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्यानक, इच्छा चित्त मझार सो० ६ ॥ खरतर गच्छ जिन आणा रङ्गी, राज सागर उवज्झाय । ज्ञान धरम दीपचन्द सुपाठक, सुगुरु तणै सुपसाय सो० ७ ॥ देवचन्द निज भगतें गायो, जनम महोच्छव छन्द । बोधबीज अंकूरो उल्हस्यो, सङ्घ सकल आनन्द ॥ सो० ८ ॥

॥ ढाल ॥

इम पूजा भगतै करो, आतमहित काज । तजिय विभाव

निजभावना, रमतां शिवराज ॥ इ० १ ॥ काल अनन्ते जे हुआ, होस्यै जेह जिणन्द । सम्पइ सिमन्धर प्रभु, केवल नाण दिनन्द ॥ इ० २ ॥ जनम महोच्छव इणि परै, श्रावक रुचि वन्त । बिरचै जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खन्त ॥ इ० ३ देवचन्द जिन पूजना, करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इ० ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधि

॥ ❀ अथ अष्टप्रकारी पूजा ❀ ॥

॥ अथ १ जल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गङ्गामागध क्षीरनिधि, ऊषध मिश्रित सार ।
कुसुमें वासित शुचिजलें, करो जिन स्नात्र उदार ॥ १

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अडविध करि भरी कलश सफार, शुभ रुचि जे जिनवर नमें तसुनही दुरित प्रचार । मेरुशिख जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान, करता वरता निज समकित बृद्धि निधान ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

हर्ख भरि अप्सरावृन्द आवै, स्नात्र करि एम आसीस भाखै । जिहां लगै सुरगिरि जम्बुदीवो, अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ १ ॥

॥ श्लोकः ॥

विमल केवल भासन भास्करं, जगति जन्तु महोदय कारणं । जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय, श्री मज्जिनेन्द्राय, जलं यजाम हे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जल पूजा ॥ जलसें न्हवन करावै ॥

॥ अथ २ चन्दन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

बावना चन्दन कुमकुमा, मृगमदनें घन सार ।
जिन तनु लेपै तसुटलै, मोह सन्ताप बिकार ॥ १

॥ ढाल ॥

सकल सन्ताप निवारण तारण सहु भवि चित्त, परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त । निज रूपै उपयोगी धारी निजगुण गेह, भावचन्दन सुह भाव थी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥

॥ चालि ॥

जिन तनु चरच्चतां सकल नाकी, कहै कुग्रह उष्णता आज थाकी । सफल अनिमेषता आज म्हाकी, भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

सकलमोह तमिस्र विनाशनं, परम शीतल भावयुतं जिनं । विनय कुंकुम चन्दन दर्शनैः, सहज तत्व विकास कृतेर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये, जन्मजरा मृत्यु निवारणाय, श्री मज्जिनेन्द्राय, चन्दनं यजामहे स्वाहा २ ॥ इति चन्दनपूजा ॥ केसर चन्दन चढ़ावै ॥

॥ अथ ३ पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाब ।
केतकी दमणो बोलसिरि, पूजो जिन त्रिर ठाव ॥ १

॥ ढाल ॥

अमल अखण्डित विकसित सुभ सुमनी घन जाति, लावीनो टोडर ठचो अङ्गीरचो बहुभांति । गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवाभव्य, गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥

॥ चालि ॥

जगधणी पूजतां विविध फूलै, सुरवराते गिणें क्षण अंमूलै,
खन्ति धर मानवा जिनपद पूजै, तसुतणा पाप संताप धूजै ॥

॥ श्लोक ॥

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै, विंशद चेतन भाव समुद्भवैः ।
सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परमतत्व मयं हि यजाम्यहं ॥ १

ॐ ह्रीं परमात्मने, अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये, जन्मजरा मृत्यु निवारणाय, श्री मज्जिनेन्द्राय, पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

इति पुष्प पूजा ॥ पुष्प चढ़ावै ॥

॥ अथ ४ धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोवान ।
मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिननें धूपदान ॥ १

॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहै तिम दहै पातिक बृन्द, अरति अनादिनी जावै पावै मन आनन्द । जे जिन पूजै धूपै भव कूपैं फिर तेह, नावै पावै ध्रुवघर आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥

॥ चालि ॥

जिनघरे वासतां धुपपुरै, मिच्छत दुर्गन्धता जाइ दुरै. धुप जिम सहज ऊर्द्धगत स्वभावं, कारिका उच्चगति भाव पावै ॥

॥ श्लोकः ॥

सकल कर्म्म महेंधन दाहनं, विमल संवर भावसु धूपनं ।
अशुभ पुद्गल सङ्ग विवर्जितं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा० ॥ ४ ॥
इति धूप पूजा, धूप अगरबत्ती खेवै ॥

॥ अथ ५ दीप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्रकरी घृत पूर ।
वृत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

मङ्गलदीप वधावो गावो जिन गुण गीत, दीपथकी जिम आलिका मालिका मङ्गलनीत । दीपतणी सुभज्योती द्योती जिन मुखचन्द, निरखी हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

जिन गृहे दीपमाला प्रकासैं, तेहथी तिमर अज्ञान नासैं ।
निजघटे ज्ञानज्योती विकासै, तेहथी जगतणा भावभासै ॥ ३

॥ श्लोकः ॥

भविक निम्मल बोध विकाशकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतुभाव विकाश

कृतेजंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । दीपं यजामहे स्वाहा ५ ॥ इति दीपपूजा, मङ्गलदीप चढ़ावै ॥

॥ अथ ६ अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत ३ पूरसुं, जे जिन आगे सार ।
स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण नर विस्तार ॥ १

॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षतचङ्ग, पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रङ्ग । निज सत्तानें सन्मुख उन-मुख भावे जेह, ज्ञानादिक गुणठावै भावे स्वस्तिक एह ॥ २

॥ चाल ॥

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगै, स्वस्ति श्री भद्र कल्याण जागै । जन्मजरा मरणादि असुभ भागै, नियत शिव सर्म रहै तासु आगै ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

सकल मङ्गलकेलि निकेतनं, परम मङ्गल भावमयं जिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षतपूजा । अखण्ड चावल चढ़ावै ॥

॥ अथ ७ नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सरस सुचि पकवान बहु, शालि दालि घृतपूर ।
धरो नैवेद्य जिन आगलै, क्षुधा दोष तसु दूर ॥ १

॥ ढाल ॥

लपनश्री वर घेवर मधुतर मोतीचूर, सींहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींहोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

होवतां भोज्य पर भाव त्यागे, भविजना निज गुण भोज्यमांगे । अम्हभणि अम्हतणो सरुप भोज्य, आपज्यों तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

सकल पुद्गलसङ्ग निवर्जनं, सहज चेतनभाव विलासकं ।
सरसभोजन नव्य निवेदनात, परम निर्वृति भाव महं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

इति नैवेद्यपूजा । नैवेद्य मिठाई पकवान चढ़ावै ॥

॥ अथ ८ फलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

एक बीजोरुं जिन करै, ठवतां सिवपद देइ।
सरस मधुर रस फल गिणें, इइ जिन भेट करेइ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरङ्ग नारङ्गी आंबा सार, अञ्जीर वञ्जीर दाड़िम करणा षट्बीज सफार। मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह, वरण गन्धादिक रमणीक वहुफल ढोवै तेह ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

फलभर पूंजतां जगत स्वामी, मनुजगति तेलहै सफल पांमी। सकल मनुष्येय गतिभेद रङ्गै, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसङ्गै ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

कटुक कर्मविपाक विनाशनं, सरस पक्कफलं ब्रज ढोकनं वहति मोक्षफलस्य प्रभोपुरः, कुरुत सिद्धि फलाय महाजना १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढ़ावै ॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इम अरु विधि जिनपूजना, विरचै जे थिरचित्त ।
मानवजन्म सफलो करै, बाधै समकित वित्त ॥ १

॥ ढाल ॥

अगनित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय, श्रुतधारी उपगारी श्री ज्ञान सागर उवज्झाय । तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन, श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रस-पीन ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

संम्वत गुणयुत अचल इन्दु, हर्ष भरीगाइयो श्रीजिनेंदु । तासुफल सुकृत थी सकल प्राणी, लहैज्ञान उद्योत धन शिव निसानी ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

इति जिनवरबृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देव चन्द्र स्तुवन्ति । प्रति दिवस मनन्तं तत्व मुद्भासयन्ति, परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अर्घं यजामहे स्वाहा, च्यारे खूंणै धार दीजै । इति अर्घपूजा

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने। दध्यक्षतैः कुसुमचन्दन गन्ध धूपैः, कृत्वार्च्चनन्तु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लङ्कार वस्त्रादिकं, पूजा तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्याति भक्त्यादृतः। नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेशक्षयाकाङ्क्षया ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढ़ावै, इति वस्त्रपूजा। इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥

अह पड़िभग्गा पसरं, पया हिणं मुणिवयं करि ऊणं। पड़इ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खेविणुं मुह जिण वरह, दीहर नयण सलूण। न्हावइ गुरु मच्छह भरिय, जलण पइस्सइ लूण ॥ २ ॥ लूण ऊतारिह जिणवरह, तिन्नि पयाहिणि देव। तड़ तड़ शब्द करन्तिये, विज्जा विज्जे जलेण ॥ ३ ॥ जंजंण विजव थुई, जलेणतं तहइ अत्थसदस्स। जिणरुवा मच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स ॥ ४ ॥ ए कही लूण अग्निशरण करै (पिछै) लूण पाणी लेई, मुखें गाथा कहे ॥

॥ गाथा ॥

सव्ववि सुणवइ जलविजल, तन्तह जमड़इपास अहवि कयन्तस्स निम्मलउं, निग्गुण बुद्धि पयास ५ ॥ जलण अणें विएए जलणहि पास, जरवि कय जाल जावहि पास । तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय बुटै जव डुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणुं, सुरवर जावहि मुणिवई सेवणुं । पजणई जिणवर तुहपइ सरणं, जयतुहइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ७ ॥

ए कही लूण उतारी जल सरण कीजै । इति निमक उतारण पूजा ॥

॥ अथ पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे सण्ठिय कुणं तस्स । जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छतुह हुय वहे पड़णं ॥ १ ॥ सव्वो जिण प्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चन्ती । सव्वन्नूण अपासे, जड़स्स भमणं न सङ्कमणं ॥ २ ॥ अच्चन्त दुःकरं पिहु, हुयवह निवड़ेन जड़ेन कयं । आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयत्थ मूलमिणं ॥ ३ ॥ ए कही माला चड़ाइजै ॥

॥ अथ बूटा फूल पूजा ॥

उवणेव मङ्गलेवो, जिणाण मुह लालि संवलिया। तित्थ पवत्तम समई, तियसे विमुक्का कुसुम वुट्ठी ॥ १ ॥ ए कही फूल उछालिजै प्रभु आगै ॥

॥ अथ सतर भेद पूजाकी बिधी ॥

प्रथम स्नान करै। पिछे, अष्ट प्रकारी पूजा करै। फिर सोना रूपा प्रमुखकी रकेबीमें, कुंकुम (तथा) केसर प्रमुखको साथियो करै। पिछे, सुन्दर कलश, केसर प्रमुख मिश्रित शुद्धजल भरी, रुपियो थापनाको कलशमेंरखी, कलश रकेबीमेंधरे। पीछे, स्नात्रिया मुख कोस उत्तरासण करके तीन नवकार गुणे। तिन नमस्कार करी, हाथे धूपदेई, रकेबी हाथ धरै। मनथिर राखै। छीक वर्जै। स्नात्रिया सन्मुख खड़ा रहै। मुखै इम पड़ै। भावभलै भगवन्तजी इत्तादी) ॥

॥ अथ सतर भेद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

भावभलै भगवन्तनी, पूजा सतर प्रकार ।
परसिध कीधी द्रोपदी, अङ्ग छठै अधिकार ॥

(राग सरफरेदा)

ज्योति सकल जग जागती, (हांरेअइ०) सरसति समरि सुभिंद । सतर सुविधि पूजा तणी, पभणिसु परमानंद ॥ १

॥ गाथा ॥

न्हवण १ विलेपण २ वत्थयुगं ३ गन्धारुहणञ्च ४ पुप्फरोहणयं ५, माला रोहण ६ वन्नयं ७. चुन्न ८ पड़ागाय ९ आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकला सुय वंसुघरं ११ पुप्फं पगरञ्च १२ अठमङ्गलयं १३ धूव उखेवो १४ गीययं १५ । नट्टं १६ वज्जं १७ तहाभणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाता अङ्ग मझार । द्रुपदसुता द्रोपदी परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा (राग देसाख)॥

पूर्व्वमुख सावनं करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचित मानी। (अइयो०) विहत मुख कोसके खीर गन्धोदकै, सुभृत मणिकलश करि विवध वांनी ॥ अ० १ ॥ नमवि जिन पुङ्गवं लोमहस्तेनवं, मार्जनं करिय वा वारि वारी अ०। भणिय कुशमञ्जली कलश विधि मनरली, नवति जिन इन्द्र जिम तिम अगारी ॥ अ० २ ॥

॥ दोहा ॥

परमानन्द पीयुष रस, न्हवन मुगती सोपान।
धरम रूप तरु सींचवा, जलधर धारसमान ॥ १
पहली पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम। शुचि पखाल तनु जिणतणें, करइ सुकृत हित काम ॥ २

॥ अथ विधि (राग सारङ्ग)॥

पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी। पू०। परमानन्द तिण छल्योरी सुधारस, तपत बुझिय मेरै तनकी ॥ पू० १ ॥ प्रभुकूं विलोकी नमि जतन प्रमारजित्त, करत पखाल सुचि धार वनकी। पू०। न्हवन प्रथम निज वृजन पुलावत, पङ्कुम्व रष जिम धनकी ॥ पू० २ ॥ तरणि तारणि भवसिन्धु तिरणकी, मञ्जरी सम्पद फल वरधनकी। पू०। शिवपुर पंथ दिखावण दीपी, धूमरी आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ३ ॥

सकल कुशल रङ्ग मिल्योरी सुमति सङ्ग, जागी सुदिशा सुभ मेरे दिनकी । कहै साधु कीरति सारङ्ग भरकरतां, आसफली मेरे मनकी ॥ पू० ४ ॥ इति प्रथम न्हवणपूजा ॥ १ ॥ पञ्चामृतसुं न्हवणकीजै (तथा) डावै पांवके अंगूठै जल-धार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

सुन्दर अङ्ग लूहणें करी, बिंब प्रमार्जी, केसर चन्दन मृगमद अगरादिकसें, कचोला भरी, लेकर खड़ारहै । मुखे०

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहै जिन मन रगङ्गसूंरे (देवा) सखरसुधूपित धाससुं ॥ वाससुं (हांरेदेवा) वा० । गन्ध कसायसुमेलिये ॥ १ ॥ नन्दन चन्दन चन्दमेलियै रे (देवा न०) मांहे मृगमद कुंकुम भेलीयै ॥ करलीयै (हांरेदेवा) क० । रयण पिङ्गणि कचोलीये ॥ २ ॥ पग जानु कर खन्धै सिरै रे (देवा) भाल-कण्ठ उर उदरन्तरै । दुखहरै (हांरेदेवा) सुखकरै । तिलक नवेअङ्ग कीजीयै ॥ ३ ॥ दूजीपूजा अनुसरै, श्रावक दू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै, तिमकरै (हांरे देवा) ति० । जिण-पर जनमन रञ्जीयै ॥ गा० ४ ॥

॥ दोहा (राग ललितमें) ॥

करहु विलेपन सुखसदन, श्री जिनचन्द शरीर ।
तिलक नवे अङ्गपूजतां, लहै भवोदधि तीर ॥ १
मिटै ताप तसु देहको, परम शसिरता सङ्ग ।
चित्तखेद सब उपसमें, सुखमें समर सीरङ्ग ॥ २

॥ अथ विधि (राग ललित) ॥

विलेपन कीजै जिनवर अङ्गै, जिनवर अङ्ग सुगन्धै ॥ वि० । कुंकुम चन्दन मृगमद यक्षकर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० १ ॥ क्रम जानु कर खन्धै शिर भाल कण्ठ, उर उदरन्तर सङ्गै । विलुंपाति अघमेरो करत विलेपन, तपत बुझाति जिम अंगै ॥ वि० २ ॥ नव अंग नव नव तिलक करतही, मिलत नवनिध चंगइ । कहै साधु तन सुचि करसु ललित पूजा, जैसें गंग तरंगे ॥ वि० ३ ॥ इति द्वितीय विलेपन ॥ २ ॥ एकही विलेपन कीजै । नव अंग पूजीये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्र युगल पूजा ॥

अत्यन्त कोमल सुगन्ध अमोलक वस्त्र युगल पर, केसरनो साथियो करी, प्रभुजी आगे खडा रहै मुखे इम पढ़ै ॥

॥ दोहा ॥

वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपें जिन अङ्ग ।
लाभ ज्ञान दर्शन लहै, पूजा तृतीय प्रसङ्ग ॥ १

॥ राग गौड़ी ॥

कमल कोमल घन चन्दन चरचित, सुगन्ध गन्धै अधि-वासिया ए ॥ हांरे अइयो० ॥ कनक मण्डित हिय लालपल्लव शुचि। वसन जुग कन्ति अधिवासिया ए ॥ हांरे अइयो ॥ जिनप उत्तम अङ्ग सुविधि शक्रो यथा। करिय पहिरवाणी ढोइयै ए ॥ हांरे अ० ॥ पापलूहण अङ्ग लूहणो देवनें। वस्त्र-युग पुञ्ज मल धोइयै ए ॥ हांरे अ० २ ॥ इति

॥ अथ विधिः (राग वैराड़ी ॥

देव पुष्प युग पूजा वन्योंहै जगतगुरु। हे हांए। आछो वन्योंहै जगतगुरु, देव दुख्खहर अब इतनो मांगुं। तुंहीहै सबहि हितु तुंहिहै भुगतिदाता, तिण नमि २ प्रभु जीकैं चरणें लागूं ॥ दे० १ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिस देह उत्तम वागूं। श्रवण अञ्जली पुट गुण अमृतपीतां, सबराड़ी दुख संशय भ्रम भागूं ॥ दे० २ ॥ इति तृतीय वस्त्रयुगल पूजा. एकही वस्त्रयुगल चढ़ावै ॥

॥ अथ चतुर्थी सुगन्धचूर्ण पूजा ॥

अगर, चन्दन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीका चूर्ण करी, कचोली भरी, आगै ऊभा रहै, मुखें इम पढ़ै ॥

॥ दोहा (गोड़ी रागमें) ॥

पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारै वास ।
कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोह दलपास ॥ १

॥ राग सारङ्ग ॥

हां होरे देवा) बावना चन्दन घस कुमकुमा, चूरण विधि विरचै वासुए । हां होरे देवा । कुसुम चूरण चन्दन मृगमदा, कङ्कोल तणो अधि बासुए ॥ हां० २ ॥ वास दशो-दिश वासतें, पूजै जिनअङ्ग उवंगुए । हां० । लाछि भवन अधिवासीयो, अनुगामिक सरभ अभंगुए ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ बिधिः (राग पुर्बी गौड़ी) ॥

मेरै प्रभुजीकी पूजा आनन्द मेलै । पू० । वासभवन मोह्यो सबलोए, सम्पदा भैलै ॥ पू० १ ॥ सतर प्रकारी पूजा विजय देवा तत्ताथेई । वि० । अप्रमत्त गुण तोरा, चरण सेवै पू० २ ॥ कुंकुम चन्दन वासै, पूजीयै जिनराज ता थेई । चतुरगति दुक्ख गोरी, चतुर्थी धनकी ॥ पू० ३ ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥ एकही वासचूर्ण प्रभुजीके विंब उपर छांटै, मन्दिर मैं चूर्ण उछालै ॥

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥

गुलाव, केतकी, पांचं तरेका फूल रकेबीमें रक्खी, मुखें इम पढ़ै ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसै तिम विकसतां, पुहप अनेक प्रकार।
प्रभु पूजा ए पञ्चमी, पञ्चमी गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

चम्पक केतकी मालती ए। हांरे अ०। कुन्दकिरण मचकुन्द, सोवन जाई जूइका, बउलसिरी अरविन्द ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए। हांरे उ०। मुकुलित कुशम अनेक, सिव रमणीसें वर वरै, विध जिन पूज विवेक ॥ वि०

॥ अथ विधि (राग कानड़ा) ॥

सोहैरी माई बरणें, मन मोहैरी माई बरणैं। अहो बरणं। विविध कुशम जिन चरणें। अ०। विकसी हसीय जम्पे साहिबकुं, राख प्रभु हम सरणें ॥ सो० १ ॥ पांचमी पूजा कुशल मुकुलितकी (कु०) पंच विषै (हां० प०) दुख हरणें सो०। कहै साधु कीरति भगति भगवन्तकी, भविक नरा। हांरे भ०। सुख करणें ॥ सो० २ ॥ इत्ति पांचमो पुप्पारोहण पूजा। पांच जातना पुप्प चढ़ावै ॥

॥ अथ छठी पुष्पमाला रोहण पूजा ॥

नाग, पुन्नाग, दमणो, गुलाब पाड़ल, मोगरा, सेवती, चंवेली, मालती इत्यादि पंच वरण फूलानी माला हाथे लेई खड़ा रहै, मुखै इम पढ़ै ॥

॥ दोहा ॥

छठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुष्फमाल।
गुण गुन्थी आपै गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी गुजरी ॥

नाग पुन्नाग मन्दार नवमालिका, मल्लिका सोग पारिध कलीए ॥ भलां पा॰ २ ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासन्तिका, लाल गुलाल पाड़ल भिलीए ॥ भलां ए ३ ॥ जासुमणि मोगरा वेउला मालती, पंचवरणै गुन्थी मालतीए भलां गु॰। हेमाल जिनकण्ठ पीठे ठवी लह लहै, जाणि सन्ताप सब पालतीए ॥ भलां॰ ॥ इति

॥ अथ विधिः (राग आसाउरी) ॥

देखी दामा कण्ठ जिन अधिक ए आनन्दै, चकोरकुं देखि जिम चन्दे ॥ दे॰ १ ॥ पञ्चविध वरण रची कुशमाङ्गी जैमी रयणांह (जै॰) चलि सुह मन्दे ॥ देखी॰ २ ॥ छहाँरे तोड़र पूजा तवड़ार धुनै सब अरियन (हाँरे स॰) होइ तिम छन्दे ॥ दे॰ ३ ॥ कहै साधु कीरत सकल आस्या सुख भनिक भगत (हाँर भ॰) जे जिन वन्दे ॥ दे॰ ४ ॥ इति छट्ठी फूल फूलमाला पूजा ॥ ६ ॥ ए कही प्रभुजीके कण्ठे फूलमाला चढ़ावे ॥

॥ अथ सप्तमी अङ्गरचन पूजा ॥

पञ्चवरणा फूल केसरसें अङ्गीरचै, सो हाथे लेई. मुखे इम पढ़े ॥

॥ दोहा ॥

केतकी चम्पक केवड़ा, सोजै तेम सुजात ।
चाढ़ो जिम चढ़ता हुवै, सातमी यै सुख सात ॥ १

॥ राग केदारो गौड़ी ॥

कुंकुम चरचित विविध पञ्च वरणक कुशमसुंए । हांरे अ० । कुन्द गुलाबसुं चम्पको दमणको जाससुंए ॥ १ सातमी पूजामें अङ्गी अलङ्गीयै, अङ्ग आलङ्ग मिस माननी सुगति आलिङ्गियैए ॥ २ ॥ इति

॥ अथ विधि (राग भैरवी) ॥

पञ्चवरणी अङ्गी रची कुशम जाती । प० । कुन्द मचकुन्द गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ प० १ दमणक मरुक पाड़ल अरविंदो, अंश जुई वेउलबाती । पारधि चरण कलार मन्दारो, विण पट कूल बनी भाती ॥ प० २ ॥ सुर नर किन्नर रमणि गाती, भैरवी कुगति अतातिदाती ॥ प० ३ ॥ इति सातमी अङ्गीरचन पूजा ॥ ७ ॥ सुगन्ध पुषपै करी अत्यन्त भक्तीसे भगवंतके शरीरै अङ्गी रचै,

॥ अथ आठमी गन्धवटी पूजा ॥

घनसार, अगर, सेल्हारस, प्रमुखसे सुगन्ध वट्टी करि जिनेश्वरनें आगै ले खड़ा रहै ॥

॥ दोहा ॥

सुमती पूजा आठमी, अगर सेल्हारस सार ।
लावै जिनतनु भावसुं, गन्धवटी घनसार ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

कुन्दकिरण शशि ऊजलो जी । देवा । पावन घस घन सारो जी, सुरभि सिखर मृगनाभिनो जी । देवा । चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ १ ॥ वस्तु सुगन्ध जव मोरियो जी । देवा अशुभ करम चूरी जै जी, अङ्गण सुरतरु मोरियो जी । देवा तव कुमति जन खीजै जी (तव सुमति जन रीझै जी) ॥ २

॥ अथ विधि (राग सामेरी) ॥

पूजोरी माई जिनवर अङ्ग सुगन्धै । जिन० पू० । गन्धवटी घनसार उदारै, गोत्रतीर्थंकर बांधै ॥ भला० १ पू० १ आठमी पूजा अगर सेल्हारस, लावै जिन तनु रागै । धारकपूर भाव घन वरषत, सामेरी मति जागै ॥ भला० २ पू० इति आठमी वरासचूर्ण पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

हिवे सधवा स्त्री भेली होके ऊज्वल थाल में, कुंकुमको साथियो करै। अक्षत थाल में धरै, श्रीफल रूपानांणो धरै। धजा थालमें धरी सधव स्त्री माथै रक्खी, गीत गान गावतां, सर्व वाजित्र बाजतां, तीन प्रदक्षिणा देवै। पीछे ध्वजा ऊपरि गुरु पासें वासक्षेप करावे। प्रभू सन्मुख गुहली करै। ऊपरि अक्षतांसें साथियो करै। सुपारी चढ़ावे। मुखै ऐसा कहै ॥

॥ दोहा ॥

मोहनध्वज धर मस्तकै, सुहव गीत समूल।
दीजै तीन प्रदक्षिणा, परसिध नवमी पूज ॥ १

॥ राग मेघगौड़ी (वस्तु) ॥

सहस जोयण २ हेममय दण्ड युतपताक पञ्चेवरण। घुमघुमन्त घुग्घरीय वाजै। मृदुसमीर लहिकै गयण। ल० जाण कुमतिदल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजाए हांएवि०। नवमी पूज सुरङ्ग। न०। तिणपर श्रावक धज-वहन। ति०। आपै दान अभङ्ग ॥ आ० १ ॥

॥ अथ विधि (राग नट्टनारायण) ॥

जिनराज को ध्वजमोहन, ध्वज मोहनारे ध्वजमोहना। जि०। मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पञ्चसवद त्रि प्रद-

क्षिणा । क० । सधव वधू सिर सोहना ॥ जि० २ ॥ भांति वसन पञ्च वरण वन्योरी, विधकरी ध्वजको रोहण । साधु भणति नवमी पूजा नव, पाप नीयांणा खोहणा । शिव मंदिर कुं अधिरोहणा, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥ जि० २ ॥ इति नवमी पूजा० । ए कही ध्वजा चढ़ाई जै ॥

॥ अथ दशमी आभरण पूजा ॥

पिरोजा, नीलम, लमणिया, मोती, माणकसैं जड्या, आभरण लेई मुखे इम पड़े ॥

॥ राग केदारैमें (दोहा) ॥

दशमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ।
सुरपति जिम अङ्ग रचै, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १
शिर सोहै जिनवर तणें, रयण मुगट झलकन्ति ।
तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवणकुंडल अति भांति ॥

॥ राग अधभास गुण्डमल्हार आशावरी ॥

पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणिक लाल रसणीया । हीरा सोहैरे । धूनी चूनी पुलकर केतना, जातिरूप सुभग अङ्ग अञ्जना ॥ मनमोहैरे १ ॥ मौलीमुगट रयणे जड्यो, काने कुण्डल । हांरे । अति जुगतै जड्यो ॥ उरहारूरे मन वारूरे ॥ भालतिलक बांहे अङ्गदा, आभरण दशमी पूजा ॥ सुखकारूरे । दुखहारूरे २ ॥

॥ अथ विधिः (राग केदारो) ॥

प्रभु सिरसोहै, मुगटमणि रयणे जड्यो । रय० । अङ्गद बाहु तिलक भालस्थल, यहु नीको कौन घड्यो ॥ प्र० १ ॥ श्रवण कुण्डल शशि तरुण मण्डल जांपै, सुरतरुसें अलङ्करयौ दुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र शिर ऊपर धऱ्यो, अलंकृत उचितवरयो ॥ प्र० २ ॥ इति दशमी आभरण पूजा ॥ १० ए कही आभरण (तथा) रोकनांणो उज्वल चढ़ावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

सुगन्ध पुष्पकरी संयुक्त फूलघर हाथे लेई, मुखे इम पढ़ै ॥

॥ दोहा ॥

फूलगरो अतिसोभतो, फूंदे लहकै फूल ।
महकै परिमल फलमहा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १

॥ राग रामगिरी ॥

कोल अङ्कोल राय वेलि नवमालिका, कुन्द मचकुन्द वर मिच कलूए । हांरे अईयो । तिलक दमणक दलं मोगरा परमलं, कोमला पारिध पाड़लूए ॥ हां० अ० १ ॥ प्रमुख कुशमै रचै त्रिभुवन कुं रुचै, कुशमगेहें विचि तोरणू ए । हां० अ० । गुच्छ चन्द्रोदयं झूंबका उन्नयं, जालिका गोख चितचोरणूंए ॥ हां० अ० २ ॥

॥ अथ विधि (राग रामगिरी) ॥

मेरो मन मोह्या माई री, फूलघर आनन्द झीलै । फू॰ असत उसत दाम नघरी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खीलै ॥ फू॰ १ ॥ कुशम मण्डप थुम्भ गुच्छ चन्द्रोदय, कोरणी चारु विनाण सझै इग्यारमी पूज वणीहै रामगिरी विबुध विमाण जैसें तिपुरिभजे ॥ फू॰ २ ॥ इति इग्यारमी फूलघरपूजा ॥ ११ ॥ ए कहीं फूलघर चढ़ाईजै ॥

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥

पंचवर्णफूल गुलाबजल लेई, मुखै इम पढ़ै ।

॥ दोहा (राग मल्हार) ॥

वरषै बारमी पूजमें, कुशम वादलिया फूल ।
हरण ताप दुःख लोकको, जानुसमा बहुमूल ॥ १

॥ राग भीममल्हार (कड़खानी जाति) ॥

मेघ बरसै भरी पुष्फवादल करी, जानु परमाण कर कुशम पगरं । पंचवरणे वर्ण्यो विकचि अनुक्रम चिण्यो, अधोवृन्तै नही पीड़पसरं ॥ मे॰ १ ॥ वासमहके मिलै, भमर भमरी मिलै, सरस रस रङ्ग तिण दुख निवारी । जिनप आगै करै सुरप जिम सुखवरै, बारमी पुज तिणपर आगारी मे॰ २ ॥

॥ अथ विधिः (राग मल्लार) ॥

पुष्फ बादलीया बरसै, सुसमा । अहो० । योजन असुचि हर वरस गन्धोदक, मनुहर जानुसमां । पु० । गमन आगमन की पीरनही तसु, इह जिनको अतिशय गुणें । गुञ्जत २ मधुकर इम पभणै । गुं० । मधुर वचन जिन गुण थुणइ ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करै, तसुपीड नही सुम्मणें । पु० । समवसरण पंचवरण अधोवृन्त, विबुध रचे सुमना सुसमा ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करै, कुशम विकस हस ऊचरै । तसु भीमबन्धन अधरा हुवै, जेकर हिं जे जिननमें ॥ पु० ४ ॥ इति बारमी पुष्पवृष्टी पूजा ॥ ए कही फूलउछालै ॥

॥ अथ तेरमी अष्ट मङ्गलीक पूजा ॥

अष्टमङ्गलीक लेकर मुखे इम पढ़े ।

॥ दोहा ॥

तेरमीपूजा अवसरै, मङ्गल अष्टविधान ।
युगति रचै सुमतै सही, परमानन्द निधान ॥ १

॥ राग वसन्त ॥

अतुल विमल मिल्या, अखण्डगुणे मिल्या, शालि रजत तणा तन्दुलाए । छपण समाजक विध पंचवरणक, चन्द्रकिरण जैसा उजलाए ॥ अ० १ ॥ मेल मङ्गल लिखे

सयल मङ्गल आखै, जिनप आगली सुथांनक धरै ए । तेरमी पूजा विध तेरमी मन मरै, अष्टमङ्गल अष्टसिद्धि करै ए ॥ २

॥ अथ विधिः (राग कल्याण) ॥

हांहो पुजावणी ते रसमें (हांहो रसमें ३) । ते० । अष्ट मंगल लिख कुशल निधान, तेज तरुणके रसमें ॥ पू० २ ॥ दप्पण भद्रासन नन्द्यावर्त्त पूर्णकुम्भ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें वर्द्धमान स्वस्तिक पूजा मंगलीक, आनन्द कल्याण सुख रसमें ॥ पू० २ ॥ इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥ ए कही अष्ट मंगलीक चढ़ावै ॥

॥ अथ चौदमी धूप पूजा ॥

धूप रकेवीमें धर मुखै इम पढ़े ।

॥ दोहा ॥

गन्धवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ।
धरि प्रभु आगलि धूपणा, चवदमी पूजाचार ॥ १

॥ राग वेलाउल ॥

कृष्णागर कपूरचूर, सौगन्ध चम्पेपूर । कुन्दरुक सेल्हारस सार गन्धवटी घनसार ॥ १ ॥ गन्धवटी घनसार चंदन मृगमदारस भेलियै. श्रीवास धूप दशांग अम्बर सुरभि बहु द्रव्य मेलियै । वेरुलिय दण्ड कनक मण्डित धूप धाणा कर धरै, भवबुत्तिधूपकरान्ति भोगं रोग सोग अशुभ हरै ॥ २ ॥

॥ अथ विधिः (राग मालवी गोड़ी) ॥

सब अराति मथन मुदार धुपं, कराति गन्ध रसालरे। देवा क०। धाम धूमा वलिय धूसर, कलुष पातिक गालरे ॥ देवा १ ॥ उर्द्धगति सूचन्ति भविकूं, मघ मघै कर नालरे देवा। चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विशालरे, आरती मंगल मालरे, मालवी गौड़ी तालरे ॥ देवा० स० ॥ इति चौदमी धूप पूजा ॥ १४ ॥ ए कही धूप धाणो प्रभुके बायें अंग धरी खेईजै ॥

॥ अथ पन्द्रहमां गीत गान पूजा ॥

प्रभुजीके मुख आगै मधुर स्वरे गुण ग्राम गावें।

॥ दोहा ॥

कण्ठ भलै आलाप कर, गावो जिन गुण गीत।
भावो अधिकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १

॥ श्रीरागै आर्या छन्द ॥

यद्दनन्त केवल मनन्त फलमस्ति जैन गुण गानं। गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भाषा लयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च। चंचुर चारी चारी गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥

॥ अथ विधिः (श्रीराग) ॥

जिन गुणगानं श्रुतं अमृतं, तारमन्द्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृत ॥ जि० १ ॥ विबुध कुमार कुमरी आलापै, मुरज उपांग नाद जनितं । जि० । पाठ प्रबन्ध धूयो प्रतिमानं, आयति छन्द सुरति सुमतं ॥ जि० २ ॥ सबद समान रुच्यो त्रिभुवनकुं, सुरनर गावै जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिव श्रीगीतं, पनरमी पूज हरै दुरितं रे ॥ जि० ३ ॥ इति पनरमी गीत पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥

समान अवस्थावाली सधव स्त्रीयां (वा) कुमन्यां भेली होके प्रभूके सन्मुख सज्जा कज्जा रहत नाटक करै । स्त्रीयांका जोग नवणें (तो) समान अवस्थावाला पुरष नाटक करै । वा) कुमर कुमन्यां मिलकै नाटक करै । नाटक करणेंसें केई जीव तीर्थङ्कर गोत्र बांधाहै । नाटक करतां मुखै इम पढ़ै ॥

॥ दोहा ॥

कर जोड़ी नाटक करै, सजि सुन्दर सिणगार ।
नव नाटक ते नविन्तमें, सोलमी पूजा सार ॥ १

॥ राग सुद्ध नट्ट (काव्य) ॥

भावा दिव्य मणासुचारु चरणा सम्पुन्न चन्दानना ।
सम्पिम्मा मम रूव वेस वयसो मत्तेभ कुम्भत्थणा ॥

लावण्णा सगुण पि कस्स रवई रागाइ आलावणा ।
कुम्मारी कुमरा विजैन पुरओ नच्चंति सिंगारणा ॥ १

॥ गद्यं ॥

तएणन्ते अट्ठसयं कुमारी कुमरीओ, सूरियाभेणं देवेणं सन्दिट्ठा । रङ्ग मण्डपं पविट्ठा । जिणनमन्ता । गायन्ता । वायन्ता । नच्चंतेत्ति ॥ २ ॥

॥ अथ विधि (राग नट्ट त्रिगुण) ॥

नाचन्ति कुम्मार कुमरी द्रागड़दि तत्ता थेइअ । अ० । द्रागड़दि २ किथौंगी २ न, मुखें तत्ता थेइय ॥ अ० १ ना० वेणु वीणा मुरज वाजै, सोलही सिणगार साजै । तनन्नतन्नेनईय अइयो । प्रणण प्रणण घुग्घरु घमकै, रणण्णरण्णाणेईय ॥ अ० २ ना० ॥ कसन्ति कंचुकी तरुणी, मंजरी झङ्कार करणी । सोभन्ति कुमरीय । अईयो । हत्तकं हावादि भावै, ददन्ति भमरीय ॥ अ० ३ ना० ॥ सोलमी नाटक पूजा, सूरीयाभै रावण कीनी । सुगन्ध तत्तात्थेईय । अ० । जिमप भगतें भविक लीणा, आनन्द तत्तात्थेईय ॥ अ० ४ ना० ॥ इति सोलमी नाटिक पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

सतरमी पूजामें सब जातिका वाजित्र बजावै, मुखे इम पढ़े.

॥ दोहा ॥

तन धन सुखीरै आ निधै, बाजित्र चौविध वाय ।
जगत जली जगवन्तनी, सतरमीए सुखदाय ॥ १

॥ गाथा ॥

सुरमद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जाए पणवो ।
सुरनारी नन्दितूरो, पच्चणइ तूं नन्द जिणनाह ॥ १

॥ राग मधुमाधवी ॥

तूं नन्दि आनन्दि बोलत नन्दी, चरण कमल जन्तु जगत्रय बन्दी । तूं ॥ ज्ञाननिर्मल बावन सुखवेदी, तिवलबोलै रंग अतिहि आनन्दी ॥ तूं० १ ॥ भेरी मदन वाजन्ति कुमति ताजन्ति, सेवै जैन जैणावन्ति । जैन शाशन जइवन्त नंदंती उदयसिंह परि परिय बदन्ती ॥ तूं० २ ॥ सेव भविक मधु माधवि आंखे, भवनी फेरी नप्प भणन्ती । कहै साधु सतरमी पूजा वाजित्रसब, मङ्गल मधुर धुनिकर कहन्ती ॥ तूं० ३ ॥

॥ अथ कलश पूजा (राग धन्यासरी) ॥

भवि तूं भण गुण जिनके सब दिन) तेजतरण मुखराजे ते० । कवित शतक आठ थुणत सक्रस्तव, थुय २ रङ्गैह मछाजै भवि० १ ॥ अणहल पुर शान्ति शिव सुख दाई, नवनिधि सिधं आवाजै । सतर सुपूज सुविध श्रावक की, भणीमें भगति हितकाजै ॥ भ० २ ॥ श्री जिनचन्द्रसूरि खरतरपति,

धरम वचन तसु राजै। सम्वत सोल अढार श्रावनशुरि, पञ्चमि दिवस समाजै ॥ भ० ३ ॥ दया कलश गुरु अमर माणिक्य वर, तासु पसायै सुविध हुइ गाजै। कहै साधु कीरत करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ भ० ४ ॥ इति सतरभेदी पूजा समाप्त ॥ १७ ॥

॥ अथ आरतीकरण विधि ॥

पूजाकियां पीछै, सब कपड़ा, पाघ प्रमुख पहरकै उत्तरासण करै। पीछै प्रभु सन्मुख, अन्तर पट करी, आपकै निलाड़ कुंकूंको तिलक करै। पीछे पट दूरि करि, रकेबीमें साथियो करे। मांहि रूपानाणो, चावल सुपारी धरे। पीछे आरती दीपकसुं सञ्जोयनें प्रभूके सन्मुख, दक्षिण आवर्त्तसुं, वाजित्र सब बाजतां, आरती करै, मुखै पढ़ै।

॥ अथ आरती ॥

जैजै आरती शान्ति तुम्हारी, तोरा चरण कमलकी मैं जाऊं बलिहारी ॥ जैजै० १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके नन्दा, शान्तिनाथ मुख पूनमचन्दा ॥ जैजै० २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृगलञ्छण प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पञ्चम सोहै, सोलम जिनवर सुर नर मोहै ॥ जै० ४ ॥ मङ्गल आरती मोरही कीजै, जन्म जन्म को

लाहो लीजै ॥ जै० ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ६ ॥ इति श्री आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीकी बड़ी पूजा ॥

नवपद जीकी महिमा संयुक्त पूजा लिखि है।

॥ दोहा ॥

परम मन्त्र प्रणमीकरी, तासधरी उर ध्यान।
अरिहन्तपद पूजा करो, निज २ शक्ति प्रमाण ॥ १

॥ काव्य ॥

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाड़िहेरा सण संठियाणं सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनन्त सन्त प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय। थया जेहना ध्यानथी सौख्य भाजा, सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कन्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणं, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणं। करी पूजना भव्य-भावै त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यनें हित-

धर्यानें । सदा आठ महा पाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रम्हपूता ॥ ४ ॥ कन्या घातिया कर्म च्यारं अलग्गा, भवोपग्रही च्यारछे जे विलग्गा । जगत्पंच कल्यान के सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थकरा मोक्ष गामें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरन्धर धीरो जी । देशना अमृत वरसता, निज विरज वडवीरो जी ॥

॥ उल्लालो ॥

वर अखय निरमल ज्ञानभासन सर्वभाव प्रकासता, निज-शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे चरण थिरता वासता । जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता, जग जन्तु करुणावन्त भगवन्त भविक जननें थोभता ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

श्री सीमन्धर साहिब आगै एदेशी ॥ त्रीजै भव वर थानक तपकरि । जिनबांध्युं जिन नाम । चउसठ इन्द्रै पूजित जेजिन । कीजै तास प्रणामरे ॥ ७ ॥ (भविका) सिद्धचक्र पद वन्दो । जिम चिरकालै नन्दोरे । भ० । उप-शम रसनो कन्दो रे । भ० । रत्न त्रयीनो वृन्दो रे । भ० । सेवै सुर नर इन्दो रे ॥ भ० ८ सिद्ध० ॥ (॥ आंकणी ॥)

जेहनें होई कल्याणक दिवसै । नरकै पिण अजुआलुं । सकल अधिक गुण अतिशय धारी । जे जिन नमी अघ टालुरे भ० । जे तिहुं नाण सम्मग्ग उप्पन्ना, भोग करम क्षीण जानि लेइ दिक्षा शिक्षा दिइं जगनें । ते नमीइं जिन नांणीरे ॥ भ० ९ सि० ॥ महागोप महामाहण कहीयै, निर यामक सत्थवाह ओपमा एहवी जेहनें छाजै, ते जिन नमीइं उच्छाह रे ॥ भ० १० सि० ॥ अ.ठ प्राति हारज जसुछाजै । पंत्रीस गुणयुत वाणी जे प्रतिबंध करै जगजननें, ते जिन नमिइं प्राणी रे ॥ भ० ११ सि० ॥

॥ ढाल ॥

अरिहन्त पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायैरे । भेद छेद करि आतमा, अरिहन्त रूपी थायैरे ॥ १२ ॥ वीर जिणे सर उपदिसै, सांभल जो चित लाईरे । आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिलै सव आईरे ॥ वी० १३ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने । अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये । जन्म, जरा, मृत्यु, निवारणाय । श्रीमत्सिद्धचक्राय पञ्चामृतं १ । चन्दनं २ । पुष्पं ३ । धूपं ४ । दीपं ५ । अक्षतं ६ । नैवेद्य ७ । फलं ८ । वस्त्रं । वासं । यजामहे स्वाहा । इति प्रथमपदे श्री अरिहन्तस्य कलश पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपदकी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की, कीजै दिल खुसियाल ।
अशुभ करम दूरै टलै, फलै मनोरथ माल ॥ १

॥ काव्य ॥

सिद्धान मानन्दर मालयाणं, नमो नमो णन्त चउक्कयाणं समग्ग कम्मक्खय कारगाणं, जम्म जरा दुक्ख निवारगाणं १४ ॥ करी आठ कर्म्म क्षयें पार पाम्या, जरा जन्म मरनादि भय जेणवाम्या । निरावरणजे आत्म रुपै प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहा वगहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जाति वर्णादिलेशा । सदानन्द सौख्याश्रिता जोतिरूपा, अनाबाध अपूनर्भवादी स्वरूपा ॥ १६ ॥ (सकल करम मल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्याबाध प्रभुता मयी, आतम सम्पत्ति भूपो जी ॥ १७ ॥ उल्लालो) जे भूप आतम सहज सम्पत्ति शक्ति व्यक्ति पणें करी स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावै गुण अनन्ता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणति सिद्ध साधन परभणी, मुनिराज मानसर हंस सम वह नमो सिद्ध महागुणी ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसन्तर अणफरसी । चरम तिभाग विशेष ।

अवगाहन लहीजे शिव पहुता सिद्ध नमो ते असेसरे॥ भ० १९ सि० ॥ पूरब प्रयोगनें गति परिणामै .बंधन छेद असङ्ग समय एक ऊरधगति जेहनी। ते सिद्ध प्रणमों रङ्गरे॥ भ० २० सि० ॥ निरमल सिद्ध सिलानें उपरि। जोयण एक लोकन्त। सादि अनन्त तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमों सन्तरे॥ भ० २१ सि० ॥ जाणे पिण न सकै कही पुरगुण प्राकृत तिम गुणजास। ओपमा विण नाणी भवमांहे। ते सिद्ध दीओ उल्लास रे॥ भ० २२ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम। विरसी सकल उपाधि। आतम राम रमापति समरो। ते सिद्ध सहज समाधिरे॥ भ० २३ सि०

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणीरे। ते ध्याता निज आतमा, होइं सिद्ध गुण खाणीरे॥ वी० २४॥ ॐ ह्रीं इति द्वितीय श्री सिद्ध पदस्य कलश पूजा॥

॥ अथ तृतीय आचारज पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष
मोह तिमर दूरै हरै, सुझै भाव अशेष॥ १॥

॥ काव्य ॥

सूरीण दूरी कय कुग्गहाणं, नमो नमो सूरि सम प्पहाणं सद्देसणा दाण समायराणं, अखण्ड छत्तीस गुणायराणं ॥ १ नमुं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्य भाजा। षट्वर्ग वर्गित गुणे शोभमानां, पञ्चाचारनें पालवै सावधाना ॥ २ ॥ भवि प्राणिनें देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आलै। जिके सासनाधार दिग्दन्त कल्पा, जगत्ते चिरञ्जीव ज्यो सुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनिपति गणी। गुण छत्तीसे धामो जी चिदानन्द रस स्वादता। पर भावै निकामो जी ॥ (उल्लालो निकाम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधारथी, वरज्ञान दरशण चरण वीरज साधना व्यापार थी। भवि जीव बांधक तत्व शोधक सयल गुण सम्पतिधरा, सम्बर समाधि गत उपाधि दुविध तप गुण आदरा ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

पांच आचार जे सुधा पालै। मारग भाषै साचो। तें आचारज नमियै नेहसुं, प्रेम करीने जाचो रे ॥ भ० २६ सि० ॥ वर छत्तीस गुणें करि सोभै, युग प्रधान जग बोहै। जग मोहै नरहै खिण कांहै, सूरि नमूं ते जांहै रे ॥ भ० २७

सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उव एसे, नहीं विकथा न कषाय. जेहनें ते आचारज नमीइं, अकलुस अमल अमाय रे ॥ भ० सि० २८ ॥ जेदिइं सारण वारण चोयण, पड़िचोयण वलि जननें । पटधारी गच्छथम्भ आचारज, ते मान्या मुनि मननें रे ॥ भ० २९ सि० ॥ आत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजै जगदीवो । भुवन पदारथ प्रगटन पटुते, आचारज चिरजीवो रे ॥ भ० ३० सि० ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारज भला, महामन्त्र सुभ ध्यानी रे । पंच प्रस्थाने आतमा आचारज होइ प्रानी रे ॥ वी० ३१ ॥ ॐ ह्रीं इति तृतीय श्री आचार्यपद कलश पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चौथी पाठक पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना. सुन्दर सोभित गात्र ।
उवझाया पद अरचियै, अनुभव रसनो पात्र ॥ १

॥ काव्य ॥

सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं, नमो २ वायग कुञ्जराणं । गणस्स सन्धारण सायराणं, सव्वप्पणावज्जिय मच्छराणं ॥ १

नहीं सूरि-पिण सूरि गुणनें सुहाया, नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया। वलि द्वादशाङ्गादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरै पञ्चनें वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवाधि द्विपोच्छेदनेन्तुल्य सिंघा। गुणी गच्छ सन्धारणं स्थम्भ पूता, उपाध्याय ते वन्दिइं चित् प्रभूता ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

खन्तिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ताजी। सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संजम गुण रत्ताजी ॥ (उल्लालो) जे रम्या ब्रम्ह सुगुप्त गुप्ता सुमति सुमता शुभधरा, स्याद्वाद वादइं तत्वसाधक आत्मपर विभजनकरा। भवभीरु साधन धीर शासन बहन धोरी मुनिवरा, सिद्धान्त वायन दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ३३ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादश अङ्ग सिज्झाय करै जे, पारग धारग तास। सूत्र अरथ विस्तार रसिकते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ३४ सि० ॥ अर्थ सूत्रनें दान विभागै, आचारज उवज्झाय। भव त्रिण्हे जेलहै सिवसम्पद, नमीयै ते सुपसाय रे ॥ भ० ३५ सि० ॥ मूरखशिष्य निपजायै जेप्रभु, पाहण पल्लव आणें ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अरथ सविजाणे रे ॥ भ० ३६ सि० ॥ राजकुमार सरिखा गणचिंतक, आचारज

पदयोग । जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावै भव भय सोगरे भ॰ ३७ सि॰ ॥ बावना चन्दन रस सम वयणें, अहित ताप सवि टालै । ते उवज्झाय नमी जै जेवलि, जिन शासन अजुवालैरे ॥ भ॰ ३८ सि॰ ॥

॥ ढाल ॥

तपसिज्झायें रत सदा, द्वादश अङ्गनो ध्याता रे उपाध्याय ते आतमा, जगबन्धव जगभ्राता रे ॥ वी॰ ३९ तु॰ ॥ ॐ ह्रीं॰ ॥ इति चौथे पदै श्रीपाठकजीकी कलश पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी साधू पदपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ।
ते मुनिवर पद बन्दतां, निरमल थाये देह ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

साहूण सं साहिय संयमानं, नमो २ शुद्ध दया दमाणं । तिगुत्त गुत्ताण समाहियाणं, मुणिण मानन्द पय ठ्ठियाणं ॥ ४० ॥ करै सेवना सूरी वायग गणीनी, करु वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पञ्चसुमति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्त नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥ ४१ ॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रन्थटाली,

इइं मुक्तिनें जोग चारित्र पालि । शुभष्टाङ्ग योगै रमै चित्त-वाली, नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ४२ ॥

॥ ढाल ॥

सकल विषय विष वारिनें, निक्कामी निस्सङ्गी जी । भव दव ताप समावता, आतम साधन रङ्गी जी ॥ (उल्लालो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें, देह निम्र्मम निम्र्मदा, काउसग्ग मुद्रा धार आसन ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपै कर्म्म जीपै नैव छीपै परभणी, मुनिराज करुणासिन्धु त्रिभुवन बन्धु प्रणमो हित भणी ॥ ४३ ॥

॥ ढाल ॥

जिम तरु फूलै भमरो वैसै, पीड़ा तसु न उपाय । लेई रस आतम सन्तोषे, तिम मुनि गोचरी जायरे ॥ भ० ४४ सि० पांच इन्द्रिनें जे नित जीपै, षट काया प्रतिपाल । सञ्जम सतर प्रकार आराधै, वन्दू दीन दयाल रे ॥ भ० ४५ ॥ अढार सहश शीलाङ्गना धोरी, अचल अचाल चरित्र । मुनि महन्त जयणायुत वन्दी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ भ० ४६ सि० ॥ नवविध ब्रम्ह गुपति जे पालै, बारहविध तपसूरा । एहवा मुनि नमीजै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरारे ॥ भ० ४७ सि० सोनातणी परै परिक्षा दीसै, दिन दिन चढ़तै वानें । सञ्जम खप करता मुनि नमिइं देस कालअनुमानें रे ॥ भ० ४८ सि०

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखै नवि सोचै रे। साधु सूधा ते आतमा, स्युं मुण्डे स्युं लोचै रे ॥ वी॰ ४९ ॥ ॐ ह्रीं॰ इति पांचमें पदे श्रीसाधुजीकी कलश पूजा ॥ ४॰ ॥

॥ अथ छठी दर्शन पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित सुद्धनय, तत्त्वतणी परतीत।
ते सम्यग् दरसन सदा, आदरियै सुभ रीत ॥ १

॥ काव्य ॥

जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो २ निम्मल दन्सणस्स मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स। मूलस्स सद्धम्म महा दुमस्स. विपर्यास हो वासना रूप मिथ्या, टलै जं अनादि अछे जे कुपथ्या। जिनोक्ते हुइं सहज थी सुद्धध्यानं, कहीइं दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ ५॰ ॥ विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं। प्रकृति सातनें उप समइ क्षय तेह होवै, तिहां आप रूपें सदा आप जोवै ॥ ५१ ॥

॥ ढाल ॥

सम्यग् दरसन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरूपी जी।
जसु निरधार स्वभाव छै, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥ (चाल

जे अनूप श्रद्धा धरम प्रगटै सयल पर ईहा टलै, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै । बहुमान परणिति वस्तुतत्वे अहव सुर कारण पणें, निज साध्यदृष्टे सरव करणी तत्वता सम्पति गिणै ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्ध देव गुरु धर्म्म परिक्षा, सद्दहणा परिणाम । जेह पामी जै तह नमी जै, सम्यग् दर्शन नाम रे ॥ भ० ५३ सि० मल उपशम क्षय उपशम जेह थी, जे होइ त्रिविध अभङ्ग । सम्यग्दर्शन तेह नमीजै, जिन धरमै दृढ़ रङ्ग रे ॥ भ० ५४ पांचवार उपशम लही जै, क्षय उपशमीय असङ्ख । एकवार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीये असङ्ख रे ॥ भ० ५५ सि० ॥ जेविन नाण प्रमान न होवै, चारित्रतरु नवि फलिउ । सुख निरवाण न जे विण लहिइं, समकित दर्शन बलीउ रे ॥ भ० ५६ सि० ॥ सड़सठ बोले जे अलङ्करीयो, ज्ञान चारित्र नु मूल समकित दर्शन ते नित प्रणमुं, सिव पन्थनुं अनुकूल रे ॥ भ० ५७ सि० ॥

॥ ढाल ॥

सम सम्वेगादिक गुणा, खय उपशम जे आवै रे । दर्शन तेहिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ श्री० ५८ तु० ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति छठे दर्शनपद कलश पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमें श्री ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो, सिद्धचक्र तप मांहि ।
आराधी जै सुजमनें, दिन २ अधिक उछाह ॥ १

॥ काव्य ॥

अन्नाण सम्मोह तमो हरस्य, नमो २ नाण दिवायरस्स
पञ्चप्पयार स्सु वगारगस्स, सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥
होइं जेहथी ज्ञानशुद्ध प्रबोधै, यथा वर्ण नासै विचित्रा विबोधै
तिणें जाणीइं वस्तु षद्‌द्रव्य भावा, न हांवै विकच्छा
निजेच्छा स्वभावा ॥ ५९ ॥ होइं पञ्चमत्यादि सुग्यान भेदै
गुरुपासथी योग्यता तेह वेदइं । वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपै
लहै चित्तमां जेम ध्यान प्रदीपै ॥ ६० ॥

॥ ढाल ॥

भव्य नमो गुण ज्ञाननें, स्वपर प्रकाशक भावै जी ।
परयाय धरम अनन्तता, भेदा भेद स्वभावै जी ॥ चाल ॥
जे मोक्ष परणति सकल ज्ञानक बोध वास विलासता, मति
आदि पञ्च प्रकार निरमल सिद्ध साधन लञ्छना । स्याद्वाद
शङ्गी तत्व रङ्गी प्रथम भेद अभेदता, सविकल्पनें अविकल्प
वस्तु सकल संसय च्छेदता ॥ ६१ ॥

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विण लहीयै, पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहियै, ज्ञानते सकल आधार रे ॥ भ० ६२ ॥ प्रथम ज्ञाननें पाछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते भाष्युं । ज्ञाननें बन्दो ज्ञान मनिन्दो, ज्ञानीयै शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ६३ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूलते श्रद्धा, तेहनुं मूलजे कहीइं । तेह ज्ञान नित नित बन्दीजै, ते विण कहो किम रहीइं रे ॥ भ० ६४ सि० ॥ पांच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह । दीपक परै त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ६५ सि० ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् जोतिष, वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवि जेहथी, तेज्ञाने मुझ शुद्धि रे ॥ भ० ६६ सि० ॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावर्णी जे कर्म छै, क्षय उपशम तसु थायैरे । तो होइएहीज आतमा, ज्ञान अबोधता जाइं रे ॥ वी० ६७ सि० ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति सातमी श्रीज्ञानपद कलश पूजा ॥ ७

॥ अथ आठमें श्रीचारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रस मिलै, पातिक होय उछेद ॥ १

॥ काव्य ॥

आराहिया खण्डिय सक्कियस्स, नमो नमो सञ्जम वीरि-यस्स । सञ्भावना सङ्ग विवड्ढियस्स, निव्वाण दाणाइ समु-ञ्जयस्स ॥ वली ज्ञान फल ते धरीयै सुरङ्गै, निरासंसता द्वार रोध प्रसङ्गै । भवां बोध सन्तारने यानतुल्य धरुं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्य ॥ ६८ ॥ होई जास महिमा थकी रङ्क रांजा, वली द्वादशाङ्गी भणी होई ताजा । वली पाप रूपोपि निःपाप थायै, थई सिद्धते कर्मनें पार जायै ॥ ६९ ॥

॥ ढाल ॥

चारित्र गुण वलि वलि नमो, तत्व परम जस मूलो जी. पर परणीय पणो टलै, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ चाल ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग सञ्जम तत्व थिरता दममयी । सुचि परम खन्ति मुनि दसो पद पञ्च सम्वर उपचयी ॥ सामा-यिकादिक भेद धरमें यथा ख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलश अमल उज्वल कामकश्मल चूरणता ॥ ७० ॥

॥ ढाल ॥

देश विरतिनें सर्व्व विरतिजे, ग्रही यतिनें अभिराम । ते चारित्र जगत जयवन्तो, कीजै तास प्रणाम रे ॥ भ० ७१ सि० ॥ तृणपरै जे षटखण्ड सुखछण्डी, चक्रवर्त्ति पिण वरिओ ते चारित्र अक्षय सुख कारण, ते में मन मांहि धरिओ रे ॥

भ० ७२ सि० ॥ हुया राङ्कपने जे आदरि, पूजित इन्द नरिन्द । असरण सरंण चरण ते बन्दु, वरिओ ज्ञान आनन्द रे ॥ भ० ७३ सि० ॥ बारमास परजाइं जेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये । शुक्ल सुकल अभिजात्यते ऊपरि; ते चारित्र नं नमीइं रे ॥ भ० ७४ सि० ॥ चयतं आठ करमनो सञ्चय, रिक्त करै जे तेह । चारित्र नाम निरुक्तै भाष्यु, तेवन्दु गुण गेह रे ॥ भ० ७५ सि० ॥

॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा, निज स्वभाव मांहि रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलङ्करयो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ७६ तुमे० ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी तप पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

करमकाष्ट प्रतिजालवा, परतिख अगनि समान ।
ते तप पद पूजो सदा, निरमल धरियै ध्यान ॥ १

॥ काव्य ॥

कम्मन्द्रुमोन्मूल न कुञ्जरस्स, नमो २ तिव्व तवोयरस्स अणेग लद्धीण निवन्धणस्स, दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ ७७ ॥ इय नवपय सिद्धं लद्धि विज्जा समिद्धं, पयडिय

सरवग्गं ह्रीं तिरेहा समग्गं। दिसिवय सुरसारं क्षोणि पीढ़ाव-यारं, तिजय विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टाले, निकाचित पणें बांधिया तहवाले कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यन्तर दुभेदै, क्षमा युक्ति निर्हेत दुर्ध्यान च्छेदै ॥ ७९ ॥ होइं जास महिमा थकी लब्ध सिद्धि अवाञ्छक पणें कर्म्म आवरण शुद्धिः। तपो तेह तपजे महानन्द हेतें, होइं सिद्धि सीमन्तनी निज संकेतें ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनन्द पावै, नव भव शिव जावै देव नर भवज पावै। ज्ञान विमल गुण गावै सिद्ध चक्र प्रभावै, सब दुरित समावे विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदै जी। आतम सत्ता एकता, पर परणित उच्छेदै जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म्म अनादि सन्तति जेह सिद्ध पणो वरई, सुभयोग सङ्ग आहार टाली भाव अक्रियता करै। अन्तर मुहूरत तत्व साधै सर्व सम्वरता करी, निज आतमसत्ता प्रगट भावै करो तप गुण आदरी ॥ ८२ ॥

॥ ढाल ॥

इम नव पद गुणमण्डलं, चउनिक्षेप प्रमाणें जी। सात नयें जे आदरै, सम्यग् ज्ञाने जाणे जी ॥ चाल ॥ निरधार

संत्ती गुणे गुणणो करइ जे बहु मानए, जसुकरण इहा तत्व रमणें थायै निरमल ध्यान ए । इम सुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनन्त महन्त चिद घन परम आनन्दता वरै ॥ ८३ ॥ कलशः ॥ इम सयल सुख कर गुण पुरन्दर सिद्ध चक्र पदावली, सवि लद्धि विज्जा सिद्धि मन्दिर भविक पूजो मनरली । उवज्झाय वर श्रीराज सारह ज्ञान धर्म सुराजता, गुरु दीपचन्द सुचरण सेवक देवचन्द सुशोभता ॥ ८४ ॥

॥ ढाल ॥

जानन्ता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भव मुगति जिनन्द । जेह आदरै करम खपेवा, ते तप सुरतरु कन्द रे ॥ भ० ८५ सि० ॥ करम निकाचित पणि क्षय जाइं, क्षमा सहित जे करन्ता । ते तप नमीइं तेह दीपावे, जिन शासन उजमन्तां रे ॥ भ० ८६ सि० ॥ आमो सही पमुहा बहु लद्धी, होवै जास प्रभावै । अष्ट महासिधि नव निधि प्रगटै, नमीयै ते तप भावै रे ॥ भ० ८७ सि० ॥ फल शिव सुख मोटुं सुर नरवर सम्पति जेहनुं फूल । ते तप सुर तरु सरिखां वन्दुं, शम मकरन्द अमूल रे ॥ भ० ८८ सि० ॥ सर्व्व मङ्गल मांहि पहिलो मङ्गल, वरणवियो जे ग्रन्थ । ते तप पद त्रिकरण नित नमिइं, वर सहाय शिव पन्थ रे ॥ भ० ८९ सि० ॥

इम नव पद थुनतो तिहां लीणो, हुयो तनमय श्री पाल। सुजस विलास छै चोथे खण्डे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ९० सि० ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन सम्बरी, परणित समता योगै रे। तप ते एहिज आतमा, वरतै निज गुण भोगै रे ॥ वी० ९१ ॥ आगमनो आगमतनो, भाव ते जाणो साचो रे। आतम भावै थिरहुयो, परभावै मत राचो रे ॥ वी० ९२ ॥ अष्ट सकल-समृद्धिनी, घट माहि ऋद्धि दाखी रे। तिम नव पद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे ॥ वी० ९३ ॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे। एह तणे अविलम्बन, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चौथे खण्डे पूरी रे। बाणी वाचक जस तणी, कोई नय रहीय अधूरी रे ॥ वी० ९५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय। श्रीमत् सिद्ध चक्राय। बासं, पंचामृतं, चन्दनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं ययामहे स्वाहा ॥ इति श्री देवचन्दजी, जस विजयजी महोपाध्याय कृत सिद्धचक्र माहात्म, श्री नवपद पूजा ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी सामग्री ॥

पंचामृत) दूध, दही, घृत, मिश्री, शुद्धजल, केसर सुगन्ध चन्दन, कपूर, कस्तुरी, अम्बर, रोली, मोली, छूटा-फूल, फूलोंकी माला, फूलोंका चन्द्रवा, धूप, चावल प्रमुख, नव जातके धान, नव प्रकारके नैवेद्य, नव प्रकारके फल, नव प्रकारके पक्क वस्तु, मिश्री, पतासा, ओला, विदाम, सुपारी, प्रमुख, अङ्गलूहणा खातर सपेद वस्त्र, पहरावणी खातर उत्तम रेशमी प्रमुख वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजल, अतर इत्यादिक ; और नव नालीके कलस, नव रकेबी, परात, तसला, आरती, मङ्गलदीप, भगवानके अङ्गी, समोसरण इत्यादिक सब चीज पहली ठीक करके रक्खे। इससे पूजामें विघ्न न होय। इहां संक्षेपविधि कही, विशेषविधि गुरूके मुखसे जाण लेना।

॥ अथ सबके जाणनेंकों नवपदजीके पूजा करणेकी कलश ढालणेकी विधिः ॥

चैत्र सुदि १५ (तथा) आसोज सुदि १५ के दिन। आत्रिया नव करै। पंचामृत मोटै घड़े प्रमुखमे करे, थापना

में श्रीफल रोक नाणो धरै। पीछे गुरुके पास मन्त्रायकै केसरके तिलक करै। कांकणडोरा हाथमें बांधै। दहिणे हाथमे साथियो करिके, विधि संयुक्त स्नात्र पढ़ावै। पीछे श्री अरिहन्त पदमें श्वेतवर्ण चावल, तथा चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य (प्रमुख) अष्टद्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल पांन. रकेबीमे धरके, हाथमे रक्खै। नव कलशके मोली बांधै। कुंकुमका साथिया करै। पंचामृतसे भरिके कलश हाथमें लेकें पूजा पढ़ै। सम्पूर्ण होनेसे कलश ढालै। बड़ी परातमें प्रतिमा जी पधरावै। ॐ ह्रीं नमो अरिहन्तानं। इस माफक कहतो थको अरिहन्त पदकी पूजा करै। अष्टद्रव्य अनुक्रमे चढ़ावै॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥

दुसरे) सिद्धपद रक्तवर्ण गेहूं, रकेबीमे धरै। श्रीफल तथा) अष्टद्रव्य लेकर नव कलश पंचामृतसे भरिके पूजा पढ़ै। पूर्ण होनेसे, ॐ ह्रीं नमो सिद्धानं कही. कलश ढालै। अष्टद्रव्य चढ़ावै। इति द्वितीय पूजा ॥ २ ॥

तीसरे) श्री आचार्यपद पीलेवर्ण. चिणाकी दालि. अष्ट द्रव्य. श्रीफल प्रमुख लेके. कलश नव पंचामृत से भरिके पूजा पढ़ै। पूर्ण होनेसे। ॐ ह्रीं नमो आयरियानं कही. कलश ढालै. द्रव्य चढ़ावै। इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥

चौथे श्री उपाध्याय पद। नीले वर्ण मूंग प्रमुख अष्टद्रव्य

लेके पूर्वोक्त विधिसे पूजा करै। सम्पूर्ण होनेसे, ॐ ह्रीं नमो उवझायाणं कही। कलश ढालै। अष्टद्रव्य चढ़ावै। इति चौथी पूजा विधि ॥ ४ ॥

पांचमे) श्री सर्व साधुपद। स्यामवर्ण उड़द प्रमुख लेवै और पूर्वोक्त विधिः पूर्ण होनेसे। ॐ ह्रीं नमो लोए सव्व साहूणं। इति पांचमी पूजा विधि ॥ ५ ॥

छठ्ठै) दर्शनपद स्वेतवर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसे ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स। इति छट्ठी पूजा विधि ॥ ६ ॥

सातमे) श्री ज्ञान पद। स्वेतवर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधि। ॐ ह्रीं नमो नाणस्स। इति सातमी ॥ ७ ॥

आठमे) चारित्र पद। स्वेतवर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिः। ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स। इति आठमी पूजा ॥ ८ ॥

नवमे) तपपद। स्वेत वर्ण। चावल प्रमुख पूर्वोक्त विधिसे ॐ ह्रीं नमो तवस्स कही कलश ढालै। अष्टद्रव्य चढ़ावै। पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै। इति नवपदजीकी पूजा विधि सम्पुर्णम् ॥ ९

॥ अथ वासक्षेप पूजा ॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमूं, धरम धूरन्धर धीरोजी।

देशना अमृत वरसता, निज वीरज वड़ वीरोजी ॥ १ ॥ चाल) वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावै चरण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज सोभता, जगजन्तु करुणावन्त भगवन्त भविक जनने थोभता ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा०, वासं यजामहे स्वाहा । इति अरि० वासक्षेप पूजा ॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्म मलक्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी । अव्यावाध प्रभूता मई, आतम सम्पति भूपोजी ॥ (चाल) जे भूप आतम सहज सम्पति शक्ति व्यक्ति पने करी, स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे गुण अनन्ता आदरी । स्व स्वभाव गुण पर्याय परणित सिद्ध साधन पर भणी, मुनिराज मानसर हंस सम वड़ नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं परमा० इति सिद्धपद पूजा ॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसे धामो जी । चिदानन्द रस स्वादता, परभावे निक्कामो जी ॥ ३ ॥ (चाल निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन साध्य निज निरधार थी, वरज्ञान दरसन चरण वीरज साधना व्यापारथी । भविजीव बोधक तत्त्वसोधक सयल गुण सम्पति धरा, सम्वर समाधी

गत उपाधी दुविध तप गुण आगरा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा०
इति आचार्य पूजा ॥

॥ ढाल ॥

खन्तिजुया मुत्तिजुया, अज्जव मद्दव जुत्ताजी। सच्चं सोय अकिंचणा, तव सञ्जम गुण रत्ताजी ॥ १ ॥ (चाल) जे रम्या ब्रम्ह सुगुप्ति गुप्ता सुमति समता श्रुतधरा, स्याद्वाद वादें तत्वसाधक आत्मपर विभञ्जन करा। भव भीरु साधन धीर सासन वहन धोरी मुनिवरा, सिद्धान्त वायन दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ ४ ॥ इति उपध्याय पद पूजा ॥

॥ ढाल ॥

सकल विषय विषवारिनें, निक्कामी निस्सङ्गीजी। भवदव ताप समावता, आतम साधन रङ्गी जी ॥ १ ॥ (चाल जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देह निर्मम निर्मदा, काउसग्ग मुद्रा धारि आसन ध्यान अभ्यासी सदा। तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छींपै पर भाणी, मुनिराज करुणासिन्धु त्रिभुवन वंन्धु प्रणमुं हितभणी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० ॥ इति साधु पूजा ॥

॥ ढाल ॥

सम्यग् दर्शन गुण नमो, तत्व प्रतीत सरूपीजी। जसु निरधार सुभाव छे, चेतनगुण जे अरूपी जी ॥ १ ॥ (चाल जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयलपर ईहा टलै, निज शुद्ध

सत्ता भाव प्रगटै अनुभव करुणा उछलै। बहुमान परणित वस्तु तत्वें अहव तसु कारण पणे, निज साध्य दृष्ट सरब करणी तत्वता सम्पति गिणे ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। इति दर्शनपद पूजा ॥

॥ ढाल ॥

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकासक भावे जी, पर्याय धर्म अनन्तता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥ १ ॥ (चाल) जे मोक्ष परणित सकल ग्यायक बोध भावं सलक्षणा, मति आदि पंचप्रकार निरमल सिद्ध साधन लञ्छना। स्याद्वाद शङ्गी तत्वरङ्गी प्रथम भेद अभेदता, सविकल्पने अविकल्प वस्तु सकल संशय च्छेदता ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० ॥ इति ज्ञानपद पूजा ॥

॥ ढाल ॥

चारित्रगुण वलि वलि नमुं, तत्व रमण जसु मूलो जी. पर रमणीय पणा पणो टलै, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥ १ ॥ (चाल) प्रतिकूल आश्रव त्याग सम्वर तत्व थिरता दम मई, सुचि परम खन्ती मुनि दसे पद पञ्च सम्वर टपचई। सामायकादिक भेदधरमें यथाख्याते पूर्णता, अकशाय अकुलश अमल उज्वल कामकस्मल चूर्णता ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं० इति चारित्र पूजा ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमुं, बाह्य अभ्यन्तर भेदें जो। आतम सत्ता एकता, पर परणित उच्छेदें जी ॥ १ ॥ (चाल) उच्छेद कर्म अनादि सन्तति जेह सिद्धपनो वरै, सुभ जोग सङ्ग आहार टाली भाव अक्रियता करै। अन्तर मुहूरत तत्व साधै सर्व्व सम्वरता करी, निज आतम सत्ता प्रगट भावै करो तप गुण आदरी ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुण मण्डलं, चौ निक्षेप प्रमाणें जी। सात-नयें जे आदरै, सम्यग् ज्ञानें जाणो जी ॥ १ ॥ (चाल) निरधार सेती गुणें गुणनो करै जे बहुमान ए, जसु करण इहा तत्व रमणें थाय निरमल ध्यान ए। इम शुद्ध सत्ता भलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरै, अक्षय अनन्त महन्त चिद्घन परम आनन्दता वरे ॥ १० ॥ (कलश) इम सयल सुख-कर गुण पुरन्दर सिद्धचक्र पदावली, सविलद्धि विज्जा सिद्धि मन्दिर भविक पूजो मनरली। उवझाय वर श्री राजसारह ग्यान धरम सुराजता, गुरु दीपचन्द सु चरण सेवक देवचन्द सुसेभिता ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने०। इति श्री नवपद वासक्षेप पूजा सम्पूर्णम् ॥ * ॥

॥ ❀ अथ बार व्रतकी-पूजा ❀ ॥

॥ प्रथम समकित दृढ़ करण जल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

व्रत बारै आदर करी, पूजा तेरे विधान ।
आनन्दादिक संग्रही, सतम अङ्ग प्रधान ॥ १ ॥

॥ राग सरफरदो ॥

ज्योति सकल जग जागती हां० ए चाल) ज्योति विमल जग झलहलै । हांरे अइयो झ० ए । शाशन पति जिनचन्द । त्रिकरण प्रणमन करि नमूं, वीर चरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेपण २ वासनी ३ । हांरे० । मालं ४ दीवञ्च ५ धुवणियं ६ ॥ फूल ७ सु मङ्गल ८ तन्दुला ९ ॥ हांरे० ए० ॥ अमलं दप्पनञ्च १० नैवर्ज्ज ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृन्द १३ ए मेलियै । हां० ए० । पुजा त्रिदश प्रकार, हां० ए० । व्रत ग्रहि अनुक्रम अरचीयै । जगपति जगदाधार ३ ॥ सिव तरु सुखफल स्वादनो । हांरे० । दायक गुणमणि खांण । कुशल कला कलना थकी, प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

समकित व्रत धुर आदरो, मेटो निज मन भर्म।
दूर थकी ए परि हरो, कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

धुर दर्शनाण सु चरण अणसण धीरु वीर्य वखानिये,
तप इम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति बार सुठानिये।
व्रत बारनां अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानिये, करि
त्याग राग अशस्त धरिमन विमल सम्बर मानिये ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी ॥

गावलूंहे जिनमन रङ्गसूरे देवा। स० (ए चाल) धुर
समकित व्रत चित धरोरे वाल्हा। भव भय दुःख दल परि-
हरो। परिहरो हांरे वाल्हा प०। शिव रमणी वर लिजीये ॥
१ ॥ वीर जिनेसर वन्दीयैरे वाल्हा, जिम चिरकाल सुं नंदीये
नं० हांरे वा०। कुमति दुरति सर किजीयै ॥ २ ॥ चरण
करण गुण मणि निलोरे वाल्हा, जगजन तारण सिरतिलो।
सि० हां०। सदगुरु चरण नमीजायै ॥ ३ ॥ जिन भाषित
श्रुतसागरोरे वाल्हा, भेद विविध विधि आगरो। आ० हां०
श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन शासन जिन धर्म
नोरे वाल्हा। राग दलन वसु कर्मनो। कर्म० हां०। कुशल
कला रस भीजीये ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सकल करमदल मलहरण, पूजा धुर जलधार।
जगनायक जिन तुझनी, उरधर जगति उदार ॥ १

॥ राग झिंझोटी ॥

निरमल होय भजलै प्रभुप्यारा। सब० (ए चाल) जिनवर न्हवन करण सुखदाई, छूटै जनम मरण दुःखदाई। जि० टेर। खीर जलधि गङ्गोदकमांहि, अमल कमल रस सरस मिलाई ॥ जिन० १ ॥ निरमल शकल परम तीरथ जल, मणियुत कञ्चन कलश भराई ॥ जि० २ ॥ या जिन जीके नवण करणतें, भवभय दुःखदल दाघ समाई ॥ जि० ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसै, तेनर नरक निगोद न जाई जिन० ४ ॥ यातें भवि जनके दुःख नासै, कपूर कहै सुरहोत सहाई ॥ जिन० ५ ॥

॥ काव्य ॥

परमलंकृत संस्कृत श्रद्धया, स्नपति यो जिनचन्द्र मिमं मुदा। भवभयं परिमुच्य सदोदयं, भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा० श्रीमद् श्रीसमकित व्रत उपदेश काय जलं यजामहे स्वाहा। इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ प्राणातिपात ब्रते केशर चन्दन बिलेपन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्राणातिपात विरमण ब्रते, ठन्को जन्तु विनास।
इणसुं शिवसुख ना मिलै, हिंसा दोष विलास ॥ १

॥ राग सरफरदो ॥

हमकुं छांड़ चले बनमाधो ॥ राधा० (ए चाल) ॥ भवि-जन जीवदया ब्रत धारो, सम परिणाम सम्भारोरे ॥ भ० टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियै, भाषै जगदा धारोरे। देश विरति धरनें पिण भाख्यो, विन अपराध न मारोरे ॥ भ० १ ॥ गो गज सैंधव महिषा दिकने, बन्धन वध न विचारो रे। कीजै न अवयव छेद त्रिकालै, जल चारो न विसारो रे ॥ भ० २ ॥ कीड़ी कुञ्जर ने सम गिणियै, सुख दुःख जोग विकारो रे। थावर त्रस पञ्चेद्रादिकनो, होय रहियै हित कारोरे ॥ भ० ३ ॥ ए ब्रत रत चित जे नर जगमे, सुर नर गण मन प्यारो रे। तेहिज लोभ महाभट मान्यो, सकल करम परिवारो रे ॥ भ० ४ ॥ थूलथकी ए व्रत जे पालै, तेलहै शिवसुख सारोरे। कुशल कला कलना करी प्रगटै, अनुभव रङ्ग उदारो रे ॥ भ० ५ ॥

॥ दोहा ॥

भव दव दाघ सवे मिटै, पूजो परम दयाल ।
भावठ भञ्जन सुखकरण, दूजी पूज रसाल ॥ १

॥ राग घाटा ॥

जिनराज नाम तेरा म्हा राज० (ए चाल) पूजो जिनेंद्र प्यारा, हां तारोरे विकट भव जलसे ॥ हो० टेर ॥ हांरे घनसार चन्दन वासै, हांरे सु कुरङ्ग नाभि जासै । दुःख नरकादि नासै ॥ होता० १ ॥ घसि सूरुड़ादि भेली, नाना सुगन्ध मेली । शिवदेन कर्म ठेली ॥ होता० २ ॥ पूजा सदा रचावो वर भावनापि भावो । शिव सौधमें समावो ॥ होता० ३ ॥ विधि भाव द्रव्य धारो, हिंसाको दोष वारो । प्रभुनाम ना विसारो ॥ होता० ४ ॥ तज पाप भार फन्दा, शिव शं कलाप कन्दा । साधै कपूर चन्दा ॥ होता० ५ ॥ इति प्रथम पूजा.

॥ काव्य ॥

अमल कुंकुम केशर मिश्रितै, जिनपतेर्युगपाद समर्चनं.
हराति सो भवदाघ मसुन्दरं, रचतियो घनसार सुचन्दनै ॥ १
ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु० श्रीमत्० प्राणातिपात विरमण व्रत उपदेशकाय चन्दनं यजामहे स्वाहा । इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ मृषावाद व्रते वासक्षेप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मृषा त्याग व्रत दूसरो, कुमति दुरति हरतार।
भविजन भावे आदरो, शिवतरु फलदातार ॥ १

॥ राग वसन्त ॥

सब अरति मथन मुदारधुपं (कर० ए चाल) सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन, मृखा वादन बोलरे। बाला मृखा० (टेर)। मृखावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे बाला ॥ कुजश० १ सु० ॥ सकल शिवसुख धाम भ्रमरवि, ढकण राहु निटोलरे। शिवपुर नगर पथि शवर सरिखो, अरति व्यापन घोलरे बाला ॥ अरति० बाला० २ सु० ॥ निपट कूट कलाप करीनें, पर गुपति मत खोलरे। ऋण विधौ धनधान्य निकरै, कपट कूट न तोलरे ॥ बालक० ३ सु० ॥ कूटलेख कुसाख भरिने, रचयमां डमडोलरे। अन्य सिरसि कलङ्क धरीने, चरित छांनु न बोलरे ॥ बाला० चरित ४ सु० ॥ वसुनरेसर वृथा रचिने, लह्यो कुगति कचोलरे। दुतीय व्रत रस राग भैरवी, कुशल सार विमोलरे ॥ बाला कुशल० ५ सु० ॥

॥ दोहा ॥

जगदाधार जिनन्दने, पूजौ वास रसैण ।
शिव वनिता वस कीजियै, पूजा त्रयतम एण ॥ १

॥ राग गरबो ॥

भवि चतुर सुजान परनारी सुं प्रीतड़ी कबहु न कीजियै भ० (ए चाल) भविभाव धरी भवसागर निस तारक जिनपति सेवियै । भ० टेर । बावना चन्दन खण्डन करियै, तेहमा वलि कुंकुम रस भरियै. मृगमद परिमलता अनुसरियै भवि० १ ॥ कङ्कोल सुवासित वलि कीजै, तिम विविध कुसुम रस कस दीजै । ए चूरण विधि निज वसकीजै ॥ भ० २ ॥ इम वासरसै जे जिन पूजै, तिणसै सवि करम सबल धूजै । सुख सम्पति जायन घर दूजै ॥ भवि० ३ ॥ सुर किन्नर नर शासन धारै, विन समन्या सहु सङ्कट वारै । ए पूजन मन वंछित सारै ॥ भवि० ४ ॥ विमला कमला सबला पावै, जे प्रभुगुण गण भावन भावै । इम चन्द कपूर सुजश गावै ॥ भवि० ५ ॥ इति

॥ काव्य ॥

मृगमदांवर घश्रण मिश्रितै, वंर वरास सुचन्दन संस्कृतैः रचति यो जिन पूजन मञ्जसा, सलभते निभृतिं किलवासकैः १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये । जन्म-

जरामृत्यु श्रीमद॰ मृषावाद विरमण ब्रत उपदेशकाय वास-
क्षेपं यजामहे स्वाहा। इति मृषावाद पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी अदत्तादान ब्रते पुष्पमाल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ब्रत तृतीय हिव सांभलो, भाखै जगत जिनन्द।
स्तेयकरण सर्व सुख, हरण, अष्टकरम दलकन्द ॥ १

॥ राग सोरठ ॥

हांहोरे देवा। बावन चन्दन घसि कुमकुमा। चूर॰।
ए चाल। हांहोरे वाला। पर धन हरण गम नकरो। धरि
त्रिकरण शुद्ध विलाश ए। हांहोरे वाल्हा। ए भवजल जल-
धर समो। वलि समकित बृन्द विनास ए ॥ व॰ १ ॥ हांहोरे
वाल्हा ॥ कनक रजत मणि धातुनो। जल थल खज पशु
पटकूलए। ज॰। हांहोरे वाल्हा। इमतनु थूल जगतिभरया,
लही सकल पदारथ मूलए ॥ ल॰ २ ॥ हांहोरे वाल्हा ॥
कुमति दुरति रमणी तणो। छै सदन ए चोरीनो कर्मए। छै॰
हांहोरे वा॰। विपद जलधि पिण जाणियै। स चपल थई

नासै धर्मए ॥ स० ३ ॥ हांहांरे वाल्हा ॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए । शि० हांहांरे वाल्हा कुशल कलायुत कीजियै । लहियै भव जल नो पार ए ॥ ल० ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

पूज चतुर्थी माल नी, करियै भक्ति वशेण ।
मोह तिमर भर उपशमें, प्रगटै बोध खिणेण ॥ १

॥ राग खम्भायची ॥

भवभय हरणा, शिवसुख करणा । सदा भजो भ्रम० मे ए चाल । भविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि, वर फूलनकी माला । मेवारी० व० । ए पूजन दुरगति घर छेदी, विरचै शिवसुख साला ॥ मेवा० वर० भवि० १ ॥ चम्पक मरुक तिलक चम्पेली, पाड़ल लाल गुलाला । मेवा० पां० । विमल कमल परिमल मदमाता, न तजै अलि मतवाला ॥ मेवा० मत० भवि० २ ॥ जाई दमण जूही कोरण्टक, मालती मरुक रसाला । मेवा० मा० । ऐसे पञ्चवरण कुसुमें करि, माल रचन परनाला ॥ मेवा० मा० भवि० ३ ॥ ए माला पूजन करी नासै, कोटी करम दुःखजाला । मेवा० को० । सुमति सुगति अनुभव वलि प्रगटै, त्रासै कुमति कुचाला ॥ मेवा० त्रा० भवि० ४ ॥ ए विधि सम्वरद्वार विकासै । पाप सदन

सुख ताला। मेवा० पा०। कपूर कहै प्रभु चरण शरणमैं, मङ्गल माल विशाला ॥ मेवा० मं० भवि ५ ॥ इति

॥ काव्य ॥

सरस सुन्दर चम्पक पाटलै, मरुक मालती केतकी सत्कजैः। विधि विगुम्फ्य जिन परिपूजयेत, सज मजश्रम मी भिरजेच्छकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त० जन्मजरा० श्रीम० अदत्तादान विरमण ब्रत उपदेशकाय। मालं यजामहे स्वाहा। इति अदत्तादान ब्रत पूजा ॥ ४ "

॥ अथ पांचमी मैथुन ब्रते दीपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

त चोथे मैथुन तजो, भजो भविक भगवान।
शीलाराधन योगसें, लहियै शर्म्म वितान ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

कुन्द किरण शशी ऊजलोरे देवा। पाव०। (ए चाल)
मन वच काया थिरकरीरे वाल्हा। कलुष कुशील निवारीरे। आछो। एह नरक रमणी तणांरे। वाल्हा। शोदर अति हिढ

कारोरे ॥ आछो १ ॥ नर सुर पशु सहुजातनोरे । वाल्हा । विषय कलित बहु दोषैरे । आछो । ते परिहरिनें थिररहोरे । बाल्हा । निजदारा सन्तोषैरे ॥ आछो २ ॥ लङ्कापति नरकै गयोरे । बाल्हा । ए मैथुन रस धारूरे । आछो । एहनें तजकरि केई लह्यारे । बाल्हा । जीवसफल सुखसारूरे ॥ आछो ३ ॥ शील रत्न जतने धारोरे । बाल्हा । तसदूषण सवि छण्डीरे । कुशल कला करीनें लहोरे । बाल्हा । शिवसुख माल प्रपंचीरे आछो ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

दीपकपूजा पांचमी, करै सकल दुःखनास ।
ज्ञायक लोका लोकने, प्रगटै बोधिविकास ॥ १

॥ राग देश वरवो ॥

केसरियानेंझाझको० (ए चाल) भावधरि दीपक पूज रचावो । यातै शिव सुख सम्पति पावो ॥ भ० ॥ रक्त पीत सित वरण विचित्रत । सूतनीवाट वणावो । गोघृतमांहि अधिक तरकरिनें । सुभमन दीपजणावो ॥ भा० १ ॥ दीपकनें मिस मनमन्दिरमै । ज्ञानकोदीप जगावो । जड़तातिमर कलापहरीने । मङ्गलमाल वधावो ॥ भा० २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमें । ए पूजन मन भावो । सुर नर पाय नमें ततखिणही । यातें नरक न जावो ॥ भाव० ३ ॥ अनुभव

भाव विशाल करीने । आतम सुं लयलावो । कपूरकहै भवि-
जनसे प्रभुके । वर गुण गण जश गावो ॥ भ० ४ ॥ इति

॥ काव्य ॥

आत्म प्रबोधैक विवर्धनाय, जाड्यांधकार व्रज मर्दनाय
भव्य प्रदीपं कुरु भक्तिवृन्दैः, प्रभो गृहे वायधतर्ज्जनाय ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त० जन्मजरामृत्यु निवार०
श्रीमज्जि० मैथुन विरमण व्रत उपदेशकाय दीपं यजामहे
स्वाहा । इति पांचमी मैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥

———***———

॥ अथ छठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

भविकीजे व्रत पांचमे, सकल परिग्रह मांन ।
ए मोहादिक शवरनो, भूधर दुःखनी खांन ॥ १

॥ राग बसन्त ॥

अतुल विमल मेल्या अखण्ड गुणे ॥ मेल्या० ए चाल ॥
सकल भविक भन्या विमल गुणे, वाल्हा, मांन परिग्रहनो करो
ए । सकल० टेर । बज्र समान ए समगिरि भेदन, दोष
दिवस पति वासरो ए ॥ स० १ ॥ धन कण बसन गवादिक

पशुनो, धातु निकर तिम जानियै ए। इत्यादिक नवभेद विधाने, दश वैकालिक भाणियै ए॥ स॰ २॥ एहने मूं थकी जे हरे नर, तेहने मोक्ष मिलै सहीए। सुचिर काल ग्र वास वसै जे, तेहने देश विधै कहीए॥ स॰ ३॥ नर निवास इने विनपाम्यो, मुम्मण सेठ ते भाखियै ए। भवि जन ए व्रत भावथी पालो। कुशल कला निज दाखियै ए सकल॰ ४॥ इति

॥ दोहा॥

छट्ठी पूजा धूपकी, धूवो जिनवर अङ्ग।
कुशुरभि करमतणी हरै, दायक शिवसुख चङ्ग॥ १

॥ राग देसाख॥

प्यारी छिव वरणी न जाय। प्यारी॰। थारे मुखडारी हो वारीराज। प्यारी॰ ए चाल। ऐसी विधि पूजन भाई दिल धार, धूप धूम घनसार धार करी। ऐसी॰ टेर। या भवभीम वारिसागरमें, तरस तरंडक तरल विचार॥ धू॰ १॥ चंदन देवदारु वलि अंबर, मृगमद गंधवटी घनसार॥ धूप॰ २॥ ऐसे सुरभिद्रव्य बहुमेली, तिणमे सेल्हारस न विसार॥ धूप॰ ३॥ मणियुत कञ्चन धूपदानमै, विमला नलथी करि सुप्रचार॥ धूप॰ ४॥ कपूर करत तुतिया जिन पूजा, भविजन गणकी तारणहार॥ धूप॰ ५॥ इति

॥ काव्य ॥

नानासुगन्ध वसुनिर्मित सारधूपं, चाकर्षितं भ्रमरवृन्द मतिर्हियेन । श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालभक्त्या, धूपे ज्जिनाधिपतिनं शिवदं मुदावै ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त शक्तये श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत उपदेशकाय धूपं यजामहे स्वाहा । इति परिग्रह प्रमाण व्रत छट्ठी पूजा ॥ ६ ॥

——*-)+(-*——

॥ अथ सातमी दिश परिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

छठो व्रत दिशमानको, गमनागमन निवार ।
अकुशलता सवि उपशमै, श्रेयसम्पजै सार ॥ १

॥ राग गरबो ॥

सिद्धाचल मण्डण स्वामीरे (ए चाल) श्रीशिवमुख संपति वरियेरे, भवभव दुखवारण करियै रे । करिदिशि परिमाण जे चरिये । रसीला । भाव विमल दिल धरियै रे । वाल्हा । धरियै तो समरस भरियै ॥ र० १ ॥ अध ऊर्ध्वने तीरछ

वखाणो रे। दिश विदिशने तेम प्रमाणो रे। ए छे सङ्कट जलधि नोराणो ॥ रसी० २ ॥ एमां गमनागमन निवारै रे। ओछे कुमति दुराति भरतारोरे। इकचक्री लह्यो दुखभारो ॥ रसी० ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चण्डोरे. तुमे भविजन एहन खण्डोरे। कहै कुशल कला नितमण्डो ॥ रसी० ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

भवियण पूजा सातमी, कीजे भक्ति विशाल।
स सुरभि नाना जातना, विमल कुशम भरथाल ॥ १

॥ राग धन्याशरी ॥

कबहु में नीके नाथ न ध्यायो। क० एचाल। प्रभुजीकी फूल पूजन सारो। प्र० टेर। श्रीजिनजीके चरण कमलमें। अलि समता गुणधारो ॥ प्र० १ ॥ चम्पक कुन्द गुलाब केवड़ा, पारभिनाग कलारो। जासु दमण वासन्ति मोगरा, पाड़ल लाल मन्दारो ॥ प्र० २ ॥ इम नानाविध कुशम घटा करि, भाव विमल जलझारो। तालहिये भविजन भुव करोनें अचिरथकी भवपारो ॥ प्र० ३ ॥ व्रतधर फूल कलाप रुचिर ग्रहि, पूज तजे जगतारो। कपूर कहत जिन चरण मगन रहि, करम सकल दल मारो ॥ प्र० ४ ॥ इति

॥ काव्य ॥

गन्धाभ्रमलादि गुण लक्षण लसि तैनें, पुष्पोत्करे [illegible]

गुञ्जित चञ्चरीकैः। संसेवये द्विविध जाति समुद्भवैर्या, जैनेश्वरं व्रजतिसोह्य चिरच्छिवंना॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पं यजामहे स्वाहा। इति दिशि परमान व्रत सातमी पूजा॥ ७॥

॥ अथ आठमी अष्टमङ्गलीक भोगोपभोग व्रत पूजा॥

॥ दोहा॥

जगनायक पदकमलमें, धरियै करि मनभृङ्ग।
भोग अनें उपभोगनो, ए सहुव्रत गिरिशृङ्ग॥ १

॥ राग सरफरदा॥

सिद्धचक्रपद वन्दोरे, भविकासिद्ध०। ए चाल। सकल चित्तने द्रव्यविकृती। वाहन बलि तम्बोल। वसन कुशम दल पानहि तिमवलि। सयण विलेवण घोलरे। भविका। इण व्रतमें मनमण्डो, शिवमुख रयण करण्डोरे॥ भ० १ इ० ब्रम्हचर्य दिशि न्हाण भत्त इम, नियम चतुर्दश माल। प्रति

दिन भाव हृदयधरि करियै, एहनि सार सम्भालरे ॥ भवि॰ २ इण॰ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर विंशत, अखिल विपुल महिकन्दो। कालखीण सहु द्रव्य अजाण्यो, फल निशिभोजन छन्दोरे ॥ भवि॰ ३ इण॰ ॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदे, अशनारम्भ विशाल। इङ्गालादिक करण करावण कर्मादान कुचालरे ॥ भवि॰ ४ इण॰ ॥ एछण्डै ते शिवसुख मण्डै, खण्डै कुगति दुकाल। सहजानन्द शस्यसुख प्रगटै प्रवदै त्रिजगकृपालरे ॥ भवि॰ ५ इण॰ ॥ इण व्रतकरि चित मन्दिर भरियै, तरियै भवजल पार। अनुभव चन्द्र सुधा झड़मण्डै, कुशलकला निरधाररे ॥ भ॰ ५ इ॰ ॥ इति

॥ दोहा ॥

मङ्गलपूजा आठमी, करम दलन असिधार।
करियै श्रीजिनराजकी, वरियै शर्म अगार ॥ १

॥ राग ठुमरी ॥

तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोन खबरलै मरोरे। तु॰ ए चाल। भविजन भावै श्रीजिनवरकी, मङ्गलपूजा कीजेरे। वाला मङ्ग॰ टेर। श्रीलायन शरलासन नन्द्या, वर्त्त कुम्भ निरमीजेरे। मीन युगल श्रीवच्छ सरावनो, सम्पुट स्वस्ति करीजेरे वाल्हा ॥ सम्पु॰ १ भवि॰ ॥ ए अडमङ्गल मण्डन कारण कञ्चन थाल रचीजेरे। रुचिरा खण्ड विमल गुणधारी, तंदुल

से लिखलीजैरे ॥ भवि० २ ॥ निजमन भक्तिभाव धरि भविका, प्रभु सनमुख धरदीजैरे । तो सुखधाम मुक्तिपुट भेदन, निवसन कृत्य लहीजैरे ॥ भवि० ३ ॥ स्वांत गगन-सम सूर्योदयथी, कोटिकरम तम छीजैरे । प्रगट प्रताप पीन जिन चरणे, चन्दकपूर नमीजैरे ॥ भवि० ४ ॥ इति

॥ काव्य ॥

यः सत्कांचनभाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मण्डिते, श्रीला-ष्टष्ट सुमङ्गलानि विधिना मण्डयप्रभो सन्मुखे । भक्त्यात्मा परिढांकये द्रुचिपरः सोघव्रजं नाशयेत्, भित्ते दुर्गति भूधरं च लभते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय० भोगोपभोगव्रत उपदेशकाय अष्टमङ्गलं यजामहे स्वाहा । इति भोगोपभोग व्रत आठमी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी अनर्थ दण्डव्रते तण्डुल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

भवि ए व्रत अष्टमधरो, अनरथ दण्ड बिचार ।
पाप चिरन्तन उपशमै, प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

सुगणसनेही साजन श्रीसीमन्दिरसामि ॥ अ० ए चाल

त्रिकरण शुद्ध निसुणभवि अनरथ दण्ड विचार, समकित सुभटनो गञ्जन भञ्जन सम्वर द्वार। मनमथ बोधविकासक शास्त्र पठन अधिकार, मुख भू दृग तनुथी करै भण्डकुचेष्टा-गार ॥ १ ॥ हास्य थकीबली कुवचन भाषण मुखर प्रबन्ध ऊखल मुशल घरट्टादय अतिधरण दुरन्ध। स्नानसमें जल तैल अधिकतर अप्रतिबन्ध, पापविधाना देश प्रकाशन दूषण-सन्ध ॥ २ ॥ सरस वस्तुभृत पात्र मात्र विन छादन ठान, धरणकरण सुविवेक बिकल तिम दानादान। इम सहु अनरथ करम अवरपिण दुःखानि खान, व्यर्थ पणे मनमान्यां छेदे पुन्यप्रधान ॥ ३ ॥ इण करिपूर्वें केइगया नर सङ्कटधाम, व्रत प्रहीने रहियै तव लहियै शिवसुखठाम। ए व्रत तरणी भवो-दधि तारण तरण प्रकाम, कुशलकला नितकरतां प्रगटै अभि-नव मांम ॥ ४ ॥ इति

॥ दोहा ॥

नवमी श्रीजिनराजनी, पूजा परमविलाश।
विमलाकृत जरिजाजने, जविजन करो प्रकाश॥ १

॥ राग पीलू ॥

अबतो उधाज्यो मोहि चाहियै जिनन्दराय, राखुं भरोसो मैं

रावरे चरणको । अ० ए चाल । श्रीजिनवरजीकी सेवा सारै सो भवभय दुःख दूरनिवारै । श्रीजि० । तण्डुलविमल सकल गुण मण्डित, खण्डित दोष रहित उरधारै । कञ्चनपात्र भरी जिन आगै, ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचारै ॥ श्रीजि० १ ॥ या पूजन जनतन मनरञ्जन, गञ्जन कुगतिकुं बोधविदारै । सबल करम नग भेदनहारो, सघन भवोदधि पारउतारै ॥ श्रीजि० २ ॥ सुमति सानुभव आन मिलावै, तेपिण पद दिवशर्म समारै । पीनमहोदय धार भाव धरि, चन्द कपूर सनूर निहारै ॥ श्रीजिन० ३ ॥ इति

॥ काव्य ॥

यःखण्डजाति गुणबृन्द समन्वितानि, ना ढोकयेद्विपुल-निर्मल तण्डुलानि । कर्म्मावलिं झटिति छेद्य हिमञ्जिनाग्रे, सोवैभजे च्छिवसुखं सुतरामनन्तं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारनाय० श्रीमज्जिनेंद्राय अनर्थदण्ड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवमी अनर्थ दण्डव्रते तण्डुल विरमण व्रत पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमो सामायक व्रते दर्पण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नवमो नव निधि जाणिये, सामायक व्रत सार ।
सुर जेह्नी आसाकरै, सुरतरु सम दातार ॥ १ ॥

॥ राग ॥

आयरहो दिल बागमैं होप्यारे जिनजी । आय० ए चाल सामायक व्रत पालरे, भविकजन । सामायक ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगै इक महुरत, निरतीचारै चालरे ॥ भवि० १ सा० ॥ गृहव्यापार तजीने सुभमन, धरि निरवद्य विशालरे ॥ भवि० २ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन, स्मृति विहीनता टालरे ॥ भ० ३ सा० ॥ द्वाविंशत दूषण परिहरिने, पञ्चम गुण घरझालरे ॥ भ० ४ सा० ॥ इम धन मित्र तणीपर सीझो, कुशल कला परनालरे ॥ भ० ५ स० ॥

॥ दोहा ॥

दशमी दर्पण पूजना, कीजै श्रावक सुद्ध ।
सुरपादपसम शङ्करण, हरण पाप संकुद्ध ॥ १ ॥

॥ राग कालिङ्गडो ॥

नेम प्रभुजीसुं कहज्योजी म्हांरा । नेम० ए चाल । जिन पूजनमें रहीयेंर म्हांरा । जि० । मन वञ्छित फल लहीयेंर ॥

म्हां० जि० (टेर)॥ कञ्चणमणि रतनेकरि जड़ियो, वर दरपण करगहिये। जिनवर सनमुख दाखन विधिसे, सकल करम वनदहियैरे ॥ म्हांरा १ जि० ॥ प्रभुजीकी सेवा सब सुखदाई, भावभक्ति उरचहियै। शिववनिता तुम प्रेम विलूधै अपर अधिकस्युं कहीयै रे ॥ म्हांरा २ जि० ॥ निजकसरीर प्रमाद वसै करि, भवदल भीति न सहीयै. सुभमन समकित धीरसङ्कले, चन्दकपूर निवहियै रे ॥ म्हांरा ३ जि० ॥ इति

॥ काव्य ॥

रुचिर निर्मल दर्प्पण दर्शणं, विनयभृधृदयः किलकारयेत् जिनपते रचिराद्भवसङ्गमं, सचनिरस्य भजे च्छिवमञ्जसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय, दर्पणं यजामहे स्वाहाः। इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ ११ मी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दसमो व्रत हित भवियणा, धारो धरि वर भाव।
संसारार्णव गहिरनो, तारण वर तरनाव ॥ १ ॥

॥ राग ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यारे, धन्यभाग हमारा। सिद्धा० ए चाल। श्रद्धा धर मन भाजैरे, घनपाप तिहारा॥ श्रद्धा० भाजै० (टेर)॥ बिमल सकल सुभ विनय धरीने, गुरु मुख वचन हजारा. ए व्रत सुन्दर दिल धरो भविजन, देशावकास विचारारे॥ घनपा० १ श्रद्धा०॥ द्रव्यानयन प्रेक्ष प्रयोगे, सब्द रूप अनुसारा। पुद्गल पेक्षण प्रभृति सकलना, तजीये दूषण धारारे॥ घनपा० २॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै, प्रत्याख्यान प्रचारा। सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें, गुणमणि रयण भण्डारारे॥ घनपा० ३॥ कर्म कषाय हरीने छेदै, चउगति गेह विहारा। अजरामर धनदै लह्यो निरमल, कुशल० कला करिसारारे॥ घनपा० ४ श्रद्धा०॥ इति

॥ दोहा ॥

एकादशमी पूजमें, विवध भांति नैवेद्य।
भेख करो जिनराजनी, दायक सुखनिरवद्य॥ १

॥ राग कल्याण ॥

तेरी पूजा बनीहै रसमें। होते० ए चाल। सेवासारो श्रावक जिन चरणै। होसे० (टेर)। मोदक लपनश्री घर घेवर, शिता सुरस घृत झरणे। मुक्त चूर विंद्वादिक बहुतर, नैवेद्य नाना धरणै॥ होसे० १॥ रयणाङ्कित कञ्चन भाजन

भरि, मन वच तनु थिरकरणें । करिढोकन विधि परम विनय
री, रहियै नित प्रभु सरणें ॥ होसेवा० २ ॥ दुःखदल
ासन या पूजन विधि, निर्वृति विशद सुख भरणें । चन्द-
पुर कहत भविजनके, कलिमल माला हरणें ॥ होसेवा० ३

॥ काव्य ॥

धवल धाम शितार्पि समुद्भवैः विमल भक्ति समन्वित
र्थ्य रैः । जिनपते विदधाति विपूषनं, सलभते शिवशं प्रवरा-
क्षैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये
न्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय देशावगासिक
व्रत दृढ ग्रहण उपदेशकाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति
ग्यारमी देशावगामी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥

॥ दोहा ॥

व्रतपोषध इग्यारमी, भावो भविकविधान ।
ध्यावो ज्युं दुतसंहरै, प्राकृत कर्म वितान ॥ १ ॥

॥ राग एदेशी ॥

इण सरवरियानी पालकभादोयराजवी ॥ म्हांरालाल

ऊभा॰ ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीयै ॥ म्हां॰ प्र॰ टेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि विनयधरि धारीयै । म्हां॰ वि॰ । ते पिण दुविध प्रकार चतुर न विसारियै । म्हां॰ च॰ । प्रतिवासर प्रतिपर्व्व सजैतिम सारियै ॥ म्हां॰ १ स॰ पड़िलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हां॰ स॰ । परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हां॰ म॰ । षटकाया संघट्ट तजीनें सञ्चरो । म्हां॰ त॰ । अचपल थई पचक्खांण विविध मन सम्भरो ॥ म्हां॰ २ वि॰ ॥ वलिसहु दूखन टालिनें पाप निकन्दियै । म्हां॰ पा॰ । चौगति च्यार कषाय करम दल छन्दियै । म्हां॰ । इण विधि तारण तरण सु गुरुपद वन्दियै । म्हां॰ सु॰ । कुशल कलादल मालकरी चिरनन्दियै । म्हां॰ ३ क॰ ॥ इति

॥ दोहा ॥

द्वादशमी धज पूजमें, घोषण देइ अमार ।
धरियै द्वादश भावना, तरियै भव जल पार ॥ १

॥ राग देशाख ॥

कुबजानें जादु डारा (ए चाल) प्रभुजीसे प्रीतलाना, करी ध्वज पूजन विविधानाहो ॥ प्र॰ १ (टेर) ॥ जोयण सहस मानमणि मण्डित, कञ्चनदण्ड रचानाहो ॥ प्र॰ २ ॥ पञ्च वरण युत वसन पताका, अधिवासित लटकानाहो ॥

प्र० ३ ॥ ढक्कनाद करी तीन प्रदिक्षणा, रोहणाविधि मन-
आना हो ॥ प्र० ४ ॥ या विधि सकल करम रिपुदारण,
जोतिमे जोतिसमानाहो ॥ प्र० ५ ॥ जग तारण श्री जिन-
दरशणसे, चन्द कपूर लुभानाहो ॥ प्र० ६ ॥ इति

॥ काव्य ॥

भव्यार्च्चांति ध्वजवरैः सशुभैः सलीलै, जैनेश्वरं कनकदण्ड
युते सशोभैः। कर्मारि वृन्दजय छद्म समन्वितैर्या, पैसोभजे
च्छिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने
अनन्तानन्त जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय
ध्वज यजामहे स्वाहाः। इति बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥
१२ ॥

॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्वादशमोव्रत सुखफलद, साधु दानसनमान।
अजरामर पदसंपजै, सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥

॥ राग कजरी ॥

मेरो मन मोह्यो माई आनन्दझिलै ॥ आ० एचोलं ॥

साधुदान ब्रत भवि हृदय धरो, हृदय धरो रे भाई हृदय धरो रे । सा० (टेर) । ब्रत सयंम गत परलिङ्गीने, पड़ि लाभन मति रिजु न करो ॥ रिजु० १ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजै, अशनादिक देई सुकृतवरो ॥ सुकृ० भा० २ सा० ॥ वलि पंचाती चार निवारी, परम विरातिना विघन हरो ॥ विघ० ३ भा० सा० ॥ श्री श्रेयांसनें चन्दन वाला, अनुमाने पदनिर्वृतिवरो ॥ निर्वृ० ४ भा० सा० ॥ इति

॥ दोहा ॥

फल दल पूजा तेरमी, भरि भाजन कमनीय ।
भविक रचौ भगवानकी, भव विषधर दमनीय ॥

॥ राग ख्याल ॥

लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० । ए चाल । लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पूजनके लोभीसैणा (टेर) पूजन विधि प्रभुकी दिल धरलै, थिर करि मनतनु वैणा ॥ हो पू० १ ॥ श्रीफल पुङ्गी वीजपूर वलि, आम्र कदली फल लेणा ॥ हो पू० २ ॥ इम नाना फल गहिप्रभु आगै, भरि भाजन धर दैणा ॥ हो पू० ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमे, प्रभु समरण दिन रैणा ॥ हो पू० ४ ॥ कपूर कहै प्रभु पद पङ्कजमे, षट्पद भए जुगनैणा ॥ हो पू० ५ ॥ इति

॥ कलश ॥

हांहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश धारा ॥ टेर) सुर नर मुनि तिरियग वन सींचन । वचन सजल घन-कारा ॥ हांहो० प्र० ॥ विक्रमपुर श्रीत्रिशला नन्दन, जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी, भवियण गण हितकारा ॥ हांहोहि० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चन्द्र सूरि वर, राजै विगति विकारा । श्रीमति भा धृति रादि कलि तर्क, धरि मन वचन अगारा ॥ हांहो० आ० २ प्र० ॥ सम्वत रस त्रिक निधि रात्रिकर, मासाश्विन मनुहारा । धवल पक्ष प्रतिपद तिथि सोभन, रजनीपति सुतवारा ॥ हांहो सु० ३ प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिसाखाधर, पाठक पद विस्तारा । रूप चन्द गणि चरण कमलमे, कुशल सार मधुकारा ॥ हांहो म० ४ प्र० ॥ अपर नाम करि चन्द कपूरा, रचि जिनपति नुति-सारा । लक्ष्मी प्रधान प्रवर गणिवरकी, प्रेरणया सुविचारा ॥ हांहो ५ प्र० ॥ इति

॥ काव्य ॥

जम्बाम्रादि फल व्रजैः स सुरसैर्गन्धादिभिर्मिश्रितै (नूनं द्रव्य हृतुद्भवैश्च विधिना कुर्यात् प्रभोरर्च्चनं । भक्तः स प्रभु पूजनैक निरतो भूयोपि भूयो लभे, च्छर्म्मस्वर्ग तरोरकं सुख-फला गारं वरं निर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्री श्रीं परमात्मने अनन्ता-

नन्त॰ श्रीमजि॰ अतिथि सम्विभाग व्रत उपदेशकाय फलं यजामहे स्वाहा । इति श्री साधु कपूरचन्द जी कृत बारह व्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

॥ अथ संक्षिप्त विधि ॥

विशाल जिन मन्दर अथवा धर्मशालामे त्रिगढ़ पीठ समवसरणकी स्थापना करै, जिसपर पूर्व दिशकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी, एवं चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करै । आगे एक चौखूणा अच्छा चांदी पीतलादिकका पट्टा स्थापन करै, जिसपर एक बीचमे, ६ उपर, ६ नीचे एवं १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुञ्ज करै । ऊपर व्रत नाम युक्त १३ चिट्ठि स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिने पासे ध्वजा अष्टमङ्गलीकादि सोभता अतिशय स्थापन करै । अब १३ चिट्ठि लिखनेकी रीति ।

१ । ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री सद्दर्शनाय नमः ।

२ । ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रताय नमः ।

३ । ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रताय नमः ।

४। ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण ब्रताय नमः।

५। ॐ ह्रीं श्री स्थूल मैथुन विरमण ब्रताय नमः।

६। ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण ब्रताय नमः।

७। ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण ब्रताय नमः।

८। ॐ ह्रीं श्री भोगोपभोग परिमाण गुण ब्रताय नमः।

९। ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दण्ड विरमण गुण ब्रताय नमः।

१०। ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा ब्रताय नमः।

११। ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा ब्रताय नमः।

१२। ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा ब्रताय नमः।

१३। ॐ ह्रीं श्री अतिथि संविभाग दानरूप शिक्षा ब्रताय नमः।

इसि तरे चिट्ठी १३ लिखके स्थापित करै। तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसे प्रतिष्ठत करै (और) जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, ध्वजा, अष्टमङ्गलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामे लगाय दोनु तरफ रखै। पीछे स्नात्र करायके पूजा करावै। जो पदकी पूजा सुरू होय सो थाली लेतो रहै चढ़ातो रहै परन्तु) नारेलका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और ध्वजा १३ ब्रतका मांडलापर ब्रत दीठ चढ़ावै। बाकी द्रव्य सर्व थाल्यांमें दोनु तरफ रखै। दीपक पूजामे १३ दीपक तो एक थालीमे रखै। और वारह ब्रतका अतीचार १२४ वर्जण

निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक मांडलेके चारुं तरफ सोभता श्रेणीवद्ध रखै इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तासें पुजन विधि करै, करावै, करतांकी अनुमोदन करै विशेष चितकी उमङ्ग होय तो वाजित्रादि उच्छवके सा मोटी ध्वजा, कल्पवृक्ष, अष्टमङ्गलीक नगरमें फिराकर लावै उत्तम उत्तम द्रब्य भगवानके भेट करै । इति वारह व्रत पूज विधि सम्पूर्णम् ।

॥ ❀ अथ पाठक बालचन्द जी कृत पञ्च-कल्याणक पूजा ❀ ॥

॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिरूप जगदीशनो, अद्भुत रूप अनूप ।
प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥
चौवीसे जिनवर नमी, पञ्च कल्याणक रूप ।
शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ १-२
कल्याणक उच्छव करे, इन्द्रादिक जे देव ।
तें भावे भविजन करे, श्री जिनवरनी सेव ॥ ३

॥ राग सरफरदो ॥

जोति सकल जगदीशनी, हांरे जगदीशनी ए। चार निक्षेप प्रमाण। नाम जिनादिक जिन कह्या, आगम मांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणा जिण नामा, ठवण जिणा उ जिणन्द पड़िमाउ। दव्वजिणा जिण जीवा, भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

विन कारण कारज नहि, हांरे का० ए। ए सब लोक प्रसिद्ध। भाव निक्षेप प्रधानता, कारज रूपें सिद्ध ॥ १ ॥ विन आकारे द्रव्यनो। हां० द्र० ए। न हुवे थापन सिद्ध। नामाविना आकारनो, प्रगट पणे नावि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सहि। हां० का० ए। इनविन भाव न होय। भाव विशुद्धें जिनतणी, पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारे निश्चय लहे। हां० नि० ए। कारण कारज होय। पावड़ शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा, लोकालोक प्रकाश।
व्यापकभावे थिर रहो, शुद्ध विकास विलास ॥ १

॥ राग सारङ्ग ॥

हांहोरे देवा । ज्योति सकल जिन राजनी, सहु लोकालोक प्रकाश ए । हांहोरे देवा । राजत श्रीजिनराजनी, वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हांहोरे देवा ॥ मात नमु नित्य शारदा, गुरुपंच कल्याणक सार ए । हांहोरे देवा । तीर्थंकरणा वरणवुं, गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक जग धणी, त्रिभुवन पति परमेश ।
पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १

॥ ढाल तेहिज ॥

हांहोरे देवा । वीश स्थानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए । हांहोरे देवा । दिव्य अमर सुख अनुभवे । प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हांहो ॥ निरमल तर वर ज्ञानना, धारक कारक शुभयोग ए । हांहो । शब्द वरण रस गंधना, शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो ॥ शाश्वत सिद्धायतण तणा, नित उत्सव करत सुरङ्ग ए । हांहो । बालचंद पाठक कहे, नित मङ्गल होत सुचङ्ग ए ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पुण्य पूर्व भव प्रभुतणो, प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ।
[illegible]ो नित प्रति करे, नाटक नवनव भाव ॥ १

॥ पूर्व सुख सावनं (एदेशी) ॥

शुद्ध जिन दर्शनें, करिय गुणकर्षणा। जिन चरण सेवना विविध कारी ॥ हे अइयो विविध कारी ॥ ए आं० ॥ एक जिन धर्ममय परम लय लीनता, दीनता सकल तज रज निवारी ॥ हे अइ० १ र० ॥ आत्मगुण अन्तरातमपणं वृत्तिता, तजिय वहिरात्म जिन आण धारि ॥ हे अ० २ आ० शुद्ध सम्यक्त गुण सम्पदा निज लही, सहीय शुभ धर्म रुचि भास सारी ॥ हे अ० ३ भा० ॥ विविध मणि रत्ननी जोति झगमग जगे, चन्द्रिका भास भासित करारी ॥ हे अ० ४ भ० प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखे मुदा, आयुकर बन्ध नर भव सुधारी हे अ० ५ भ० ॥ गर्भ अवतार निज मात उदरें लहे, वाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ० ६ शु० ॥

॥ दोहा ॥

शुभदिन शुभ मुहुरत घड़ी, शुभ उच्च ग्रह चार।
देवलोक चवि प्रभु लहे, मातु उदर अवतार ॥ १
सुन्दरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिन मात।
स्वप्न देख सुख सेजमें, जाग्रत अति हरखात ॥ २

॥ राग काफी ॥

जिनजी भजो भवि प्यारा, यातें आनन्द अधिक अपारा जि० १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता, देखे सुपना मंग-

भाता । चित्त हराषित हुयं तिन वारा ॥ जि० २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार । धज कुम्भ पदमसर सारा ॥ जि० ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमान, रयणो च्चय मेरु समान । निर्धुम पावक सुखकारा ॥ जि० ४ । शिवधान्य मङ्गल श्रियकारी, जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी सुभ सूचक पुण्य सम्भारा ॥ जि० ५ ॥ सुन्दर वर सखियन सङ्गे, करि धर्म जागरिकारङ्गे । निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ६ ॥ इहां एक पुष्पमाला चढावै ।

॥ दोहा ॥

परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ।
प्रवचन प्रगटी करण प्रभु, पुण्यतणे सुप्रकास ॥ १

॥ पूजा सतरे प्रकारी (एदेशी) ॥

आज आनन्द बधाई भई त्रिभुवनमें, चौद सुपन सुचित गुण जेहना । अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज गनमें पुत्र रतन फल वचन नृपति कुल, परम कल्याण होत जन जनमें ॥ आ० २ ॥ प्रफुलित हरष भरत हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें । दिन दिन बढ़त प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ३ ॥ रूप रजत मणि माणक मोतिये, शङ्ख प्रवाल शिल वरसनमें । धन

धनद सुरइन्द्र हुकमते, भरत भण्डार नृपके सदनमें ॥ आ० ४ ॥ ताल कन्साल मधु वीण बजावत, गीत गान गावत तन मनमें । दुन्दुभि मुरज मृदङ्ग घन गरजत, गरज गरज मानु जैसे घनमें ॥ आ० ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह बाढ़, निशिदिन होत जन जन पदमें । इन्द्र इन्द्रानि नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ६ ॥ परम कल्यान शुभयोग संयोग भयो, शुभ घरि शुभ [illegible] दिनमें । वरण सकेन ताहि कवि अवसरको, आनंद [illegible] सदनमें ॥ आ० ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनंतानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय चवनकल्लाणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति प्रथम चवण कल्याणक पूजा ।

॥ अथ द्वितीय जन्म कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारण काज ।
नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

आज अधिक आनन्द भयो रे वाला, आज सुरङ्ग वधाई रे । आछो जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधुगन

मिल आई रे ॥ १ ॥ आछो आज आनन्द घन उलट्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे। आछो दशदिश निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे ॥ २ ॥ आछो फूले फूले वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे। शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवे नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे। सब जन मन हरषित भयो रे वाला, भूमण्डल छवि छाई रे ॥ ४ शुभदिन शुभ महूरत घडी रे वाला, शुभग्रह शुभपल आई रे जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ए, पढ़ो, पुष्प तथा गुलावजलकी वर्षा करे। (सोरठो) त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्म समय जिनराजने। वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥

॥ रावण निरत वणावे हो भला (एचाल) ॥

आज आनन्द वधाई रे देखो, आज आनन्द वधाई। जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरषाई रे ॥ दे० १ घर घर गोरी मङ्गल गावत, मोतियन चोक पुराई रे। इति उपद्रव भय सब भागे, खीर समुद्रे जाई रे ॥ दे० २ ॥ आज सनाथ भयो है त्रिभुवन, जिनवर जनम्या भाई रे। आज अधिक जग हर्ष भयो है, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ३ ॥ जन्म महोत्सव वरननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे।

करि कदलीगृह सुन्दर रचना, पावन कर टर लाई रे ॥ दे० ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रनमी, मस्तक आण चढ़ाई रे स्नान करावत उभय शरीरे, तैलाभ्यङ्ग कराई रे ॥ दे० ५ ॥ भूषण भूषित अङ्ग विलेपन, देव दुष्य पहराई रे। दर्पण ले मङ्गल घट थापी, चामर युगल ढुलाई रे ॥ दे० ६ ॥ पञ्च-वरणके फूल सुगन्धित, सुर कुमरी हरषाई रे। होम करि रक्षापोटरिया, जिनवर करे बधाई रे ॥ दे० ७ ॥ मङ्गल गावत जिन जग जननी, निजगृह मांहे ठाई रे। सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुमरी घर आई रे ॥ दे० ८ ॥

॥ दोहा ॥

अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान। इन्द्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥

॥ राग गौड़ी। सांझ समे जिन वन्दो। एदेशी ॥

आज उच्छव मन भायोरे। देखो माई। जग जननी जिन जायोरे ॥ दे० आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इन्द्रासन थररायो रे ॥ दे० १ आ० ॥ अवधिज्ञानधर जिन-जीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे। हरिणगमेषी इन्द्र हुकमतें, घण्ट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० २ आ० ॥ बनठन नव

नवरूप मनोहर, सुर समुदय मन भायो रे । सुरकुमरी वर-भूषण भूषित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ३ आ० ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरे आयो रे । चौसठ इन्द्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ४ आ० ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दादुर मोर सुहायो रे । अतिहि सुगन्ध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायो रे ॥ दे० ५ आ० ॥ इति

॥ दोहा ॥

शक्र जाय जिनवर गृहे, जिन जननी जिनराज ।
प्रणमी श्री महाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १

॥ सुन्दर नेम पियारो माई (एदेशी) ॥

तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० (ए आंकणी) ॥

जग वत्सल जग नायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० १ ॥ धन जग जननी तुम सुत जायो, अधम उधारण हारो माई । धन धन प्रगट भयो जग दिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई । कर जोड़ी प्रभु अरज करतहुं, सब जन काज सुधारो माई ॥ तु० ३ ॥ मे सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई । इन्द्र कहे पद

पङ्कज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई । चौसठ इन्द्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ५ ॥

इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अन्दरसे लायके, सिंहासण उपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ।

॥ दोहा ॥

पञ्च रूप कर इन्द्र जिन, पण्डुग वन ले जाय ।
सिंहासण उछरङ्ग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनो गुमान न करिये छबीली राधा हे (एदेशी) ॥

जिनजीको पूजन करिये, हां रे हो रङ्गीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव बहुभेदे करतां, भव सागर निस्तरीये ॥ जि० १ ॥ गङ्गाजल चन्दन पुष्पादिक, अड़विध मङ्गल धरिये । भाव विशुद्धे जिन गुण गावो, नाटक नवनव करिये जि० २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करनन तरिये । वो आनन्द देखे सोइ जानं, दुःख सब दूरे हरिये ॥ जि० ३ ॥ पूजन करि प्रभुकुं घर लावे, आतम पुण्ये भरिये कर अट्ठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरिये ॥ जि० ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्य यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिक्षा कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात।
मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात॥
पार नहीं धनको जहां, अगणित भरे भण्डार।
दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार॥ १-२

॥ गात्र लूहे० (एदेशी) ॥

जिनजन्म महोत्सव रङ्गसुं रे, भये प्रात करत उछरङ्गसुं रङ्गसुं हांरे देवा रङ्गसुं। नृप उत्सव करे अति घनो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजश कीरत विस्तरे ॥ वि० हां० ॥ घरघर उत्सव रङ्गमे ॥ २ ॥ सुरवधु मिल सुरसङ्गसुं रे। देवा। करे नाटक नवरङ्गसुं। रङ्ग० हांरे०। बाललीला जिनसङ्गमे ॥ ३ ॥ रूपातिशये शोभता रे। देवा। इन्द्रादिक मन मोहता। मो० हांरेमन०। वियाप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीड़ा अतिशय वता। अ० हां०। वैक्रिय शक्ति समेलसुं रे ॥ ५ ॥ गावत गीत उमङ्गशुं रे देवा, वाजित्र नव नव रङ्गशुं। रे हां०। वजित अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम।
सुर सुसङ्ग क्रीड़ातिशय, अतिशय गुण अभिराम॥

॥ पंचवरणी अङ्गी रची (एदेशी) ॥

वरणी न जाती रे, व०। जिनजीकी शोभा व०॥ चित्र-जात नर सुरासुर निरखत, ओरण एसो जग भाति॥ जि० १॥ अनन्त गुणे करि शोभित प्रभु जी, शुद्ध सम्वेग सोवन जाती। शिव मारग शुध सेवत निशिदिन, पुण्यपुरुप पाथा-राती॥ जि० २॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती। कामभोग वर विबुध प्रकारे, प्रात भये सुख सङ्घाती॥ जि० ३॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती, धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती॥ जि० ४॥ इन्द्र अहोनिशि भावन भावत, देख दरश अति हरखाती। दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजत नित, सुरवधु वनमङ्गल गाती॥ जि० ५॥ ए पढ़के, प्रभुको पुष्प वासक्षेप चढ़ावे।

॥ दोहा ॥

प्रवरभोग प्र[illegible]ते, प्रगटे प्रगट प्रधान।
गुण भा[illegible]क [illegible] वासमे, दर्शन ज्ञान निधान॥ १

॥ राग ठुमरी (तुम बिन दीनानाथ) ॥

प्रभुविन दीनानाथ दयाविन, कोन कहावत कोई रे। प्र॰ गृहवासें शुधसंयमधारी, शुद्धसुभावे होई रे ॥ प्र॰ १ ॥ सम्यग्दर्शनभवनिर्वेदं, स्ववनकी जर खोई रे। प्रभुता प्रभुकी को कहि वरणं, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र॰ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमें नित, आतम निरमल धोई रे। आतमरूप निहारत निजघर, सद्गुमति जह जोई रे ॥ प्र॰ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्म उजियारे, साम कहावत सोई रे। गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र॰ ४ ॥ निज-प्रभुता प्रभुजीनो लीनो, अन्तर शत्रु विगाई रे, विषयवासना क्षीण भई लख, आतम शक्तिशुं ठांई रे ॥ प्र॰ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढ़ावे।

॥ दोहा ॥

दाता दीनदयाल प्रभु, देत सम्वत्सरिदान।
दूर करै दरिद्र जग, त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानन्दनकी, क्या छवि लागत प्यारी ॥

जगपति जिनवरकी, क्या छवि मोहनगारी। ज॰। मोहत प्रभुकें मोहनरुपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या॰ १ भोगकर्म अन्तराय कर्म कछु, क्षीण भये निरधारी। दानसंव-सुर घन जिम बरसत, पृथ्वी प्रमुदितकारी ॥ क्या॰ २ ॥

नवलोकान्तिक देव सवे मिल, हाजर होय सुचारी। जय जय मङ्गल शब्द उच्चारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ३ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी। दाता दीनदयाल जगतमे, जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ४ इन्द्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षोत्सव अतिभारी। गान दान सनमान तान करी, प्रभुगाति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ५ ॥ तजि सन्सार लियो शुभयोगे, संयम सतर प्रकारी। मनपर्यव वर ज्ञान भयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री दी० अष्टद्रव्य० स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोड़ा कोड़।
जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥
इन्द्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम।
नर नारी आशीष दे, जयजय त्रिभुवन साम ॥
तजि आश्रव सम्बर गहे, संयमभाव निधान।
सब सन्सार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥

॥ तेरी पूजा वणी तेरसमें (एदेशी) ॥

धारी धारी धारी, जिन भए संयमपद धारी । चरण कमल वलिहारी । जि० । पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर, सब जीवां सुखकारी ॥ जि० १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणभारी । भय भैरवते निःप्रकम्प भए, निर्मम निरहङ्कारी ॥ जि० २ ॥ क्रोध मान माया लोभ आकिञ्चन, अकिञ्चन ब्रह्मचारी । पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, निरञ्जन अविकारी ॥ जि० ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती, खे सम निराश्रयारी । खड्गी शृङ्ग परे एकाकी, अप्रतिबन्ध विहारी ॥ जि० ४ ॥

॥ दोहा ॥

रत्नत्रय परिग्रह करि, मुक्तिमार्ग अभिराम ।
निशिदिन करत विहारक्रम, प्रासुकाम निजधाम ॥

॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी (एदेशी) ॥

जिनवरजी जगतहितकारी । जि० । जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ जि० १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइन्द्रिय, अप्रमाद भारण्डसुचारी । अतिशय धाम धाम निष्कर्मीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि० २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुञ्जर करम विदारी । अतिगम्भीर सायरसम

शोभित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ३ ॥ तेज पुञ्ज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी। सर्व सहन कारक धरणीपर, स्वच्छ हृदय कजधारी ॥ जि० ४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुत्तर धर संयम कीया, कल्पातीत जिनन्द।
वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचन्द ॥ १ ॥

॥ कुवजाने जादू डारा (एदेशी) ॥

जाके रागद्वेष भया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा। जा०। वासी चन्दन सम प्रभु जगमें, अपकारे उपकारा रे ॥ सो० १ ॥ कञ्चन काष्ठ समान है जाके, सुख दुःख सम उपचारा। कोउ निन्दत कोउ पूजत, जिनजी है अविकारा रे ॥ सो० २ जा० ॥ शिवसुख अरु भवसुख हू न वांछे, वीतराग प्रभु प्यारा। शूर वीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ़, मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो० ३ जा० ॥ क्षायिक संयमते शुभ योगे, अनुत्तर गुण गण धारा। पाठक विजय विमल कहे प्रभुके, चरण कमल बलिहारा रे ॥ सो० ४ जा० ॥

॥ दोहा ॥

घनघाती चउ कर्मको, क्षयकर क्षायिक ज्ञान।
दर्शन लोकालोकको, प्रगट प्रकाशी जान ॥ १

॥ (राग ठुमरी) वस मन क्षत्री कुण्डके तीर ॥

पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वड़वीर। पा०। अनुत्तर जाके सुमति गुपति है, अनुतरक्षमासुधीर ॥ प० १॥ मार्दवआर्यव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर। संवरजोग क्रिया नवि विणठी, रही ईर्या सुख सीर। प० २॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधिर। पूरन दर्शन प्रगट भयो है, निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ३॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसम्पद, भयो अनुकूल समीर। दे उपदेश भविक प्रतिबोधत, वचनातिशय गम्भीर ॥ पा० ४॥ लोका० लोक प्रकाश परम गुरु, कहि न सके मति धीर। पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सु थीर ॥ पा० ५॥ ॐ ह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा। इति ॥ ४॥

॥ अथ पञ्चम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन शिरदार।
सब दरशी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥ १॥

॥ अतुल विमल मिल्या, अखण्ड गुणे० (एदेशी) ॥

अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इन्द्र उच्छव धरे ए । चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० १ ॥ रजत कनक वर रत्न प्राकारे, कनक रत्न मणि कंगुरा ए । वृक्ष अशोक सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० २ ॥ दुन्दुभि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए । जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इन्द्रादिक सुरी सुर वरे ए । नरनारी तिर्यंग विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ४ ॥ भविजन धम तणे उपदेशे, जोजन गामी मधुर गिरे ए । प्रतिवोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ० ५ ॥

ए, पढ़के वासक्षेप करे ।

॥ दोहा ॥

प्रगट पणे प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ।
प्रगटी प्रभुता परम सम, परमातम पदरूप ॥ १

॥ विगड़ी कौन सुधारे नाथ विना (एदेशी) ॥

भूमण्डल भविकमल विवोधन, दिनकर सम जिनराया है । भू० । अणहुन्ते इक कोड़ी अमरपद, पङ्कज भमर

लुभाया रे ॥ भू० १ ॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवन नाथ कहाया रे। चौसठ इन्द्र करे जाकी सेवा, तन मनसे लयलाया रे ॥ भू० २ ॥ इन्द्रानि मिल मङ्गल गावत, मोतियन चौक पुराया रे। सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे। शासन नायक सङ्घ सकल कुं, प्रवचन तत्त सुनाया रे ॥ भू० ४ ॥ अनन्तगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे। पर उपकारक प्रभुके पाठक विजय विमल गुण गाया रे ॥ भू० ५ ॥ ए, कहके वासक्षेप करे।

॥ दोहा ॥

जिन निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत। मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहेरवो ॥

जिनन्दवामिल गयो रे, दोय चरणुं पर ध्यान। शुक्ल मन गहगह्यो रे। जि०। ज्ञायकज्ञेय अनन्तनो रे, सबदरसी जिनचन्द। सुरतरु सम जग वालहो रे, सेवत सुर नर इन्द धर्ममें लहलह्यो रे ॥ दो० १ ॥ चौदस गुण थानक कौ रे,

आतम वीर्य अनन्त। योग निरोधनकी कियारे, सूक्षम बादर कन्त। बन्ध सब दूर गयो रे, सरब सम्बर भयो रे ॥ दो॰ २ ॥ घन कर आत्मप्रदेशनो रे, कर शैलेशी कर्ण। कर्म सकल दूरे कियारे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण ; मुक्ति पद जिम लह्यां रे ॥ दो॰ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मको रे, क्षय कर पर अनुबन्ध। निज आतम रूपे लह्युं रे, शाश्वत सुख सम्बन्ध ; सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो॰ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भये सुविशुद्ध।
परमातम प्रभु परम पद, चिदानन्द अविरुद्ध ॥ १

॥ राग धनाश्री) तेजतरणीमुखराजै (पदेशी ॥

तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीको। ते॰। एक समय प्रभु ऊरध गति कर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्रा॰ १ ते॰ ॥ सादि अनन्त सदा शाश्वत वर, अनन्त महासुख छाजे। अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्ध स्वरूप विराजे ॥ प्रा॰ २ ते॰ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके, कहि न सके कविराजे। अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे प्रा॰ ३ ते॰ ॥ सम्बत उगणीसे तेरोत्तर, श्रावण शुदी पक्ष

राजे। श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पञ्चमि दिवस समाजे प्र० ४ ते० ॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसङ्घ सकल समाजे। पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे प्र० ५ ते० ॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे। जङ्गमगुरु भट्टारकवरश्री, जिन सौभाग्य सु राजे ॥ प्र० ६ ते० ॥ प्रीत विलास धम्मसुन्दर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे। पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ७ ते० ॥ हंसविलाश प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सु समाजे। श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्मप्रभावन काजे प्र० ८ ते० ॥ ॐ ह्रीं प० अनं० जन्मजर.मृत्यु निवारणायः श्री मज्जिनेन्द्रेभ्यो निर्वाणकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा। इति श्री पाठक विजय विमलजी विरचित पञ्च कल्याणक पूजा समाप्तः।

॥ आरती (राग मालवी गोड़ी) ॥

शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्ते, करो भविक रसाल रे। प्रथम धूप सुगन्धजिनकुं, उखेवो जिननाल रे ॥ १ ॥ भाल निजकर तिलक सुन्दर, पहर पुष्प सुमाल रे। दक्षिण कर जिन राजजुके, कर आवर्त्त सुथाल रे ॥ शु० २ ॥ यथा सगते शुद्धभगते, करो दिल खुशिय रे। द्रव्यभावे विविध

पूजा, भविकभाव विशालरे ॥ शु० ३ ॥ गुण अनन्त महन्त गावो, प्रभुपरम दयालरे । जन्म सफलो करो भविक जन, कहे पाठक बालरे ॥ शु० ४ ॥ इति आरती ।

॥ अथ पांच कल्याणक पूजा विधिः ॥

प्रथम विंबप्रतिष्ठामे (तथा) ऋद्धिवन्त सेठ सऊकारादिककी तरफसे (तथा) सङ्घ समुदायके, जो पांच कल्याणकका उच्छव होय (तबतो) विस्तार विधिसे एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उच्छव करे । पांच दिनमे पांच कल्याणक करै (और) जल यात्रा, चोविस प्रकारी वीश स्थानक सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उच्छव विस्तार विधि सहित करावै । ऐसे १० दिनका उच्छव करै (यथा) पहले दिन पूठिया चन्द्रवा तोरणादिकसें मण्डपकी स्थापना करावे । १० दिग्पालाकों वलवाकुल दिरावे । जल यात्रादि उच्छव करके मङ्गल कलश थापन करै (जैसें) देवलोकसें च्चवके माताके गर्भमें आवै (तैसे) भगवानकी माताको काष्टमई घरादिकमे पढ़ि विंबोरथापन करै (पिछे) ऊपर सेती काष्ठ विमानमें भगवानको प्रतिविम्ब स्थापन करके नीचे उतारै (पीछे) चवदे स्वप्नांको क्रमसे उतारै । माताके

मण्डपके पास रक्खे। तीन नवकार गुणके उतारे (और) तीन नवकार गुणके स्थापन करै (पीछे) एक (व) २४ रत्न (अथवा) एक (व) २४ रूपियासें, च्यवन कल्याणककी थांपना करै (और) च्यवन कल्याणककी पांच पूजा पढ़े। इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ जन्म कल्याणक विधिः ॥

तिसरे दिन जन्म कल्याणकको सम्पूर्ण उच्छव करै (जैसें) छप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शणादिक उच्छव करै। तिस पिछे सुमेरु पर्वतकी थापनाके उपर इन्द्रादिकका रूप करके भगवानको थापन करे। सोना, चांदि, तांवा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरेका कलश वन सके तो १००८ कलश गङ्गानदी आदि ठिकानेका जलसे भर भरके स्नात्र उच्छव करावे। १ भृङ्गार, २ दर्पण, ३ रत्न करण्डक, ४ स्थाल, ५ पुष्प चङ्गेरीका इत्यादि उपकरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखै। सर्व क्षेत्रोंकी सुगन्धी ओषधीयांसें स्नात्र करावे। गुलावजलकी, पुष्पांकी, रत्नाकी वर्षा करे। तदन्तर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उच्छव कियो, उस माफक अपनेमें

बन सके जिस मुजब सम्पूर्ण उच्छव करे (तदन्तर) घृत २४ सेर, नैवेद्य २४ सेर, गुड़ २४ सेर, अच्छा फल २४ चढ़ावे। २४ सधव स्त्रीयां मिलके २४ गवली करे। जन्म कल्याणककी पांच पूजा पढ़े। आरती मङ्गल दीप उतारे।

॥ अथ दिक्षा कल्याणक बिधिः ॥

चौथे दिन दिक्षा कल्याणकको उच्छव करे। खाशा पालकीमें भगवानको बेठाके, वर घोड़ा वाजित्रादि सहित बड़े उच्छवसे निकाले। अच्छा बाग बगिचामे लेजाके, अशोक, आम्रादि उत्तम वृक्षके निचे सिंहासण पर स्थापन करके स्नात्र उच्छव करावे। २४ गज उत्तम वस्त्र चढ़ावे। वाशक्षेप देके नवीन वस्त्रघा चढ़ावे। दिक्षा कल्याणककी पांच पूजा गवावे। जैन याचकादिकको दान देवे। साहमी वच्छल करे।

॥ अथ केवल ज्ञान कल्याणक पूजा बिधिः ॥

पांचमे दिन त्रिगड़ा समोसरणकी रचना करे। मुगट छत्र चमरादि अनेक तरेके रत्नजड़ित आभुषण सहित भगवानको स्थापन करै। पंचवर्णा सुगन्धी फुलांकी वर्षा करे। नाना प्रकारका वाजित्र वजावे। केवल ज्ञान कल्याणककी मीठा स्वरसे पांच पूजा गावे। इति पंचकल्याणक पूजा सम्पूर्णम्।

अथ पांचज्ञान पूजा

॥ दोहा ॥

वर्द्धमान जिनचन्दकुं, नमन करि मनरङ्ग।
पूज रचुं नवि प्रेमसुं, सांभळजो उछरङ्ग ॥ १ ॥
पांचज्ञान जिनवर कह्या, मति श्रुति अवधि प्रधान। मन पर्यव केवल बड़ो, दिनकर जोत समान ॥ २ ॥ ज्ञांनबड़ो सन्सारमे, गुरु विन ज्ञांन न होय। ज्ञांन सहित गुरु वन्दिये, सुचि- कर तन मन होय ॥ ३ ॥ वीर जिनन्द बखा- णीयो, नन्दीसूत्र मझार। नव्व सदा अनुभव धरो, पावो सुख श्रीकार ॥ ४ ॥ निरमल गङ्गोदक भरि, कञ्चन कलश उदार। श्रुत सागर पूजन करो, भाव धरि भविसार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

चित हरष धरी अनुभव रङ्ग बीश परमपद सेवियें।
पखाल। मति अतिहि भलो सकळ विमल गुण आगर भवि-

जन सेविये । (आंकणी) एमति ज्ञान सदा नमिये, निज-
पाप सकल दूरै गमियै ; मन शुद्ध करी निज गुण रमियै
मति० १ ॥ व्यञ्जनकर अवग्रह इमजानो, चउभेदकरी मनमे
आनो ; इमभाषै श्रीजिन जगभाणो ॥ मति० २ ॥ अरथे
करी भेद जिनन्द आखै, पण इन्द्रिय मनकर प्रभुदाखै; मुनि
मानस ते दिलमे राखै ॥ मति० ३ ॥ वलि षटविध भेद
ईहा कहियै, षटभेद अपाय करी लहियै ; षटविध धारण
भवि सर दहियै ॥ मति० ४ ॥ इमभेद अट्ठाईस भविधारो,
इमभाखे जिनवर सुखकारो ; निश्चय व्यवहारते अवधारो ॥
मति० ५ ॥ वलिरतन जड़ित कञ्चनं कलशै, भवि पूजन
कर तन मन उलसै ; चिद्रूप अनूप सदा विलसै ॥ मति०
६ ॥ ए ज्ञांन दिवाकर सम कहियै, इम सुमति कहै दिलमै
गहियै ; ए ज्ञानथी अनुपम सुख लहियै ॥ मति० ७ ॥ ॐ
ह्रीं परमात्मने अनन्ता० जन्मजरा० श्रीमज्जि० श्रीमति ज्ञान
धारकेभ्यः जलं यजामहे स्वाहाः ॥ १ ॥

॥ अथ (२) श्रुतज्ञान पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रुत धारक पूजा करो, भाव धरी मनरङ्ग ।
उपगारी शिरसेहरो, भावो जिन उछरङ्ग ॥ १ ॥

मृगमद चन्दन वाससुं, जो पूजे श्रुतअङ्ग ।
अनुभव सुध प्रगटे सहि, पामे सुक्ख अभङ्ग ॥ १

॥ ढाल ॥

नाभजीके नन्दाजीसे लग्यामेरा नेहरा (ना० एचालमे श्रुताजिकी पूजा कर सीखो भर्वा सेहरा । विनय सहित गुरु वन्दन करकै, कुल २ पायनमे गुरुदेवरा ॥ श्रुत० १ ॥ तीन तीश आशातन टाली, भगति करै भवि गुण गण गेहरा । श्रीगुरु ज्ञान अखण्डित बरसै, ज्युं पावस रुत बरसै मेहरा ॥ दशविध विनय करै श्रुत गुरुको, सेवे ज्युं अलिफूलने नेहरा । गुणमणि रयण भर्यो श्रुतसागर, देख दरश हरषावे मेरा जीवरा ॥ श्रुत० ३ ॥ पूछन वायन वलि २ करियै, सीखै वंछित ज्युं मुनिसेवरा । गुरु भगति जैसी गणधरकी, वीर कहै सुण गौतम सेहरा ॥ श्रुत० ४ ॥ ऐसे गुरु भक्तिसे सीखो, ए श्रुतज्ञान सकल सुखदेहरा । गुरुविन ओरन को उपगारी, गुरु देव सदा गुण मणिके जेवरा ॥ श्रुत० ५ ॥ ऐसे गुरुकी कीरत करकै । सुमति धरो दिलमे गुण गेहरा ॥ श्रुत० ६ ॥

॥ नित नमियै थिवर मुनिसरा नि० (एचाल) ॥

नित नमियै श्रुतधर मुनिवरा । नि० । अरथै श्री जिन राज बखाणें, सुत्रे श्री गुरु गणधरा ॥ नि० १ ॥ मेघकुमी

जिम भविजन सुनके, हरषै ज्युं केकी वरा । नि० । अङ्ग इग्यारै गुण मणि धारक, बारै उपांग उजागरा ॥ नि० २ ॥ जगत उधारण तुं परमेशर, सकल विमल गुण आगरा । नि० । च्छेद पयन्ना नन्दी सेवो, मूल सूत्र भवि गुण करा ॥ नि० ३ ॥ श्रुतधारी गोतम गुण दीवो, पूरव चउद विद्याभरा नि० । पहिलो आचारङ्ग बखांणें, चरण कमल गुण सुख-करा ॥ नि० ४ ॥ दूजो सुयग डांग सुणीजै, भेद तिशन तेसठुखरा । नि० । तीजो ठांणांग सूत्र विराजै, सुणतां पाप मिटै परा ॥ नि० ५ ॥ चौथो समवायांग सुहावै, अरथ अनेक करीवरा । नि० । पंचमे भगवई महिमा करियै, सहस छंत्तिश प्रशन धरा ॥ नि० ६ ॥ छठ्ठो ज्ञाता अङ्ग सुं ध्यावो, धरमकथा कहै जिनवरा । नि० । सातमो अङ्ग उपाशक कहियै, दशश्रावक प्रतिमा धरा ॥ नि० ७ ॥ आठम अङ्गै जिनवर दाखै, अन्तगड़ केवलि मुनिवरा । नि० । नवमे अङ्गै भविसु न धारो, अनुत्तर वाई शुभकरा ॥ नि० ८ ॥ प्रश्न-विचार कह्या जिन दशमे, अंगुष्ठादिक शुभतरा । नि० । अङ्ग इग्यारमें जिनवर दाखै, कर्म बिपाक विविध परा ॥ नि० ९ बारमो अङ्ग जिणन्द बखांणें, अतिशय गुण विद्याधरा । नि० अक्षरश्रुत वलिसन्नी कहियै, सम्यक् भेद अधिकतरा ॥ नि० १० ॥ सादिभेद सपरजव लहियै, गम्यकभेद सुणोनरा ।

नि० । अङ्ग प्रविष्ट कहै जिनवरजी, भेंद चवद सुणजो खरा नि० ११ ॥ इमजो श्रीश्रुतज्ञान आराधो, भाव भगत कर बहु परा । नि० । सुमति कहै गुरु ज्ञांन आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० १२ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० श्रीश्रुतज्ञान धारकेभ्यः चन्दनं यजामहे स्वाहाः ॥ २ ॥

॥ अथ (३) अवधिज्ञांन धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अगर सेल्हारस धूपसैं, पूजा अवधि उदार ।
बोधबीज निरमल हुवै, प्रगटै सुक्ख अपार ॥ १
नवल नगीनैं सारिखो, ज्ञांनबड़ो सन्सार ।
सुरनर पूजै भावसुं, महियल ज्ञांन उदार ॥ २

॥ ढाल ॥

निरमल हुय भजले प्रभुप्यारा, सब सन्सार० (एचाल) अवधिज्ञानको पूजन करले, ज्युं पावै भवपार सलूणा । अ० । ज्ञानबड़ो सुखदैन जगतमें, उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० १ ॥ भेद असङ्खकहै जिनवरजी, मूलभेद षट् सार । स० । वद्धमान हीयमान वखाणें, सूत्रे श्री गणधार ॥ स० २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमाणे, देखै द्रव्य उदार । स० । अवधि

सहित जिनवर सहुआवै, थाये जग भरतार ॥ स० ३ ॥ ज्ञान विना नर मूढ़ कहावै, ढोरसमो अवतार। स०। ज्ञानी दीपक सम जगमांहे, पूजै सहु नर नार ॥ स० ४ ॥ ज्ञांन तणीं महिमा जग मांहे, दिन दिन अधिकी सार। स०। मूलमन्त्र जग वशकर वाको, एहिज परम अधार ॥ स० ५ ॥ ज्ञांननी पूजा अहनिशि करियै, लीजै वंछित सार। स०। ज्ञानने बन्दी बोध उपायो, करम कलङ्क निवार ॥ स० ६ ॥ इत्यादिक महिमा भवि सुणकै, पूजो अवधि उदार। स०। सुमति कहै भवि भाव धरिने, सेवो ज्ञान अपार ॥ सलूणा ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० श्रीअवधिज्ञांन धारकेभ्यः। धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ (४) मनपर्यवज्ञांन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

केतकी दमणो मालती, अवर गुलाव सुगन्ध।
भावधरी पूजन करो, हरै कुमति दुरगन्ध ॥ १
मनपर्यव पूजा करो, विवध कुशम मनरङ्ग।
महिके परमल चिहुं दिशै, पामैं सुजश अनङ्ग ॥ २

॥ ढाल ॥

॥ सेत्रुञ्जातोवासीप्यारो लागै० से० (एचाल)..

जिनजीरो ज्ञानसुहावे, म्हांराराजिन्दा (जिनजीरा ज्ञान अनन्तो सोहै, कहतां पारन आवे ॥ म्हांराराजिन्दा, जि० १ सन्नी नर मनपरयव जाणै, ते मुनि ज्ञान कहावे । म्हारा० जि० विपुल मतीनें ऋजुमति कहिये, ए दुयभेद लहावै ॥ म्हारा० २ जि० ॥ अंगुल अढ़यि ऊणो देखै, ते ऋजु नाम धरावै ॥ म्हारा० ३ जि० ॥ मनगत भाव सकल ए भाषै, ते चौथो मनभावे । म्हारा० जि० । एहनि महिमा नित नित कीजै, तिस भवि नाम धरावै ॥ म्हा० ४ जि० ॥ जग जीवन जग लोचन कहियै, मुनिजन ए नित ध्यावे । म्हा० जि० । दिक्षाले जिनवर उपगारी, चौथो ज्ञान उपावै ॥ म्हारा० ५ जि० ॥ मनका शन्से दूर करत है, सुणतां आंण मनावे । म्हा० जि० तन मन शुचिकर पूजन करलै, जनम जनम सुखपावे ॥ म्हारा० ६ जि० ॥ विविध कुशमसे पूजा करतां, वोधलता उपजावै । म्हारा० जि० । सुमति कहै भवि ज्ञान आराधो, श्री जिनदेव बतावै ॥ म्हारा० ७ जिन० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः पुष्पंयजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ (५) केवल ज्ञानपूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रभुपूजा ए पञ्चमी, पञ्चम ज्ञांन प्रधान।
सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवल ज्ञांन ॥ १
फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार।
भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञांन अपार ॥ २

॥ ढाल ॥

॥ तुमविन दीनानाथ दयानिध तु॰ (एचाल) ॥

तुं चिद्रूप अनूप जिनेसर, दरशणकी बलिहारी रे। तुं॰ (आं॰) निरमल केवल पूरण प्रगट्यो, लोका लोक विहारी रे केवल ज्ञान अनन्त विराजै, क्षायक भाव विचारी रे ॥ तुं॰ १ जोत सरूपी जगदानन्दी, अनुपम शिवसुख धारी रे। जगत भाव परकाशक भानू, निजगुण रूप सुधारी रे ॥ तुं॰ २ ॥ सकल विमलगुण धारक जगमें, सेवत सब नरनारी रे। आतम शुद्ध सरूपी भविजन, गुणमणि रयण भण्डारी रे ॥ तुं॰ ३ ॥ केवल केवल ज्ञान विराजै, दूजो भेदन धारी रे। आतम भावे भविजन सेवो, जग जीवन हितकारी रे ॥ तुं॰ ४ ॥ अवर ज्ञान सब देश कहावै, केवल सरब विहारी रे।

सरब प्रदेशी जिनवर भाषै, साखै श्रीगणधारी रे ॥ तुं॰ ५ ॥ भए अजोगी गुणके धारक, श्रेणिचढ़ी सुखकारी रे। अष्ट कर्म दल दूरकरीने, परमातम पद धारी रे ॥ तुं॰ ६ ॥ ऐसे ज्ञान बड़ो जगमांहै, सेवो शुद्ध आचारी रे। सुमति कहै भविजन शुभ भावै, पूजो कर इकतारी रे ॥ तुं॰ ७ ॥ १ फल, २ अक्षत, ३ दीपक, ४ नैवेद्यसे, पूजो ज्ञान उदारी रे। पूजत अनुभव सत्ता प्रगटै, विलसै सुख ब्रम्हचारी रे ॥ तुं॰ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री केवलज्ञान धारकेभ्यः १ फलं, २ अक्षतं, ३ दीपं, ४ नैवेद्यं, यजामहे स्वाहाः ॥ ५ ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥

॥ ढाल ॥

॥ केशरियाने ज्ञानको लोक तिरायो॰ (एचाल) ॥

प्रभु थारो ज्ञान अनन्त सुहायो, प्रभु अशरण शरण कहायो। प्रभु॰। मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायो। भव्य सकल उपगार करतहै, श्रीजिनराज बतायो प्र॰ १ ॥ खरतर गछ पति चन्द्र सूरीसर, राजत राज सवायो तेज पुञ्ज रवि शशि सम सोहै, देखत दिल हुलसायो ॥ प्र॰ २ ॥ प्रीत सागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृतधर्म सुपायो।

शीश क्षमा कल्याण सुपाठक, सदगुरु नाम धरायो ॥ प्र० ३ धरम विशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्याया। ज्ञान क्रियानी मूलज कहीये, तत्वरमण मनभायो ॥ प्रभु० ४ ॥ बीकानेर नगर अति सुन्दर, सङ्घ सकल सुखदायो। सुद्ध-मती जिन धर्म आराधक, भगति करै मुनिरायो ॥ प्र० ५ ॥ उगणीसै चालीशै बरशै, आसुसुद वरदायो। ज्ञान विजय कारक सब जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥ प्रभु० ६ ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें, ज्ञान अधिक जशगायो। तत्वदीपक मोहन मुनिभावै, ज्ञानतणो गुणगायो ॥ प्र० ७ ॥ इति कलश पूजा।

॥ अथ पांचज्ञान आरती ॥

जय जग सुखकारी, वारी जय शम पद धारी; आरती करूं सहु सारी। जय०। अष्टाविंशति भेद करीनें, मति ज्ञान राजै। मति०। ध्यावत पूजत भविजन केरा, भव सङ्कट भाजे ॥ जय० १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा बिंशति, प्रव-चन पति दाखै। प्र०। श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर, स्व मुखथी भाखै ॥ जय० २ ॥ रूपी द्रव्य विषयि मर्यादा; करि अवधि सोहै। क०। भेद षटक् संख्याति तीवा, भविजन

मनमोहे ॥ जय. ३ ॥ तुर्य ज्ञान मन पर्यव कहिये, भेद युगल लहिये । भेद. । ऋजुमति विपुलमति सरदहिये, न्यूनाधिक गहिये ॥ जय. ४ ॥ लोका लोकांतर्गत वस्तु, गुण पर्यव भासी । गु. । केवल एक सहाय अनन्ते, भए निर्वृतिवासी ॥ जय. ५ ॥ पंचज्ञानकी आरती करतां, भव आरती छीजे । भ. । जिम वरदत्त कुमर गुण मञ्जरी, तिम भक्ती कीजे ॥ जय. ६ ॥ बृहत् भट्टारक खरतर पति जिन, हंससूरी राया । जि. । तत् पद कज मधुकर कंचन निधि, आनन्द वरताया ॥ जय. ७ ॥ इति

॥ अथ मङ्गल दीवो ॥

दीवोरे दीवो मङ्गल दीवो, भूवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दी. १ ॥ चन्द्र सूरज प्रभु तुम सुखकेरा, लूंछण करता दे नित्यफेरा ॥ दी. २ ॥ जिन तुझ आगल सुरनी अमरी, मङ्गल दीप करी दिये भमरी ॥ दी. ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां दुरति दझावे ॥ दी. ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमाञ्जली चन्दन, धूप दीप फल नैवेद्य वन्दन दी. ५ ॥ इणपरे अष्ट प्रकारी कीजे, पूजा स्नात्र महोत्सव पभणीजे ॥ दी. ६ ॥ इति

॥ अथ मङ्गल आरती ॥

भविजन मङ्गल आरती करिये, जनम जनमकी आरति हरिये ॥ भ० १ ॥ आरती प्रथम जिनेसरजीकी, दारुण विघन निवारण नीकी । भ० । दूजैपद श्रीसिद्ध दिणन्दा, आरती करत मिटत भवफन्दा ॥ भ० २ ॥ तीजे पद श्री सूरि महन्ता, मारग शुद्ध प्रकाश करन्ता । भ० । चौथे पद पाठक गुणवन्ता, आरती करत हरत भवचिन्ता ॥ भ० ३ ॥ पंचमी आरती साधुपद केरी, कुगति निवारण शुभगति शेरी भ० । शिव सुखकारक श्री जिनवांणी, छट्ठी आरती ज्ञान वखांनी ॥ भ० ४ ॥ सातमी आरती आनन्दकारी, समकित ब्रत गृहि प्रतिमा धारी । भ० । यह विध मङ्गल आरती गावै, शुद्ध क्षमा कल्याण ते पावै ॥ भ० ५ ॥ इति

॥ इति पांचज्ञान पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ ❀ अथ बिंशति स्थानक पूजा ❀ ॥

॥ दोहा ॥

सुख सम्पति दायक सदा, जगनायक जिनचन्द। बिघन हरण मङ्गल करण, नमो नाजि नृप नन्द १ ॥ लोकालोक प्रकाशिका, जिनवाणी चितधार बिंशति पद पूजन तणो, कहिस्युं बिधि बिस-तार ॥ २ ॥ जिनवर अङ्गे जाषिया, तप जप बहु परकार। बिंशति पद तप सारिसो, अवरण कोई उदार ॥ ३ ॥ दान शील तप जप क्रिया, जाव बिना फल हीन। जैसे जोजन लवण विन नही सरस गुणपीन ॥ ४ ॥ जे जवियण सेवै सदा, जावे थानक वीश। ते तीर्थंकर पदवि लहै, वन्दै सुर नर ईश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

श्री अरिहन्तपद १ सिद्धपद २ ध्यावो, प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो। स्थविर पंचमपद ५ पुन रुवझाया ६। तपसी ७ नाण ८, दंसण ९ मनभाया ॥ १ ॥ (उल्लालो मनभाय विनया १० वश्यका ११ मलशील १२ किरीया १३ जानियै, तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेयावच्च १६ समाधि १७ वखानीयै। हितकर अपूरव नाण संग्रह १८ धरौ मन सुजगीसए, श्रुतभक्ति १९ फुनि तीरथ प्रभावना २० एह थानक वीसए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

ए थानक वीस २० जग जयकारा, जपतां लहियै जिन-पद सारा। करम निकन्दै विसवाविसै, भाष्या जग तारक जग दीसै ॥ ३ ॥ (उल्लालो) जगदीश प्रथम जिणेन्द जग गुरु चरम जिनवरजी मुदा, भव तीसरै पद सकल सेवा लही जिनपति संपदा। बावीस जिनवर सकल सुखकर इंद्र जसु गुण गाइयै, इक दोय त्रिण सहुपद जपीने तीर्थपति पद पाइयै ॥ ४ ॥

॥ इति बिंशतिस्थानक पूजा विधि सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ प्रथमपदे जिनेन्द्र पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अरिहन्तादिकपद सदा, भजीयै तपकरी सुद्ध अति निरमल सुभ योगता, करिकै तसु गुण सुद्ध १ ॥ त्रिमल पीठ त्रिक तडुपरै, ठवीयै जिनवर वीस २०। पूजन उपग्रह मेलि करि, अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक एक ए पदतणी, द्रव्य पूजा परकार। पञ्च ५ अष्ट ८ विध जानीयै, सतरे १७ इगवीस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि, विमल जलै भरि पूर। पूजो भवि-यण पद सहू, होय सकल दुखदूर ॥ ४ ॥ सोहै सहु परमेष्टिसें, जिनवर पद अभिराम। वेद ४ निक्षेपै समरीयैं, वधतै सुभ परिणाम ॥ ५ ॥

॥ राग देसाख ॥

॥ पूर्वमुख सावनं करि दसन (एचाल) ॥

सकल जगनायकं परम पद दायकं, लायकं जिनपदं विमलभानं। (अईयां वि०) चतुरधिक तीस ३४ अतिशय अमल बार १२ गुण, वचन पणतीस ३५ गुणमणि निधानं ॥

१ ॥ (अईयोम०) सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा, भमर सुर असुर नर हृदयहारी । अईयो । एह जिनवर तणी आण पूरण सदा, दाम जिम जगत जन शिरसि धारी ॥ अईयो २ ॥ जिनप पद दरस पारस फरसते हुवै, प्रगट निजरूप परिणति विभासं । तजी बहिरात्म गिरी सारता भविलहै, अनुपकं आत्म कांचन प्रकाशं ॥ अईयो ३ ॥ हुवई जिनराज पद जाप रवि किरणते, तुरत बहु दुरित भर तिमिर नासं । घन चिदानन्द वरकन्द घन भविलहै, तीर्थंकर चरण कमला विलासं ॥ अईयो ४ ॥ वर विबुध मणिलही काच लघु सकलकौं, ग्रहण करिवा कवण कर पसारे । तिमलही जिन चरण सरण शुभ योगते, अवर सुर सरण कुण ऋदय धारे ॥ अईयो ५ ॥ प्रभुतणे पंचकल्याण केरै दिनें, प्रगट त्रिहुं लोकमें हुइ ऊजेरौ । भविक देवपाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियौ गोत्र जिनराज केरौ ॥ अईयो ६ ॥ जेह त्रिणकाल नितनमे जिन हरषसुं, तेह भवजल तिरै जनम दीजै । अधिक भव यदि करै तदपि निश्चय करी, सप्त बलि अष्ट भव करीय सीझै ॥ अईयो ७ ॥

॥ काव्यं ॥

णमोणन्त विन्नाण सद्दंसणाणं, सयाणन्दिया सेस जंतु गणाणं । भंवां भोज विच्छे यणे वारणाणं, णमो बोहियाणं

चराणं जिणाणं ॥ अर्हयो ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्योनमः ॥
इति प्रथमपदे श्री जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ (२) सिद्धपद गुणवर्णन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

तनु त्रिभागके घटनतें, घन अवगाहन जास।
विमलनाण दंसण कीयो, लोकालोक प्रकास ॥ १
अविनाशी अमृत अचल, पदबासो अविकार।
अगम अगोचर अजर अज, नमो सिद्ध जय-
कार ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ कुन्दकिरण शशी ऊजलोरे देवा (एचाल) ॥

अनुभव परमानन्द सुं रे वाला, परमातम पद वन्दो रे. करम निकन्दो वन्दिने रे वाला, लहि जिनपद चिरनन्दो रे ॥ १ ॥ गगन पए सन्तर वली रे वाला, समयान्तर अण फरसी रे, वाला। द्रव्य सगुण परजायना रे वाला, एक समय विद दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय ऋजुगति करी रे वाला, भयेय परमपद रामी रे। भांगै सादी अनन्त ए रे वाला, निरुपा-धिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करम मल परिहरी रे

वाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे। विमल चिदानन्द घन थया रे वाला, वर इगतीश गुण धारी रे ॥ ४ ॥ उतपन्नता १ वलि विगमता रे वाला २, ध्रुवता ३ त्रिपदि सङ्ग रे। प्रभुमे अनन्त चतुकता रे वाला, सोहै सम क्रम भङ्गे रे ॥ ५ पन्नर भेद ए सिद्धथया रे वाला, सहजानन्द स्वरूपी रे। परम ज्योतिमे परिणम्या रे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पिण प्रणमे मुदा रे वाला, एहने दीक्षा अवसरै रे। तिण प्रभुपद गुण मालका रे वाला, कण्ठै धरीयै सुपरै रे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल भवि भगति सुं रे वाला, सिद्ध परम पद भजिने रे। पद श्री जिन हरषै रे लह्यो रे वाला, पर गुण परिणति तजिनेरे ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥

लोगग्ग भाषे परिसण्ठियाणं, वुद्धाण सिद्धाण मणिंदियाणं। निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं, नमो सया मङ्गल धारगाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ इति द्वितीयपदे श्रीसिद्ध पुजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय प्रवचन पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्यं नन्नमो सन्सार । गमो कुमति परिणनमता, दमो करण जयकार ॥ १ ॥ जैसे जलधर वृष्टितें, अखिल फलद विकसाय । तैसें प्रवचन नक्तितें, शुन्न परणित उलसाय ॥ २ ॥

॥ श्रीराग ॥

॥ जिनगुणानं श्रुत अमृतं (एचाल) ॥

प्रवचन ध्यानं सुखकरणं ॥ परिहरिये सह विषय विकारं करीयै प्रवचन आदरणं ॥ प्रवचन० १ ॥ सप्तभङ्गि भूषित ए प्रवचन, स्यादवाद मुद्राभरणं । सप्तनयात्मक गुणमणि आगर, बोधिवीज उतपति करणं ॥ प्रवचन० २ ॥ जैसे अमृत पान करणतें, हुवई सकल विष संहरणं । तैसे प्रवचन अमृत पानें, कुमति हलाहल प्रविशरणं ॥ प्रवचन० ३ ॥ प्रवचनकौ आधेय कहीयै, सकल सङ्घ तसु अधिकरणं । तिण ए सङ्घ चतुरविध प्रवचन, ए पद अखिल कलुषहरणं ॥ प्र० ४

यदि भविजन तुम ए चाहतुहै, मुगतिरमणि जत बश करणं. करणतीन इककरि तद करीयै, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र· ५ ॥ जिनवरजी शिण ए तीरथनें, प्रणमे मध्य समवसरणं भवजल तारण तरणि समानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ६ ॥ जिम भरतेश्वर सङ्घ भगति करी, लहीयो पुण्य फला-चरणं । चक्रीपद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करीय क्रम निरजरणं ॥ प्र० ७ ॥ नरपति सम्भव जिन हरपैं करि, आराधी प्रवचन चरणं । करम निकन्दि थया जगदीशर, जिन परमाउर आभरणं ॥ प्र० ८ ॥

॥ काव्यं ॥

अनन्त संबुद्ध गुणाकरस्स, दुक्खन्धया रुग्ग दिवाकरस्स अनन्त जीवान दयागिहस्स, नमो नमो सङ्घ चउव्विहस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनाय नमः ॥ ३ ॥ इति तृतीयपदं श्री प्रवचन पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ आचार्यपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पदचतुर्थ नमीयै सदा, सूरीसर महाराज ।
सोहम जम्बू सारिसा, सकल साधु सिरताज ॥ १

सारण वारण चोयणा, पड़ि चोयण करतार ।
प्रवचन कज विकसायवा, सहस किरण अवतार ॥ ४

॥ राग रामगिरी ॥

॥ गात्रलूहै जिनमन रङ्गसुं रे देवा (एचाल) ॥

आचारिज पद ध्याईयै रे वाला, तासविमल गुणगाईयै पाईयै (हांरेवाला) पाईयै, जिनपतिपद जग शिरतिलो रे ॥ अच० १ ॥ जिनशासन उजुवालता रे वाला, सकल जीव प्रतिपालता । पालता (हांरेवाला) पालता, चरण कमल मन मोहता चालता रे ॥ आ० २ ॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुर नर जन मन मोहता । मोहता (हांरेवाला) मोहता, भवीयणनैं पड़ि वोहता रे ॥ आ० ३ ॥ पञ्चाचार विराजिता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता । गाजता (हांरेवाला) गाजता, सूरि सकल शिर छाजता रे ॥ आ० ४ ॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु निरसिता निरसिता (हांरेवाला) निरसिता, परमातम पद फरसता रे आ० ५ ॥ धरम धुरण्धरता धरा रे वाला, जग वान्धव जग हितकरा । हितकरा (हांरेवाला) हितकरा, स्वपर समय विद गणधरा रे ॥ आ० ६ ॥ पद श्री जिनहरषै ग्रह्योरे वाला सूरीशर पद तपवह्यो । तपवह्यो (हांरेवाला) तपवह्यो, पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥ आ० ७ ॥

॥ काव्यं ॥

कुवादि केली तरु सिंधुराणं, सूरिसराणं मुनि बन्धुराणं
धीरत्त संताज्जिय मन्दराणं, नमोसया मङ्गल मन्दिराणं ॥ ८
ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्यो नमः) इति चतुर्थपदं ॥

॥ अथ पञ्चम थिवर पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दुविय थविर जिनवर कह्या, द्रब्य भाव परकार
लोकिक लोकोत्तर वली, सुनिये भेद बिचार ॥ १
जनकादिक लौकिक थविर, लोकोत्तर अणगार ।
पञ्चम पदमे जानिये, त्रुतीय थविर अधिकार ॥ २

॥ राग सारङ्ग ॥

नित नमीये थविर मुनिसरा, पंचमहाव्रत धारक वारक कुमति जगत जन हितकरा ॥ १ नित० ॥ संयम योगै सीदत बालक, ग्लानादिक सहु मुनिवरा । एहने उचित सहाय दीय नतें, वारै एहना दुखभरा ॥ २ नित० ॥ पर्याय वय श्रुति त्रिविध ए थविरा, वीसरु साठ समोपरा । वयधर सम वाया दिक पाठक, एह थविर गुण आगरा ॥ ३ नित० ॥ तीजे

अङ्ग कह्या दश थविरा, रतन त्रयीना गुणधरा । ते इन निर-मल भावै ग्रहिवा, भविक सरोज दिवाकरा ॥ ४ नित० ॥ क्षीर जलधि सम अतिह गम्भीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा शरणागत तारणता धारा, ज्ञान बिमल जल सागरा ॥ ५ नित० ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान करणतें, द्रव्यादिक ज्ञाता-वरा, तेह स्वरुप रमण थाविरा कह्या, नहिय धवल केशांकुरा ६ नित० ॥ एह थविर पद सेवी भगते, पदमोत्तर वसुधेसरा पद श्रीजिन हरषे तिन लहीयो, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ ७ नित० ॥ (कलश) सम्मत्त संयम पतित भविजन अहित थिर करता भला । अवगुण अदूषित गुण बिभूषित चन्द्र किरण समुज्जला ॥ णष्ठाधिका दश सहस शीलाङ्गरथ रुचिर धाराधरा । भवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थविर मुनि सरा ॥ ८ ॥ (ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः) इति पंचमपदं ॥

॥ अथ षष्ट पदे श्री उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रवर नाण दरशन चरण, धारक यतिश्रम सार ।
समिति पञ्च त्रिणगुप्तिधर, निरुपम धीरज धार ॥ १

॥ राग भैरवि ॥

॥ पंचवरणी अङ्गीरची कुसुमजाती (एचाल) ॥

भावधरी उवझाया वंदो विजयकारी, श्रीउवझाय परम पद वन्दी। लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ भाव० १ ॥ कुमति मदतरु भञ्जन सिन्दुर, सुमति कन्द घन अवतारी। अङ्ग दुवालस भणय भणावै, शिष्यभणी चित हितधारी ॥ भाव० २ ॥ सकल सूत्र उपदेश दीयणते, वाचक अति विमलाचारी। भवतीजै अमृत सुखपामे, सुर असुरेन्द्र मनोहारी ॥ भाव० ३ ॥ हय,गज बृष पंचानन सरिषा, करमकंद वर नर वारी। वासुदेव वासव नृप दिनकर, विधु भण्डारी तुलाधारी ॥ भाव० ४ ॥ जम्बू सीतानदी कांचनगिरि, चरम जलधि ओपम भारी। ए ओपमा बहु श्रुतनी जाणो, उत्तराध्ययन कहीसारी ॥ भाव० ५ ॥ अमल पंचविंशति गुणमणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी। शंशय तिमिर हरण बासर मणि, पाप ताप आतप वारी ॥ भाव० ६ ॥ प्रवर शङ्ख पय भरीयो सोहै, तिम ए ज्ञान चरण चारी। महेंद्रपाल पाठक पद सेवी, लहीयो जिनपद विजितारी ॥ भाव० ७ ॥

॥ काव्यं ॥

सव्वोहि बीजंकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं। कुवोहिदन्ती हरिणेसराणं; विग्घोघ सन्ताव पयो-

हराणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ इति षष्ठपदे श्री उपाध्याय पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधु पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जाणे जिणवाणी सरस, स्यादवाद गुणवन्त ।
मुनिकहीयै शिव पंथनें, साधै साधु कहन्त ॥ १
समता रस जल झीलता, विशदानन्द सुरूप ।
तिन पांम्यो पद सप्तमें, नमो नमो मुनिरूप ॥ २

॥ राग गुण्डमिश्रित भीम म० ॥

॥ मेघ वरसे भरी पुष्प वादल करी एचाल ॥

भक्तिधरि सातमें पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इन्द्रिय विकारा । गुण सत्तावीस भूषण करी शोभिता, शोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥ भक्ति० १ ॥ चरणसत्तरि परम करणसत्तरि धरा, शिवकरण नाण किरिया प्रधाना । प्रतिदिनें दोष आहारणा वरजिता, सप्तचालीश यतिप्रम

निधाना ॥ भ० २ ॥ मदन मद भञ्जता कुमति जन गञ्जता, भक्तजन रञ्जता क्षांति धरीया। सुमति धरिया सदा चरण परीयाजना, तारीया ज्ञान गम्भीर दरीया ॥ भ० ३ ॥ त्रिण मणी सम गिणें चतुरविध धरमना, परम उपदेश दायक उदारा। बहिरभ्यन्तर भिदा बारविध अति कठिन, तप तपै सकल जीउ अभयकारा ॥ भ० ४ ॥ बलि अठावीस मन हरण गुण लवधि निधि, सातमे छठ्ठ गुणठाण वसीया। सप्त भयवारका प्रवर जिन आगन्या, धारका स्वगुण परिणमन रसीया ॥ भ० ५ ॥ पंचपरमाद कल्लोलता कुलमहा, पार सन्सार सागर जिहाजा। विविध नववाड़ि युत शीलव्रतके धरा, मधुर निजवाणि रञ्जित सभाजा ॥ भ० ६ ॥ कोड़ि नव सहस थुणीये महा मुनिवरा, वीरभद्र जिम करीय साधु सेवा। परम पद जिन हरष सुग्रह्यौ तसु तणा, चरण कज युग नमं सकल देवा ॥ ॥ भ० ७ ॥

॥ काव्यं ॥

सन्तज्जिया शेष परिसहाणं, निस्सेस जीवान दया गिहाणं। सन्नाण पज्जाय तरूवणाणं णमो णमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व्व साधुभ्यो नमः ॥ ७ ॥ इति सप्तमपदे श्री साधुपद पूजा।

॥ अथ अष्टम ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विमलनाण खर किरण किय, लोका लोक प्रकाश ।
जीतलई निजतेजसे, जिन अनंत रविभास ॥ १
सहु संशय तम अपहरै, जय जय नाणदिनन्द ।
नाण चरण समरण थकी, विलय होय दुखदंद ॥ २

॥ राग घाटो ॥

॥ मेरो मन वसकर लीनो (एचाल) ॥

भावै ज्ञान वन्दन करीयै, शिवसुख तरुकन्द । भावै० । जिनचन्द पद गुण धरियै, वरीये परम आनन्द ॥ भा० १ ॥ मती नाण श्रुत २ पुनरवधि ३, मनपर्यव ४ जाण । लोका लोक भाव प्रकाशी, वर केवल नाण ५ ॥ भा० २ ॥ पंच ए इकावन ५१ भेदै, कह्यो जिनवर भान । जगजीव जड़ता छेदै, ज्ञानामृत रसपान ॥ भा० ३ ॥ विनज्ञान कीधी किरिया, होय तसुफल ध्वंस । भक्षाभक्ष प्रगट ए करियै, जिम पय जल हंस ॥ भा० ४ ॥ वरनाण सहितसु किरिया, करी फल दातार । डुबो ज्ञान चरण रसीला, लहो भव जल पार ॥

भा० ५ ॥ ज्ञानानन्द अमृत पीधो, भरतेशर महाराय । भा०
तिणसें अमृत पद लीधो, सुरपति गुणगाय ॥ भाव० ६ ॥
सेवीज्ञान जयत नरशै, भये जिन महाराज । भा० । सोहै
ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सहुपरि सिरताज ॥ भा० ७ ॥

॥ काव्यं ॥

छ द्दव्व पज्जाय गुणाकरस्स, सयापयासी करणोद्धरस्स ।
मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥
८ ॥ ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ इति अष्टमपदे श्री
ज्ञान पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी दर्शण पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दर्शण आश्रय धर्म्मनो, एहना षट् उपमान ।
दरशण विन नहि चरणविद, उत्तराध्ययने जान ॥ १
जिन दरशण फरस्यो सको, अंतर महुरति मान ।
अरधपुग्गल परियटरहै, तसु संसार वितान ॥ २

॥ राग कामोद ॥

॥ चम्पक केतकी मालती ए, अइयो मालती ए (एचाल) ॥

जिन दरशण मुझ मनवस्यो ए । अइयो मनवस्यो ए उपजत परम आनन्द । जिन दरशण दरशण दीयै, विमल नाण तरुकन्द ॥ १ ॥ दरशण मोहरिपु जीतीया ए । अइयो वर दरशण उलसन्त । दरशण घट परगट हुवा, भवीयण भव न भमन्त ॥ २ ॥ जिनवरदेव सुगुरु व्रती ए, केवलि कथित जिनधर्म । तीनतत्व परिणतिरमें, ते दरशण करै शर्म ३ ॥ जिनप्रभु वचनो परि सदा ए, थिर शर दहण धरन्त । इन लक्षणते जानीये, समकितवन्त महन्त ॥ ४ ॥ इग, दुग, ति, चौ, शर, दश, विहा ए, सतसट्ठि ६७ भेद विचार । वलि परतीति समकित भण्यो, द्रव्य भाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्यें जिन दरशण कह्यो ए, भावे समकित सार । द्रव्यत दरशण भावतो, दरशण कारणधार ॥ ६ ॥ द्रव्य दरश यदि गतबलियै, तदपि उत्तर हितकार । शर्य्यम्भव जिन दरशणे, पायो दरशण सार ॥ ७ ॥ दरशण विन किरिया हता ए, अङ्कविना जिम विन्दु । वलि हणीयो विन चन्द्रिका, वासर में जिम इन्दु ॥ ८ ॥ हरि विक्रम नृप सेवतो ए, दरशण पद अभिराम । पद श्रीजिन हरषै धर्‍यो ए, वधतै शुभ परिणाम ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥

अनन्त विन्नास सुकारणस्स, अनन्त संसार विदारणस्स अनन्त कम्मावली धन्सनस्स, नमो नमो निम्मल दन्शणस्स १० ॥ ॐ ह्रीं श्री दर्शणाय नमः ॥ ९ ॥ इति नवम पदे श्री दर्शण पूजा ॥ ९ ॥

—o:※:o—

॥ अथ (१०) बिनयपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

बिनय भुवन रञ्जन करै, विनयै जस बिस्तार।
बिनय जिउ भूषित करै, विनयै जय जय कार ॥ १
विनय मूल जिनधर्म्मनो, विनय ज्ञान तरु कंद।
विनय सकल गुण सेहरो, जय जय विनय सनंद ॥ २

॥ राग सामेरी ॥

॥ पूजोरी माई जिनवर (एचाल) ॥

ध्यावोरी माई विनय दशमपद ध्यावै, पंच विध, दश विध, तेरस विध। बावन भेद गणेशै। ध्या०। बासठ भेद

कह्या आगममे, विनयतणा सुविसेसै ॥ ध्या० १ ॥ तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ सङ्घ ५ । किरिया ६ धम ७ वरनांणा ८ । ध्या० । नांणी ९ आचारिज १० मुनिथविरा ११ पाठक १२ गणि १३ गुणजाणा ॥ ध्या० २ ॥ ए अरिहादिक तेरसपदनो, विनयकरै जेभावै । ध्या० । ते तीर्थंकरपद अनुभविने, अमृत पद सुखपावै ॥ ध्या० ३ ॥ जिम कांचनमें मृदुगुण लाभै, नहीय कालिमा पावै । ध्या० । तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावै ॥ ध्या० ४ ॥ तिम विनविनयी में छै मृदुतागुण, कुमति कठिनता नासै । ध्या० । कृष्णादिक लेश्यानी मलीनता, जायै विनय गुण भाषै ॥ ध्या० ५ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देव वन्दन निरधारो । ध्या० । गुरु वन्दन विधि च्यारसै बाणुं, भेदकरी उर धारो ॥ ध्या० ६ ॥ तीर्थंकरादिकनौ मनरङ्गै, विनय चरण शुभ ध्यायौ । धननामा भवि नमि जिन हरषै, तीर्थंकर पद पायो ॥ ध्या० ७ ॥

॥ काव्यं ॥

आनंदीया शेष जगज्जनस्स, कुंदिंदु पादा मलता चनस्स सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स, नमो नमो श्रीविनयालयस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री विनयाय नमः ॥ १० ॥ इति दशमपदे श्री विनय पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ (११) चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इग्यारम पद नित नमुं, देश सरव चारित्र ।
पङ्क मलिनता दूर करि, चेतन करै पवित्र ॥ १
एह चरण सेवन करै, रङ्क थको सुर राय ।
तीन जगतपति पद दीयै, जसु सुर नर गुणगाय ॥ २

॥ राग सारङ्ग ॥

॥ बावना चन्दन घसि कुमकुमा (एचाल) ॥

चरण शरण मुझ मन हर्‍यो, सुख करण हरण घन पाप ए । हांहो रे वाला । एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरुण तर ताप ए ॥ हां० १ ॥ आठ कषाय निवारतां, देश विरति प्रगट हुवै खास ए । बार कषाय निवारीया, सम विरति लहे गुण वास ए ॥ हां० २ ॥ इगवासर सेव्यो थको, शुध सरव सम्वर चारित्र ए । परमानन्द घन पददीये, सुरलोक जनित सुख चित्र ए ॥ हां० ३ ॥ भव भय तरुगण छेदिवा, ए सज्ञम निशित कुठार ए । ज्ञान परम्पर करण छै, अमृत पदनो हित कार ए ॥ हां० ४ ॥ चरण अनन्तर करण छै, निरवाण तणो

निरधार ए । सरव विरति सुद्ध चरण से, पामे अरिहन्त पद सार ए ॥ हां० ५ ॥ वरस चरण परजाय में, अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए । सतरभेद चारित्रना, कहीया जिन आगम जोय ए ॥ हां० ६ ॥ देशथी सम सञ्जम विषै, उज्जलता अनन्त गुण थाय ए । अरुण देव सेवी चरणनें, भये जगगुरु जिन महाराय ए ॥ हांहां रे वाला ७ ॥

॥ काव्यं ॥

कम्मोघ कन्तार दवानलस्स, महोदयानन्द लयाजलस्स विन्नाण पङ्करुह काननस्स, नमो चरित्तस्स गणापणस्स ॥ ८
ॐ ह्रीं श्री चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ इति एकादश पदे श्री चारित्र पद पूजा ॥ ११ ॥

———※※※———

॥ अथ (१२) ब्रम्हचर्य पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार ।
ब्रम्हचर्य इणसम कह्यो, कामित फल दातार ॥ १
जिम जोतिषीयां रजनि कर, सुरगणमें सुरराय ।
तिम सहुव्रत शिरसेहरो, वृम्हचारज कहिवाय ॥ २

॥ राग ख्याल ॥

॥ भला प्रभुगुण वालाहो (एचालमें) ॥

भव भय हरणा, शिवसुख करणा, सदा भजो ब्रम्हचारा (मेंवारी जाउं) सदा भजोहो । भव० । शील विबुध तरु पालन करिवा, कहि जिनवर नववाराहो । दिव्योदारिक करण करावन, अनुमति विषय प्रकाराहो ॥ भ० १ ॥ त्रिकरण जोगै ए परिहरीयै, भ वीर्य भेद अठाराहो । भ० । कनक कोड़िनो दानदीयै नित, कनक चैत्य करताराहो ॥ भ० २ ॥ एहथी ब्रम्हचारज धारकनो, फल अगनित अवधाराहो । भ० सहस चौरासी श्रवण दान फल, ब्रम्हव्रत फल समसाराहो ॥ भ० ३ ॥ विजय सेठ विजया सेठानी, उभय पक्ष्य ब्रम्हधारा हो । भ० । भये सुदर्शण सेठ शीलसं, सुगति वधू भरतारा हो ॥ भ० ४ ॥ सहस अठार शीलाङ्ग रथधारा, धारिकरै निसतारा हो । भ० । सिंहादिक वसु भय तरु भञ्जन, कुञ्जर मद मतवाराहो ॥ भ० ५ ॥ कलहकारि नारद ऋषि सरिपे, तऱ्या भव जलधि अपाराहो । भ० । पच्चक्खाण विरति नहि एहमे, ए ब्रम्हव्रत उपगारा हो ॥ भ० ६ ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर, धरिय भगति हितकाराहो । भ० । ब्रम्हचारज व्रत धर नरवरकं, प्रणमे चरण उदारा हो ॥ भ० ७ ॥ दशम अङ्ग भणियो नरवर्मा, नरपति गुण आधारो हो । भव० ।

ब्रम्हचारिज व्रत पालि लह्यांपद, जिन हरषै जयकारा हो ॥ भव भय हरणा० ८ ॥

॥ काव्यं ॥

सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुनिम्मलानन्त गुणालयस्स। सच्चव्वयाभूषण भूषणस्स, नमोहि शीलस्स अदूषणस्स ॥ ८
ॐ ह्रीं श्रीं ब्रम्हचर्याय नमः ॥ १२ ॥ इति द्वादश पदं श्री ब्रम्हचर्य पूजा ॥ १२ ॥

———:※०※:———

॥ अथ (१३) किरिया पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेतुहै, प्रवर क्रिया गुणखाण। जिन शासनकी स्थिती रही, किरिया रूपै जाण ॥ १ ॥ भुवन मांहि किरिया सही, सकल सुद्ध विवहार। प्रवर नाण दरशण तणो, शुध किरिया शिणगार ॥ २ ॥

॥ राग मालवी गौड़ी ॥

॥ सव भरातिमथन मुदार धूपं (एचालमें) ॥

शुभध्यान किरिया हृदय धरिने, भ्रम सकल उर धार रे. आर्त्त रोद्रनी हेतु किरिया, अशुभ पनवीश बार रे ॥ शु० १ ज्ञानव्रत अशस्त्र भटहै, क्रिया शस्त्र वतंस रे । सुभट नाणी क्रिया शस्त्रे, करय क्रम अरिध्वंस रे ॥ शु० २ ॥ ज्ञान सेती वदे शिव यदि, तेरमे गुण ठाण रे । एकनाणं तद जिनेशर, किमुन लहै निरवाण रे ॥ शु० ३ ॥ जिनप शैलेशी करण कारि, चवदमे गुण ठाण रे । सरबसम्बर चरण करणें, लहै पद निरवाण रे ॥ शु० ४ ॥ ए अनन्तर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भांणि रे । सरब सम्बर चरण किरिया, न शिव इन विनु जाणि रे ॥ शु० ५ ॥ एकनाणे इक क्रियामे, न शिव वितरण शक्ति रे । कहै जिनवर उभय योगे, लहै भविजन मुक्ति रे ॥ शु० ६ ॥ गरल मिश्रित सरस भोजन, अशुभ परिणाति धार रे । अमृत संयुक्त तेह भोजन, रुचिर परिणाति कार रे ॥ शु० ७ ॥ ज्ञान सहित तेम किरिया, करिकरै निस-तार रे । ज्ञानविन किरिया न दीपे, मनोमत फल सार रे ॥ शु० ८ ॥ ज्ञान परिणाति रमी किरिया, तेह किरिया सार रे । भयो हरिवाहन जिनेशर, सुद्ध किरिया धार रे ॥ शु० ९ ॥

॥ काव्यं ॥

विशुद्ध सद्धाण विभूषणस्स, सुलद्धि सम्पत्ति सुपोषणस्स. नमो सदानन्त गुणप्पदस्स, नमो नमो सुद्ध क्रिया पदस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री क्रियायै नमः ॥ १३ ॥ इति त्रयोदश पदे श्री क्रियापद पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ (१४) तपपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

समता रस युत तप रुचिर, जणियो जिन जग-ज्ञांन। शिव सुर सुख चन्दन फलद, नन्दन विपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन, करण विमल तप जान। विपिन धूमकेतन समो, जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥

॥ राग कल्याण ॥

॥ तेरी पूजावनी है (एचाल) ॥

मेरीलगी लगन तप चरणें, सकल कुशलमें प्रथम कुशलए,

दुरित निकाचित हरणें ॥ मेरी० १ ॥ जैसे चक्रवाककी अरुणे, चकोरकी हिमकर किरणे । जैसे गणधरकी जिनचरणे चातककी जलधरणे ॥ मे० २ ॥ जिनवर पिण तद्भव शिव जाणे, त्रिण चउ नाण सुकरणे । तदपि सुकोमल करण चरणने, ठवय कठिन तप करणे ॥ मे० ३ ॥ कपट सहित तप चरण धरणतें, वांछित फल नवि तरणे । नित ए दम्भ रहित तपपदके, सुरपति गण गुण वरणे ॥ मे० ४ ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन, पूरव भव तप शरणे । रहीया तदपि कपट नवि छंड्यो, भये स्त्री गोत्रा चरणे ॥ मे० ५ ॥ दृढ़ प्रहारि पाण्डव घन करमी, छंड्या करमा वरणें । तपसें सो लभहि त्रिभुवनमे, केवल कमला भरणे ॥ मे० ६ ॥ लाख इग्यारह असी हजारा, पंचसय शर दिन खिरणे । मास खमण करि नन्दन मुनिवर, पांम्यो फल शिव धरणे ॥ मे० ७ ॥ तप करीयो गुणरयण सम्बच्छर, खन्धक समता दरणे । चवद सहस मुनिमे कह्यो अधिको, धन्नो तप आचरणे ॥ मे० ८ ॥ बाहिर भ्यन्तर भेदै ए तप, बारभेद अधिकरणे । वसिने कनककेतु पांम्योपद, जिन हरषै भवतरणे ॥ मेरी० ९ ॥

॥ काव्यं ॥

लब्धी सरोजा वलिता वणस्स, सरूव संलग्ग सुपावणस्स ।

अमङ्गला नोकुह दुदवस्स, नमो नमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री तपसे नमः । इति श्री तपपूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ (१५) गौतम गणधर पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरसे, पद सेवो सुप्रसन्न । वलि सहु जिन गणधर नमो, चवदे सै बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वस करै, दान हरै दुरितारि। मन वंछित सहु सुख दीयै, दान धरम हितकारी ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ में तेरी प्रीति पीछानीहो प्रभु में (एचाल) ॥

पनरम पद गुणगानाहो भवी, पनरम पद गुणगानाहो. आं०। भावधरी करीयै मनरङ्गै, परम सुपात्रै दानाहो भवी ॥ पनर० १ ॥ पात्र कह्या द्रव्यभाव दुभेदै, द्रव्य लच्छण ए जाना हो भवी । सरवोत्तम उत्तम दुवै भाजन, रतन कनक

रूपाना हो भवी ॥ पनर० २ ॥ मध्यम पात्र कहीजै एहवा, ताम्रधातु निपजाना हो भवी । पात्र लोहादिक अपर जातिना, तेह जघन्य कहाना हो भवी ॥ पनर० ३ ॥ भाव पात्रनो लच्छन कहीयै, सुनीयै सुगुण सयाना हो भवी। पंचम चरण धरै वलि धरतै, क्षीण मोह गुणठाना हो भवी पनर० ४ ॥ रतन पात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्या जिन भाना हो भवी । प्रवर नाण किरिया धर मुनिवर, लाभा लाभ समाना हो भवी ॥ पनर० ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहीया, भवजल तारण यांना हो भवी । सुधमन द्वादशव्रत दरशन धर, तारपात्र सम जांना हो भवी ॥ पनर० ६ ॥ सुध समकित धर श्रेणिक परसुख, रह्या अविरत गुनठाना हो भवी । ताम्रपात्र सम एहने कहीयै, भावी गुण मणि खाना हो भवी ॥ पनर० ७ ॥ अपर सकल जन मिथ्यादृष्टि लोहादि पात्र गिनाना हो भवी । जिन शासन रङ्गै रङ्गाना, वाचंयम सुप्रमाना हो भवी ॥ पनर० ८ ॥ एहने दान दीयै शिव लहीयै, एह सुपात्र पहिचाना हो भवी । पंचदान दश-दान निकरमै, अभय सुपात्र महिराना हो भवी ॥ पन० ९ ॥ नर वाहन सुभपात्र दानते, भये जिन हरष निधाना हो भवी सालिभद्र वलि सुरसुख लहीयो, सुर नर करय वखाना हो भवी ॥ पनर० १० ॥

॥ काव्यं ॥

अनन्त विन्नाण विभाकरस्स, दुवालसङ्गी कमला करस्स,
सु लद्धवासा जरगांयमस्स, नमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११
ॐ ह्रीं श्री गौतमाय नमः ॥ १५ ॥ इति पंछदश पदे सुपात्र दानाधिकारे श्री गौतम पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ (१६) वेयावच्च पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

**सोलम पदमे जानीयै, वेयावञ्च विधान ।
अखिल विमल गुण मणितणो, सोहै प्रवर निधान १ ॥ जिन, सूरी, पाठक, मुनी ; बालक, वृद्ध, गिलांन । तपसि, चैत्य, सङ्घनो, करो ; वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥**

॥ राग ॥

॥ वालो म्हांरो कब मिलसी मन मेलू (एचाल) ॥

सेवो भाई सोलम पद सुखकारी, श्रीजिनचन्दु प्रमुख दश पद नो ; करउ वेयावच्च भारी । सेवो० । श्री तीर्थंकर

त्रिभुवन शङ्कर, अवर केवली हारी। मन पर्यव धर अवधि-नाण धर, चउद पूरव श्रुतधारी ॥ सेवो॰ २ ॥ दश पूर्वी उतकृष्ट चरण धर, लब्धिवन्त अणगारी। ए जिन कहीये इन बन्दनतें, भवि हुवै जिन अवतारी ॥ से॰ ३ ॥ जिन मन्दिर बिम्ब करण भरावै, पूजकरै मनुहारी। बेयावच्च कही ए जिनकी, करीये भवजल तारी ॥ से॰ ४ ॥ आचारज पर-मुख नवपदको, बेयावच्च विजितारी। भगतिपूर्व वस्त्रौषध अन्नजल, देवै गुण विस्तारी ॥ से॰ ५ ॥ पंचसय मुनिनी करीय बेयावच्च, पूरब भव व्रतचारी। भरत बाहुवल चक्री-पद भुज, वल लह्यो वरी शिवनारी ॥ से॰ ६ ॥ नन्दिसेण सुलसा मुनि जनकी, करीय बेयावच्च सारी। तिणसे सरग-लोकमे दुयकी, भईय प्रशंसा भारी ॥ से॰ ७ ॥ इत्यादिक सोलम पद उधरै, बहुल भव्य क्रमजारी। तिणसे इन बेया-वच्च पदकी, वारी जाउ वार हजारी ॥ से॰ ८ ॥ नृप जीमूत केतु सोलम पद, सेवी भये दुख वारी। श्रीजिनहरष धरी हरिवन्दन, शरणागत निसतारी ॥ से॰ ९ ॥

॥ काव्यं ॥

मणुण्णसव्वा तिसयासयाणं, सुरासुराधीशर वन्दियाणं,
रविन्दुविम्बा मल सग्गुणाणं, दयाभ्रणाणं हि नमो जिनाणं ॥

१० ॥ ॐ ह्रीं श्री जिनेभ्यो नमः ॥ १६ ॥ इति षोड़श पदे श्री वैय.वृत्य पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ (१७) समाधि पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सतर पदमे सेवीयै, सहु सुख करण समाधि । जिन सेवनते भविकनो, गमे व्याधि अरु आधि १ ॥ ब्रम्ह नगर पथि विरचतां, वर पाथेय समान । ए समाधि पद जानीयै, सुरमणि किय हैराण ॥ २ ॥

॥ राग ॥

॥ बाजै तेरा बिछुआ (इस कैरवारी चालमे) ॥

मेरोरे समाधि चरण चित वसीयो । चरण० । तसुगुण समरणि कियो मनुवसीयो । मे० । सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहै । अनुभव रङ्गे अतिह विकसीयो ॥ मे० १ ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मांनुं नित भूवन बिलसीयो । अशन वसन सलिलादिक भक्ती, करय सद्गुनी करुणा रसीयो

मे० २ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुनियै, कह्यो जिन लोका-लोक दरसीयो। सारण वारण चोयण प्रमुखै, पतित सुथिर करै श्रमये हरसीयो ॥ मे० ३ ॥ भाव समाधि दुतीय ए कहीयै, जो करै सो जिन चरण फरसीयो। सकल सत्त्वकौ जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु नसीयो ॥ मे० ४ सुमति पंच तृण गुपति धरै नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसीयो। जगत जन्तु अघत पति हरणकुं, अनुभव अमृत धार वरसीयो ॥ मे० ५ ॥ सुकल अनिल करमेंधन दाहत, जिणसे परगुण परिणति खीसीयो। ए मुनि तरणि तेज सम दीपत अमृत सुखामृत पान तिरसीयो ॥ मे० ६ ॥ इन पदमे ऐसे मुनिजनके, समरणते हुय जग अवतसीयो। ए पद सेवी नृपति पुरन्दर, भये जगपति जिनहरष उल्लसीयो ॥ मे० ७

॥ काव्यं ॥

सम्विदिया पार विकार दारी, अकारणा शेष जनोपगारी। महा भवातङ्क गणार हारी, जयो सदा सुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री चारित्र धारिभ्यो नमः ॥ १७ ॥ इति सप्तदश पदे श्रीसमाधि पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ (१७) अपूर्व श्रुतग्रहण पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा, अष्टादश पदमांहि। इन पद सेवक जनतणा, सहु सङ्कट नय जांहि १ ॥ जैसी कुमति विशुद्धता, घोर तपे करि होय। तत् अनन्त गुणि शुद्धता, सुज्ञानीकी जोय ॥ २ ॥

॥ राग ॥

॥ दिलदार प्यार गवरू, राखुं रे घुंघटदा पटमे (एचाल) ॥

जिनचन्द ज्ञान तेरा, होजितेरे विकट भव भटने (आं० सदपूर्व ज्ञान धरणा, वितरै जिनेन्द्र चरणा; करि सर्व कर्म हरणा ॥ जि० १ ॥ जगमे महोपकारी, भवसिन्धु वारितारी; कुमतान्धता विदारी ॥ जि० २ ॥ सहु भावनो प्रकासी, परम स्वरूप भाषी; समकित सभ्रवासी ॥ जि० ३ ॥ विणुहेतु विश्वबन्धु, गुण रत्न राशि सिन्धु; शमता पीयूष अन्धु ॥ जि० ४ ॥ स्याद्वाद पक्ष गाजै, नय सप्तसै विराजै; एकान्त पक्ष भाजै ॥ जि० ५ ॥ लहि तीर्थ पावतारा, इनसे जिनेन्द्र

सारा ; किया भव्यके उधारा ॥ जि॰ ६ ॥ पद सेवीए नरिंदा भये सागरादि चन्दा ; जिन हर्षके समन्दा ॥ जि॰ ७ ॥

॥ काव्यं ॥

सुद्धक्रिया मण्डल मण्डनस्स, सन्देह सन्दोह विखण्डनस्स । मुत्ती उपादान सुकारणस्स, नमो ही नाणस्स जयो धनस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ इति श्री अपूर्व श्रुत ग्रहण रूपा ज्ञान पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ (१९) श्रुतपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पाप ताप संहरण हरि, चन्दन सम श्रुतधार । तत्व रमण कारण करण, अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ इ गुणवीश पदमे भजउ, जिनवर श्रुतनी भक्ति । इन पद वन्दनसे लहै, अमल नाण युत मुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग ॥

॥ ब्रजवासी कांन तें मोरी गागर ढोरी रे (अपर) आज आयोरे उच्छाह, जीवड़ानाथ जिनन्द आगै (इस चालमें) ॥

भविजन श्रुत भक्ति चरण शरण उर धरीये रे। ए श्रुत भक्ति सुमङ्गल माल, विमल केवल कमला वरमाल ॥ भ० १ ॥ सकल द्रव्य गुणगण परयाय, प्रगट करण ए श्रुत सन भाय। अतुल अनन्त किरण समवाय, धरण तरणि गण सम कहिवाय ॥ भवि० २ ॥ ए श्रुत कुमति कुनति नें सङ्ग, अगणित रमणि तणा करै भङ्ग। अरथै भाख्यो श्री जिनराज, सूत्रै गणधर मुनि सिरताज ॥ भ० ३ ॥ ए श्रुतसागर अगम अपार, अनन्त अमल गुण रयणाधार। भव भय जलनिधि तरण जिहाज, निसुणि मगण भई सकल समाज ॥ भ० ४ ॥ भव कोटी लगि तपकरि जीव, अज्ञानी करै जितनी सदीव। करम निरजरा तितनी होय, ज्ञानीकै इक खिणमें जोय ॥ ५ ॥ एक सहस कोड़ि १०००००००००००, छस्सय कोड़ि ६०००००००००। चतुरतीस कोड़ि ३४००००००००, अक्षर जोड़ि ॥ भ० ६ ॥ अड़सठ लाखरु ६८०००००० सात हजार ७०००। अड़सय ८०० असीय ८० प्रमिति चितधार ॥ (१६०३४६८७८८०) भ० ७ ॥ इतनें वरणसे इक पद होय,

एक श्लोकका गणित ए जोय। इक पदको परिमाण ए जाण, इण पदसे आगम परिमाण ॥ ८ ॥ तीन कोड़ी ३००००००० अरु अड़सठ लाख ६८००००० सहस बयालीस ४२००० ए पद भाख। इतने पदसे अङ्ग इग्यार, केरी गणना भवि चितधार भ० ९ ॥ बारम दृष्टिवादको मान, असंख्यात पदको पहिचान। इणको चउद पूरब इकदेश, इसको पारलह्यो है गणेश ॥ भ० १० ॥ एह दुवालस अङ्ग उदार, एहनो जइयै नित बलीहार। एहनी द्रव्य भाव बहु भक्ति, करीयै धरीयै जिनपद युक्ति ॥ भ० ११ ॥ रत्नचूड़ नृप सुख माधार, जिन श्रुतभक्ति करी हितकार। भये जिन हरष परम पद दाय, जिनके सुर नर पति गुणगाय ॥ भ० १२ ॥

॥ काव्यं ॥

अन्नाणवल्ली वन वारणस्स, सुबोहि बीजांकुर कारणस्स अनन्त संसुद्ध गुणालयस्स. नमो दया मन्दिर सच्छुयस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रुताय नमः ॥ ॥ १९ ॥ इति उनविंशति पदे श्री श्रुतपद पूजा ॥ १९ ॥

॥ अथ (२०) तीर्थ प्रभावन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रावचनी १, अरु धर्मथकी २ ; वादि ३ निमत्ती ४ जाण। तपसी ५, विद्या ६ ; सिद्ध ७, वलि। कवी ८, एह मुनि श्राण ॥ १ ॥ भाव तीर्थ प्रभू कह्या, प्रभाव ए अष्ट। तीर्थ प्रभावन जे करै, ते फल लहै विशिष्ट ॥ २ ॥

॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ तेज तरणि मुखराजै (एचाल) ॥

पर भावन जयकारा। अहो जयकारा। तीरथ पर भावन जयकारा। जिनसें भवसागर जल तरीयै, ते तीरथ गुणधारा ॥ ती० १ ॥ जिनके गणधर तीरथ कहीयै, वलि सङ्घ सङ्घ सुखकारा। एह महा तीरथ पहिचानो, वन्दि लहो भवपारा ॥ ती० २ ॥ अड़सठ लौकिक तीरथ तजि करि, भज लोकोत्तर सारा। द्रव्य भाव दोय भेद लोकोत्तर, थिर जङ्गम भयहारा ॥ ती० ३ ॥ पुण्डरीक परमुख पंच तीरथ, चैत्य पंच परकारा। एह वर तीरथ थावर कहीयै, दीठां दुरित

विदारा ॥ ती० ४ ॥ श्री सीमन्धर प्रमुख बीश जिन, विहर-मान भवतारा। दोय कोड़ि केवलि विचरन्ता, जङ्गम तीर्थ उदारा ॥ ती० ५ ॥ सङ्घ चतुर विध जङ्गम तीरथ, जिन शासन उजीयारा। वर अनन्त गुण भूषण भूषित, जिनकुं नमत जिन सारा ॥ ती० ६ ॥ ए तीरथ पर भावना करीयै, सुभ भावना आधारा। शिवकज जल विंशति तम पदकी, जाउं प्रतिदिन बलिहारा ॥ ती० ७ ॥ ए तीरथ पर भावना करतो, मेरु प्रभु अविकारा। पद जिन हरष लहीने तरीया भव भय जलधि अपारा ॥ तीर० ८ ॥

॥ काव्यं ॥

महा महा नन्द पद प्रदाय, जगत्त्रयाधीश्वर वन्दिताय। जिन श्रुत ज्ञान पयोनदाय, नमोस्तु तीर्थाय शुभं ददाय ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री तीर्थाय नमः ॥ २० ॥ इति विंशति पदं श्री तीर्थ प्रभावन पूजा ॥ २० ॥

॥ अथ विंशति पद स्तुति ॥

॥ राग गरबो ॥

॥ सुनी चतुर सुजान पर नारी सुं प्रीतडो (एचाल) ॥

चित हरष धरी, अनुभव रङ्ग, वीश परम पद वन्दीये. शिव रमणि वरी, केवल सखीय सहाय, करी चिरनन्दीयै । (आंकणी) ए वीश चरण अशरण शरणा, चिर सञ्चित दुरित तिमिर हरणा । नित चित ए पद समरण धरणा ॥ चि॰ १ ॥ ए पद समरण जिन चित धरीया, तरीया तरसै तरै भव दरीया । सदनन्त भविक सहु भय हरीया ॥ चि॰ २ ए पद गुण सागर मनुहारा, वरणन तरणीयै वहुहारा । इन्द्रादिक सुरन लह्यो पारा ॥ चि॰ ३ ॥ ए पद अतिशय महिमा धारा, आश्रित पद कमला भरतारा । जिनचंद्रा नंद घन पद कारा ॥ चि॰ ४ ॥ जिन हरष सुरिन्दकै शिव करणा चन्द्रामल गुण विंशति करणा । हुइज्यो प्रभु अरज ए अवधरणा ॥ चि॰ ५ ॥ इति श्री समस्त विंशति पद स्तुति ॥

॥ अथ कलश ॥

ए वीश थानक भुवन नन्दन अघ निकन्दन जानीयै, विबुधेंद्र चन्द्र नरेन्द्र वन्दित पद जिनेन्द्र वखानीये । ए वीश

पद भव जलधि तारण तरण गुण पहिचानीये, इम जानि भविजन कुशल कारण वीश पद उर आनीये ॥ १ ॥ इह वरस चन्द्र दिनेन्द्र हरिमुख विधि नयन छिति मिति धरु, तिह मास भाद्रव धवल दल तिथि पंचमी रवि वासरु । बङ्गाल जनपद जिह विराजित शिखर तीरथ गिरीवरु, सहु नगर शोभित अजिमगञ्ज पुर दुतिय वालूचर पुरू ॥ २ ॥ खरतर गणेशर विजित सुर गुरु विमल गुण गिरिमा धरा, गुण भवन भविजन नलिन कानन नित विकाशन दिनकरा । मुनिचन्द्र श्री जिनलाभ सूरिन्द सुगुरु महीयल युगवरा, सकलेन्द्र वंद्य जिनेन्द्र शासन मण्डना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसु पट्ट उज्जल शिखरि गणवर उदय गिरी वासर करा, योगीन्द्र वृन्द नरेन्द्र वन्दित चरण पङ्कज गणधरा । आचार पंच छत्तीस गुणधर सकल आगम सागरा, युग प्रवर श्री जिनचन्द्र सूरी गुरु सकल सूरी सरा ॥ ४ ॥ तसु चरण कमलज युगल सेवन अहनिशि मधु करता धरी, वलि सुगुरु पद अरविन्द युगनी कृपा नित चित आदरी । गणधार श्री जिन हरष सूरी हरष धरी घन अघहरी, या वीश पदकी विविध पूजनविधि तणी रचना करी ॥ ५ ॥ इति श्री विंशति स्थानक स्तुति मयः पूजा विधि ।

॥ अथ वीशस्थानकी आरती ॥

॥ राग ॥

॥ जीया चतुर सुजाण नव पदके गुण गायरे (एचाल) ॥

पिया विंशति थान मङ्गल आरती गायरे (आंकनी) सुमति प्रिया कहै चेतन पतिकों, निसुण बचन मन भायरे ॥ पि० १ ॥ यदि निजगुण परणति तुम चहीयै, तिनको एह उपाय रे । पि० । अरिहन्त सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकल समुदाय रे ॥ पि० २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण भव भय हरण विधायरे । पि० । एह आरती दुरति वारती, अनु पम सुर सुखदायरे ॥ पि० ३ ॥ जैसे भगतै करत आरती सकल सुरा सुर रायरे । पि० । तैसे भवितुमे करउ आरती, ए पद गुण चितलायरे ॥ पि० ४ ॥ पंच प्रदीप से करय आरतो, जे नित चित उलसायरे । पि० । ते लही पंच चिदा नन्द घनता, अचल अमर पद पायरे ॥ पि० ५ ॥ पंच प्रदीप अखण्डित ज्योतै, दुरमति तिमिर विलायरे । पि० । एह आरती तुरत तारती, भवजल निपतत घायरे ॥ पि० ६ ॥ पद जिन हरष तणी ए करणी, मन हरणी कहिवायरे । पि० चन्द्र विमल शिव सिद्धि निधि धरणी, वरणी किनविध जाय रे ॥ पि० ७ ॥ इति वीश थानक आरती सम्पूर्णम् ।

॥ अथ स्रगधरा छन्द काव्य तीन ॥

योर्जीमुतां जनोघां, जन गिरि सदृशां, कायिकेतु प्रभुक्तो। दुर्वारस्फार पङ्कोत्कट तर समर, व्राततागम्परूपा. अव्याबाधा व्यपोघत् परम पद दशां सदृशां योविभर्त्त। योनित्यं क्षायिकाख्या क्षय विमल लसत्तै लपूर्त्ति दधानः॥ १॥ स्याद्वादौ द्दामध्वामो च्छलद तुलफल प्रज्वल ज्ञातवेदो ज्वाला माला कुलाङ्गा जनित भव महा रण्य जातङ्क सङ्गाः. यत्रानेके पतङ्गाः कुमत मिमतयो जीजनन्नष्टरङ्गा, भस्मी भावं स्वकीयं सकल भयहरः शङ्कर प्राणभाजां॥२॥ प्रद्धस्तां नन्तवंचत्किरण गणलसत्सप्त सन्ति प्रतापो, लोका लोकाव लोका स्खलित विमलतो दग्रजाग्रत्प्रकाशः। त्रैलोक्या नन्दन स्समकृत कुशलक्रु द्भन्दन श्चामरेन्द्रै, श्रीवामानन्दनोय जगति विजयतां जैनचन्द्र प्रदीप॥ ३॥ त्रिभिर्विशेषकं॥ इति यह तीन काव्व आरती कियां पीछे दोनु हाथ जोड़के कहै.

॥ इति श्री विंशति स्थानक पूजा सम्पूर्णम्॥

॥ ❁ अथ ऋषिमण्डल पूजा ❁ ॥

॥ अथ १ श्रीजिनेन्द्रास्याष्टविध पूजा ॥

॥ दोधक ॥

प्रणमी श्री पारस विमल, चरण कमल सुखदाय
ऋषिमण्डल पूजन रंचुं, वर विधि युत चितलाय
१ ॥ नन्दीश्वर मन्दर गिरै, शाश्वत जिन महा
राज । अरचै अड़विध पूजसे, जैसे सहु सुरराज
२ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी, श्रावक सम
कित धार । विरचै जिन चौवीसकी, अड़विध
पूज उदार ॥ ३ ॥ (गाथा) सलिल १ सुचंदन
२ कुसुमजरं ३, दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५
वर अक्षत ६ नेविजायं ७, सुन्न फल ८ पूजाय
अठविहा ॥ १ ॥ ए अडविध पूजा करणं, सुणियै
सूत्र मझार । जे नवि विरचै प्रभू तणी, ते पामै
भव पार ॥ २ ॥

॥ दोधक ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम, जोगीश्वर नर गय
प्रथम नए युग आदिमै, सकल जीव सुखदाय १ ॥

॥ राग देशाख ॥

॥ पूर्वमुख सावनं करी दशन पावनं (इस चालमे) ॥

विमल गिरि उदय गिरि राज शिखरो परै, तरुण तर तेज दीपत दिणिन्दा। युगल भ्रम वारकरी धरम उद्योत किय, विमल इक्ष्वाकु कुल जलधि चन्दा ॥ १ ॥ मात मरुदेवी वर उदर दरि हरि वरा, सकल नृप मुगुट मणि नाभिनन्दा। अखिल जग नायक सुगति सुख दायका, विमल वर नाण गुणमणि समन्दा ॥ २ ॥ बृषभ लांछन धरा सकल भवभय हरा, अमर वरगीत गुण कुशल कन्दा। गहिर संसार सागर तरणि शम धरा, नमत शिवचन्द प्रभु चरण वन्दा ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल १ चन्दन २ पुष्प ३ फलव्रजैः ४, सुविमलाक्षत ५ दीप ६ सुधूपकैः ७। विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै ८, र्जिन मर्मीभिरहं वसुभिर्य्य जे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानन्त ज्ञान शक्तये, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय ; श्रीमत्

ऋषभ जिनेन्द्राय, जलं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री प्रथम जिनेन्द्रास्याष्ट विध पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ २ श्री अजित जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

जय जिनन्द दिनन्द सम, लखि भविकज विकसात। परमानन्द सुकन्द जल, विजया मात सुजात ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ आयरहो दिलवागमें, प्यारे जिनजी ॥ (इस ख्यालकी चालमें) ॥

एक अरज अवधारियै (अजित जिन) एक अरज अवधारियै ॥ (आंकनी) अजित जिनेशर जग अलवेशर, कूरम निजर निहारियै । अजित जिन एक० । तारण तरण विरुध सुणितरो, आयो सरण तिहारियै ॥ अ० एक० १ ॥ चरम सिन्धु भव भय जल निपतित, चरण पतित मोहि तारियै । अजि० ए० । परमानन्द घन शिव वनिता नन, कज मधुपान सुकारियै ॥ अ० ए० २ ॥ चिरसंचित घन दुरित तिमिर हर, तुम जिन भये तिमिरारियै । अजि० । कहै शिवचन्द्र अजित प्रभु मेरे, एह अरज न विसारियै ॥ अजित० एक० ३ ॥

(काव्यं)

सलिल चं० ॥ ॐ ह्रीं श्री मदजित जिनेन्द्राय ॥ वसु द्रव्य यजा० ॥ इति श्री अजित जिनेन्द्रास्याष्टविध पूजा ॥

॥ अथ ३ श्री सम्भव जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

जय जितारि सम्भव सदा, श्रीसम्भव जिन-राज। सकल लोक जिन जीतलिय, जीतो मोह समाज ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ गन्धवटी घनसार केसर मृगमदारस भेलीये (एचाल) ॥

अपरिमित वर शिखर सागर धार सम्भवकार ए, जिनराज सम्भव पाय वन्दो लहो भवजल पार ए ॥ वलि जलधिजात सुजात कुंजर कुम्भ भंजन जानियें। तसु जनक नाम समान नामा भये जिनवर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरण पङ्कज मधुर मधुरस पान लय लागी रह्यो। मिलकरि सुरासुर खचर व्यन्तर भमर नितचित ऊमह्यो ॥ जसु चरण कमलै प्लावगलांछन कनक सुवरण काय ए। सहु भुवन नायक सुमति दायक जननी सेना जाय ए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगतव्याणी तीस शर (३५) गुणधारिणी। संसार सागर

भय भराभर पतित पार उतारिणी ॥ स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा कुमति मद तरु दारिणी। प्रभु वाणी नित शिवचन्द्र गणिकै हुवो मङ्गल कारिणी ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन० ॥ ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमत्सम्भव जिनेन्द्राय वसुद्रव्यं यजा० ॥ इति तृतीय श्री सम्भव जिन पूजा ॥

॥ अथ ४ श्री अभिनन्दन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

श्री चतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भवि चित-लाय। भगति युगति सङ्कट हरण, करण तीन सुध थाय ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ कुन्द किरण शशि उजलो रे देवा (एचाल) ॥

सम्बर नन्दन जिनवरु रे वा०, अभिनन्दन हित कामीरे. जग दभि नन्दन जय करुं वा०, दुरित निकन्दन स्वामी रे ॥ १ लोकालोक प्रकाशता रे वा०, करता अविचल धामी रे ॥ अव्याबाध अरूपिता रे वाल्हा, विमल चिदानन्द रामी रे ॥ २ ॥ वांछित पूरण सुरमणी रे वा०, ए प्रभु अंतर जामी रे। ऐसे जिन महाराजकुं रे वा०, चंद्र नमें शिर नामी रे ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमद भिनन्दनजिनें० वसु०। इति श्री चतुर्थाभिनन्दन पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ ५ श्री सुमति जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

पञ्चम जिन नायक नमुं, पञ्चमि गति दातार। पञ्चनाण वर विमल कज, वन विकसन दिनकार ॥ १ ॥

॥ राग कैरवो ॥

॥ वन्सी तेरी वैरिणि वाजै रे, वैरिणि वाजै (एचाल) ॥

सुध भाव चित्त थिर धरिकै रे। चित्त०। पूजो सुमति जिनिन्द। सुधभाव०। जिन भक्ति करण रसीला, लहो परम आनन्द ॥ सुध० १ ॥ जिनराज सुमति समन्द, करै कुमति निकन्द। सुध०। प्रभुना चरण अरविन्दा, वन्दै असुर सुरिंद सुध० २ ॥ कनकाभ तनु दुति सोहै, प्रभु सुमङ्गला नन्द। सुध०। करुणोपशम रस भरिया, वन्दै नित शिवचन्द ॥ सुधभाव० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मत्सुमति जिनेन्द्राय वसु द्रव्यं०। इति पंचम पदे श्री सुमति जिन पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ ६ श्री पद्मप्रभु पूजा ॥

॥ दोधक ॥

हिवे षष्टम जिनवर तणी, पूजन करहु उदार। भवि चित भक्ति धरी करी, सुख संपति करतार ॥ १ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

॥ हांहों० । बावना चन्दन घसि कुमकुमा (एचाल) ॥

हांहो रे वाला) पदम प्रभु मुख चन्द्रमा, नित सकल लोक सुखदाय ए (हां०) हरि सुर असुर चकोरड़ा, नित निरख रह्या ललचाय रे ॥ हां० १ ॥ जिन मुख वचन अमृत तणो, जे श्रवण करै भविपान ए । हां० । ते अजरा मरता लहै, हरिगण करे जसु गुण गान ए ॥ हां० २ ॥ धर नृप कुल नभ दिन मणि, प्रभु मात सुसिमा नन्द ए । हां० । प्रभु दरशण ते प्रतिदिनं, हुइ ज्यों शिवचन्द आनन्द ए ॥ हांहो रे वाला ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय वसु०

इति षष्टम पदे श्री पद्मप्रभु जिन पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ श्री सुपार्श्व जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

श्री सुपार्श्व सुर तरु समो, कामित पूरण काज। जो जविषण पूजो सदा, वसु विध पूज समाज ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥

॥ मेरा दिल लग्या जिनेशर से (एचाल) ॥

मेरी लगी लगन जिनवर से। मेरी०। जैसे चंद चकोर भमरकी, केतकी कमल मधुरसे। मेरी०। एह सुपारस प्रभु भए पारस, गुण गण समरण फरसै। मेरी०। चेतन लोह-पणो परिहरकै, हुयल्यै कांचन सरिसै ॥ मेरी० १ ॥ ए प्रभु करुणा करकुं धरिल्यै, उर जिम कमल भमरसै। मेरी०। जे भवि जिनपद लगन धरै तसु, नही भय मरण असुरसै ॥ मेरी० २ ॥ मात पृथवि तनु जात तनु द्युति, सम शुभ कांचन सरसै। मेरी०। कहै शिवचन्द चित्त नित मेरो, रहो प्रभु पद लय भरसै ॥ मेरी० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मत्सुपार्श्व जिनेन्द्राय वसु० द्रव्यं०। इति सप्तम पदे श्री सुपार्श्व जिन पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ ८ श्री चन्द्र प्रभु पूजा ॥

॥ दोधक ॥

अष्टम जिनपद पूजियै, विविध कष्ट हरतार ।
अष्टसिद्धि नवनिधि लहै, जिन पूजन करतार ॥ १

॥ राग गुण्ड मिश्रित मल्हार ॥

॥ मेघ बरसै भरी कुसुम वादल करी (एचाल) ॥

परम पद पूर्व गिरिराज परि उदय लही, विजिन पर चन्द्र दिनकर अनन्ता । चन्द्रप्रभु चन्द्रिका विमल केवल कला, कलित सोभित सदा जिन महन्ता ॥ परमपद० १ ॥
कुमति मत तिमिर भर हरीय पुन भूरि भवि, कुमुद सुख करीय गुण रयण दरीया । गहिर भवसिन्धु तारण तरणि गुण, धारि भव तारि जिनराज तरीया ॥ परम पद० २ ॥
राखियै आज मोहि लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परीया । परम शिव चन्द्र पद पद्म मकरन्द रस, पान नित करण ततपर भरीया ॥ परम पद० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मच्चन्द्र प्रभु जिने० वसु०
इति अष्टम पदे श्री चन्द्रप्रभु पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ ९ श्री सुविध जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

सुविध २ समरण थकी, कामित फल प्रकटाय ।
अतिह गहन संसार वनि, वहुल अटन मिटजाय ॥

॥ राग ॥

॥ चम्पक कैतकी मालती (एचाल) ॥

सुविध चरण कज बन्दीयै ए । अईयां व० । नन्दीयै अति चिरकाल । सिव तरवारि निकन्दीयै, विघन कन्द ततकाल १ ॥ आज जनम सफलो भये । हां र सफ० । दीठो प्रभुदीदार । तनु मन दृग विकसित भये, जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसीयो । हां० अइ० व० । भवि उर क्षेत्र मझार । दर्शन सुरगुरु उगीयो, शिव फलनो दादार ॥ ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मत्सुविध जिनेन्द्राय वसु० ।
इति नवम पदे श्री सुविध जिन पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ १० श्री शीतल जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

मुझ तनु मन शीतल करो, श्री शीतल जिन राज । तुम समरण जलधारसे, अंतर तपति बुझाय ॥ १ ॥

॥ राग घाटो ॥

॥ दादा कुशल सुरिन्द० (इस चालमे) ॥

मेरे दीनदयाल, तुम भये सकल लोक प्रतिपाल आ० । सुणि शीतल जिनवर महाराज, चरण शरण धर्यो प्रभुनो आज । मेरे दी० । न नमुं सहु सविकारी देव, करिसुं चरण कमलनी सेव ॥ मेरे० १ ॥ जैसे सुरमणि करतल पाय, कुणल्यै काच शकल टलसाय । मेरे० । तुम सम सुरवर अवरन कोय, हेर २ जग निरख्यो जोय ॥ मेरे० २ ॥ प्रभु दरशण जलधर घनघोर, लखिय निरत करे भविजन मोर । मेरे० । पद शिव चन्द्र विमल भरतार, अरज एह उर धरियै सार ॥ मेरे० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मच्छीतल जिनेन्द्राय वसु० । इति दशम पदे श्री शीतल जिनेन्द्र पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ ११ श्री श्रेयांस जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

श्री श्रेयांस जिनेंद्र पद, नद डुति सलिला धार।
जे नेत्रै मज्जन करै, ते सुचि हुइ विधुतार ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करि (इस चालमे) ॥

श्री श्रेयांस जिणेशर जग गुरु, इन्द्रिय सदन सभंदहे । जसु वसु विध पूजनसे अरचो, उर धरि परमानन्दहे ॥ ए समकित धर श्रावक करणी, हरिणी भव मनरङ्ग हे । विजय देव जिन प्रतिमा पूजी, जीवा भिगम उवङ्ग हे ॥ श्री० १ ॥ सूरीयाभ प्रभू पूजन करियो, राय पसेणी उपाङ्ग हे । ग्याता अङ्गै द्रुपदि श्राविका, पूज्या जिन प्रतिबिम्ब हे ॥ काल लगै भमसी भव वनमें, मन्दमती भयभ्रांत हे ॥ श्री० २ ॥ विष्णु मात तनुजात विष्णु नृप, विमल कुलांबर हंस हे । सकल पुरन्दर अमर असुर गण, शिरो वरि प्रभु अवतंस हे ॥ इम सुरवरनी परि श्रावक जे, पूजै जिन उछरङ्ग हे । ते शिव चन्द्र परम पद लहिस्यै, निश्चय करी भवभङ्ग हे ॥ श्री० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस जिनेन्द्राय वसु० ।

इति एकादश पदे श्री श्रेयांस जिन पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ १२ वासुपूज्य जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

द्विवारम जिनवर तणी, पूजन करियै सार ।
भाव भक्तियुत भवि सदा, द्रव्यभक्ति चितधार ॥ १

॥ राग ॥

॥ सव अरति मथन मुदार धूपं (एचाल) ॥

सकल जग जन करत बन्दन, जया नन्दन सामिरे देवा, दुरित ताप निकन्द चन्दन, परम शिव पद गामिरे देवा ॥ सकल० १ ॥ नृपति वर वसु पूज्य नृपकुल, विपिन नन्दन जातरे देवा । सुहरि चन्दन नन्द नन्दन, नन्द मदकिय घातरे देवा ॥ सकल० २ ॥ वासु पूज्य जिनेन्द्र पूजो, सकल जन महाराज रे देवा । करत नुति शिव चन्द्र प्रभुए, निखिल सुर शिरताज रे देवा ॥ सकल० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॐ ह्रीं श्री मद्वासु पूज्य जिनेन्द्राय वसु द्रव्यं० । इति द्वादश पदे श्री वासुपूज्य जिन पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ १३ श्री विमल जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

विमल २ जिन कर मुझै, मलिन करम करि दूर।
तेरम प्रभु रमियै सदा, सुखकर भक्ति गुणपूर ॥ १

॥ राग ॥

॥ सिद्धचक्र पद वन्दोरे भविका (एचाल) ॥

विमल चरण कज वन्दोरे । सूरीजन विम० । वन्दनसैं आनन्दो रे । सू० वि० । जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर, संवत पद अरविन्दो । श्यामा उदर सुगति मुगता फल, कृत वरमा नृप वन्दोरे ॥ सूरी० १ ॥ सहु जग मण्डल विमल करणकूं, निज शासन नभचन्दो । उदय भयो भवि कमुद विकसिवा, वर गुण रयण समन्दोरे ॥ सू० २ ॥ यदि भव वान्दि हरण भवि चाहो, प्रभु वन्दो चिरनन्दो । विमल चिदानन्द घन मय रूपी, नित वन्दत शिवचन्दो रे ॥ सूरी० ३ विमल० ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चन्दन० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री मत् विमल जिने० । इति त्रयोदश पदे श्री विमल जिन पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ १४ अनन्त जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

हिव चवदम जिन पूजतां, हरियै विषय विकार ।
जो भवियण सुणियै सदा, ए प्रभु शरणाधार ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ पंचवरणी अङ्गीरची० (एचाल) ॥

पूज करणी प्रभुनी दुरित निवारी । दुरि । (आंकणी) अनन्त तरणी हिम किरण तरुण तर, किरण निकर जीताहे भारी । अनन्त नाणवर दरशण तेजै, प्रभुसु यशोदर है अवतारी ॥ पूज० १ ॥ लोका लोक अनन्त द्रव्यगुण, पर्याय प्रगट करण हारी । तातै अन्वय युत जिन धरियो, अनन्त नाम अति मनुहारी ॥ पूज० २ ॥ सिंहसेन नृप नंदन वंदन करत इंद्र चंद्र सुखकारी । सादि अनंत भङ्ग थिति धारियो, पद शिव चंद्र विजय धारी ॥ पूज० ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चंदन० ॐ ह्रीं श्री मच्चतुर्दश अनंत जि० वसु० ।

इति चतुर्दश पदे श्री अनंत जिन पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ १५ श्री धर्मजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

भानु नृप कुल भानु कर, पनरम जिन सुर सार। सोभित सहु जग विपिन जन, दुरख फलद जलधार १ ॥

॥ राग ॥

॥ धीर समीरे यमुना तीरे, वसती वने वनमाली (एचाल ॥

धर्म जिनेसर धरम धुरंधर, जग बंधव जगवाला। मैं वारी जाउं, जग० धर्म०। सुव्रता नंदन पाप निकंदन, प्रभु भये दीन दयाला ॥ मे० १ ध० ॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमर गिरि, लज्जि लीनो अचला धारा। मे०। जिन गम्भीरता चरम सिंधु लखि, किय लोकांत विहारा ॥ मे० २ ध० ॥ ए जिन चंद्र चरण अचरणतें, लहि जिनपति अवतारा। मे० करम वैरि दलकरि भवि लहिस्सो, पद शिव चंद्र उदारा ॥ मेवा० ३ धरम० ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चंदन०। ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीमत धर्म जिने० वसु द्रव्यं०। इति धर्मजिन पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ १६ श्री शान्तिजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

अचिरा उयरे अवतरी, शान्ति करी सुखकार। मारि विकार मिटाय करि, नाम धर्यो शान्ति सार ॥ १ ॥

॥ राग विभास ॥

॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं (एचाल ॥

शांति जिन चंद्र निज चरण कज शरण गत, तरणि गुणधारि भव वारि तारी। कुमत जन विपिन जनि कुमति घन वृतनि तति, छितिनि शितधार तरवारि वारी ॥ शां॰ १ एक भव पद उभय चक्रधर तीर्थ कर, धारिया वारिया विघन सारा । सकल मदमारिया विमल गुण धारिया, सारिया भक्ति वांछित अपारा ॥ शां॰ २ ॥ हरिण लंछन धरा वरण सुवरण करा, सुरवरा हितधरा गतविकारा । मोह भट धराणि अर गण हरण वज्रधर, कुमुद शिव चंद्र पद रजनिकारा ॥ शांति॰ ३ ॥

॥ काव्यं ॥

सलिल चंदन॰ । ॐ ह्रीं श्रीप॰ श्रीमत षोडशम शांति जिनं॰ यमुद्रव्य॰ । इति शांति जिन पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ १७ श्री कुन्थुजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

सतरम जिनवर दीव सम, भवि भव सागर जाण । भक्ति युक्ति नित पूजियै, लहीयै अमल विमाण ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ अरिहन्त पद नित ध्याइयै (एचाल) ॥

कुंथुजिनन्द गुण गाइये । वारि । मनवंछित फल पाइयै रे । प्रभु समरण लय लाइयै । वारि । भवि भव तजि शिव जाइयै रे ॥ कुंथु० १ ॥ भव जल गत निज आतमा । वारि करुणा उर धरि ताइयै रे । चरण कमल उपयोगिता । वारि ग्रहण करणकुं धाइयै रे ॥ कुंथु० २ वारि ॥ ए प्रभु दरशण जीवने । वारि । अनुभव रसनो दाइयै रे । वर शिवचन्द्र विमल बधै । वारि । दिन २ सोभ सवाइयै रे ॥ कुंथु० ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन० । ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीकुंथुजिने० वसुद्रव्यं० इति श्रीकुंथु जिन पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ १७ अर नाथ पूजा ॥

॥ दोधक ॥

जिन अढारमो ध्याइयै, त्रवियण चित्त मझार। करण तीन इक कर मुदा, प्रतिदिन जय जय कार ॥ १ ॥

॥ राग बसन्त ॥

॥ सङ्ग लागोही आवै, कुण खेलै तोसु होरी रे (एचाल ॥

निज बिमल भक्तिसें, अरजिनसे नित रमियै रे। निज बिमल०। जिनगुग निजगुण तुल्य करणकुं, चञ्चल चित हय दमियै रे ॥ निज० १ ॥ सुमति युवति संयम उर धरिकै कुमति नारि सङ्ग गमियै रे । निज०। अनुभव अमृत पान करण तैं, विषय विकृत बिष दमियै रे ॥ निज० २ अर० ॥ जिनवर सङ्ग रमण दव अनलै, पङ्क सघन वन धमियै रे। निज०। कहै शिवचन्द्र जिनेन्द्र रमणसे, भव रणमें नहीं भमियै रे ॥ निज० ३ अरज० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन०। ॐ ह्रीं श्रीमदष्टादश अरजिने० वसु द्रव्य०। इति अरजिन पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ १९ श्री मल्लिजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

उग्रुखीसम जिन चरण कज, भमर होय लय-लाय। सेवै तसु भवि भमरता, अगणित दुरित विलाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ सम्भव जिन सुखकारी रे वाला (एचाल) ॥

मल्लिजिनन्द उपगारी रे वाला, मल्लिजिनन्द उपगारी हांरे होरे वाला। वारी जाउ वार हजारी रे वाला। मल्लि०। कुम्भ नरेशर गगनां गणमे। सहस किरण अवतारी रे वाला मल्लि० १ ॥ पूरव भव षट्मित्र नरिन्द प्रति। बोधि सिन्धु भवतारी। मल्लि०। वेद त्रयी विरही तनु धार्यो। सकल सङ्घ सुखकारी रे वाला ॥ मल्लि० २ ॥ सकल कुशल हरि चन्दन तरुवर। नन्दन वन अनुकारी। मल्लि०। सङ्घ चतुर्विध भूरि खचर गण। प्रणत चन्द्र अनुहारी रे वाला ॥ मल्लि० ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दद०। ॐ ह्रीं श्री मल्लिजिने० वसुद्रव्यं०। इति मल्लिजिन पूजा ॥ १९ ॥

॥ अथ २० श्रीमुनिसुव्रत जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

पद्मोदर वर पद्मनद, गत पर पद्म समान ।
विंशतितम प्रभु पूजिये, केवल लब्धि निधान ॥ १

॥ राग गरबो ॥

॥ सुनि चतुर सुजान, पर नारी सुं प्रीतड़ी कबहु
न कीजिये । एचाल) ॥

सुनि सुव्रत जिनेन्द्र सुनिजर धरि मुझपर वर दरशण दीजियै, प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता । करियै लहियें शिव साधकता, तब तुरति मिटै शिव बाधकता ॥ सुणि० १ ॥ अमृतमें साध्यपणो विलसै, प्रभु दरशण साधनता उलसै । तद मुझमें साधकता मिलसै ॥ सुणि० २ ॥ भिन्नादि करणता यदि विघटै, एकाधि करणता यदि सुघटै ; तद मुझ शिव साधकता प्रगटै ॥ सुणि० ३ ॥ एकाधि करणता मुझ करियै, भिन्नाधि करणता परि हरियै ; शिव चन्द्र विमल पद तद वरियै ॥ सुणि० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन० । ॐ ह्रीं श्री विंशतितम श्रीमत् मुनि सुव्रतजिनं० वसुद्रव्य० । इति मुनिसुव्रत जिन पूजा ॥ २० ॥

॥ अथ २१ श्री नमि जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

अन्तर वैरी नमावियां, तब लहियो नमि नाम।
भवियण ए प्रभु पूजसे, सरीधै वंछित काम ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ हम आए है शरण तिहारे, तुम प्रभु शरणागत तारे वारी० (एचाल) ॥

श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें, नयन भ्रमर युग धरियेंरे। तिण किय गुण मकरन्द पानसे, चेतन मद मत करियेंरे। वारि। चेतन मद मत करियेंरे ॥ श्रीनमि० १ ॥ एह चरण कज अह निश विकसे, पर कज निसि कुमलावैरे। वारी पर। एन बलै बलि तुहिन अनलसे, अपर कमल बल जावैरे ॥ वारी० २ अप० ॥ ए पद कज गुण मधुरस पीवत जीव अमरता पावैरे। वारी। अवर कमल रस लोभी मधुकर, कजगत गज गिलजावैरे ॥ वारी० ३ ॥ परकज निजगुण लच्छिपात्र है, पद कज सम्पद देवैरे। वा०। तातै पद शिव चन्द्र जिनिन्दके, अहनिशि सुर नर सेवैरे ॥ वा० ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्द० ॐ ह्रीं श्री नमि जिनेन्द्राय वसुद्रव्य०। इति श्री नमि जिन पूजा ॥ २१ ॥

अथ २२ श्री नेमि जिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

बावीसम जिन जगगुरु, ब्रम्हचारी विख्यात।
इण वंदन चंदन रसै, पाप ताप मिट जात ॥ १

॥ राग रामगिरी ॥

॥ गात्र लूहैं जिन मन रङ्गसुं रे देवा (एचाल) ॥

नेमि जिनन्द उर धारीयै रे वाला, विसय कसाय निवारीयै वाला। वारीयै हांरे वाला वारीयै, ए जिननें न विसारीयै रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजता रे वाला, देशना अमृत वरसता रे वाला। देस०। वरसता हांरे वाला वरसता, भविक मोर सुणि उलसता रे ॥ २ ॥ समव सरण गिरि परि रह्या रे वाला, भा मण्डल चपला वह्या रे वाला। चपला वह्या हांरे चपला वह्या, सुर नर चातक ऊमह्या ॥ ३ बोध बीज उपजावीयो रे वाला, भविउर क्षेत्र वधावीयो हांरे वाला। धा०। भविक सुगति फल पावीयो रे ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्द० ॐ ह्रीं श्री मन्नेमी जिनेन्द्राय वसुद्रव्य०

इति श्री नेमि जिन पूजा ॥ २२ ॥

॥ अथ २३ श्री मत्पार्श्वजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

अश्वसेन नन्दन सदा, वामोदर खनि हीर ।
लोक सिखर सोजै प्रभु, विजित करम बड़वीर ॥ १

॥ राग ॥

॥ बाजै तेरा विछुया (इस कैरवाकी चालमे) ॥

पास जिनन्दा प्रभु मेरै मन वसीया । पास जिनन्दा० । मेरै मन वसीया रे, मेरै दिल वसीया । पास जिन० । शिव कमलानन कमल विमल कुरु, तर मकरन्द पान अति रसीया ॥ पास जिन० १ ॥ वामा नन्दन मोहनि मूरत, सकल लोक जन मन किय वसीया । पास जिन० । परम-ज्योति मुख चन्द विलोकित, सुर नर निकर चकोर हरसीया। चकोर हर० २ पास जिन० ॥ अञ्जन गिरि तनु दुति जिन जलधर, देशना अमृत धार वरसीया । धार वर० पास जि० पीय करि भवि चिरकाल तिरसीया, सुगति युवति तनु तुरत फरसीया । पास जिन० । कुमुद सुपद शिवचन्द्र जिनें-द्रनो, वारीजाउं मन मेरो अतिह उलसीया ॥ पास जि० ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं त्रयोविंशत्तम श्रीमत्पार्श्व जिने० यजु० ।

इति श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥ २३ ॥

॥ अथ २४ श्रीमद्वीरजिन पूजा ॥

॥ दोधक ॥

वर इक्ष्वाकु कुल केतु सम, त्रिशलोदर अवतार।
पूज प्रभुनी नित कीजीयै, विविध भक्ति सुखकार॥

॥ राग ॥

॥ तेज तरणि मुख राजे, हांरे मुख राजै। प्रभु जीको ते० (एचाल)॥

चरम वीर जिन राया (हांरे) जिनराया। मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया। आं०। सिद्धारथ कुल मन्दिर धज-सम, त्रिशला जननी जाया। निरुपम सुन्दर प्रभु दरसन तें, सकल लोक सुखपाया (हांरे सुखपाया)॥ मेरे प्रभुच० १ वाम चरण अंगुष्ट फरसतै, सुरगिरि वर कम्पाया। इन्द्रभूति गणधर मुख मुनिजन, सुरपति वन्दित पाया (हांरे)॥ मेरे प्र० २॥ वर्त्तमान शासन सुखदाया, चिदानन्द घनकाया चन्द्रकिरण गुण विमल रुचिर धर, शिवचन्द्र गणि गुण गाया (हांरे)॥ मेरे प्र० ३॥ वरस नन्द मुनि नाग धरणि मित, द्वितियाश्विन मनभाया। धवलपक्ष पंचमि तिथि शनि युत, पुरजय नगर सुहाया (हांरे)॥ मेरे प्र० ४॥ श्रीजिन हरख सूरीसर साहिब, वर खरतर गच्छराया। खेमकीर्ति शाखा भुवन मणि, रूपचंद्र उवझाया (हांरे)॥ मेरे प्र० ५॥

महापूर्व जसु भूरी नरेश्वर, बन्दे पद उलसाया । तासु शांस वाचक पुण्यशील गणि, तसु शिष्य नाम धराया (हांरे) ॥ मेरे प्र० ६ ॥ समय सुन्दर अनुग्रही ऋषिमण्डल, जिनको शोभ सवाया । पून रची पाठक शिवचन्दै, आनन्द सङ्घ वधाया (हांरे) ॥ मेरे प्र० ७ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल चन्दन० । ॐ ह्रीं श्रीप० चतुर्विंशतितम श्रीमद्वीर जि० वसु० । इति श्रीमहावीर जिनं पूजा विधिः ॥ २८ ॥

॥ स्रग्धरावृत्तद्वयं ॥

दुर्व्वारस्फार विघ्नोत्कट करटि घटोत्पातन स्पष्ट जाग्रद्, वीर्य प्राग्भारोत्पाट चंचत् कुशल हरिदरी जित्वरी दुर्नतानां संसारापार सिंधु त्तरण तरतरी भक्तिभाजा मजस्र, भव्यानां ब्रम्हपद्म प्रवण मधुकरी शङ्करी शङ्करी सा ॥ १ ॥ लोका लोक प्रलोक स्खलित विमल सद्दर्शण ज्ञान भानुः, श्रीमज्जैनेश्वरीयं त्रिभुवन विभुताप्ति श्चतुर्विंशतिश्च । श्रीसिद्धानन्त नाथालय विशदलसत् सर्व लोकाग्रभाग, प्रासादाग्र प्रदेशे जगति विजयते वैजयन्ती जयन्ती ॥ २ ॥ इति ऋषिमण्डल स्तुतिः ।

॥ अथ नवपद आरती ॥

जय जय जग जन वंछित पूरण, सुरतरु अभिरामी। आतम रूप विमल करतारक, अनुभव परिणामी ॥ जय २ जगसारा २ ॥ आरती पार उतारा, सिद्धचक्र सुखकारा ॥ १ ॥ जग नायक जग गुरु जिनचन्दा, भज श्रीभगवन्ता। आतम राम रमा सुखभोगी, सिद्धा जयवन्ता ॥ जय० २ ॥ पंचाचार दीपै आचारिज, जुगवर गुणधारी। धारक वाचक सूत्र अर्थना पाठक भवतारी ॥ जय० ३ ॥ सम दम रूप सकल गुण ज्ञायक, मोटा मुनिराया। दंशण नाण सदा जय कारक, सञ्जम तपपाया ॥ जय० ४ ॥ नव पदसार परम गुरु भाषै, सिद्धचक्र सुखकारी। ए भव परभव ऋद्ध सिद्ध दायक, भव सायर वारी ॥ जय० ५ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावै, मन वंछित पावै। श्रीजिनचन्द अखय पद पूजत, शिव कमला पावै ॥ जय० ६ ॥ इति श्रीनवपद आरती।

॥ अथ ऋषिमण्डल आरती ॥

जय जय जिनराजा। वारी ज०। आरती करुं शिव काजा, भव भय दुख भाजा ॥ जय० १ ॥ ऋषभ अजित

सम्भव जिन राया, अभिनन्दन सुमति । पद्म सुपारस चंद्रा प्रभुतै, दूर हुवै कुमति ॥ जय० २ ॥ सुविध शीतल श्रेयांस सवाई, करि बारम जिनकी। विमल अनन्त धर्म्म प्रभु शांति, हर आरति तनकी ॥ जय० ३ ॥ कुन्थुनाथ अरमल्लि मुनि सुव्रत, नमि नेमी श्रीकारा । पार्श्वजिनेश्वर वीर जिनंदा आतम हितकारा ॥ जय० ४ ॥ इण विधि आरती जे भवि करसी, भव सायर तरसी । श्रीजिनचन्द अक्षय पद फरसी, शिव कमला वरसी ॥ ज० ५ ॥ इति श्रीऋषिमंडल आ० ।

॥ अथ ऋषिमण्डल सुननेकी (वा) पूजनेकी विधिः ॥

प्रथम) आद्यन्ताक्षर सलक्ष० । यह । ऋषमण्डल स्तोत्र धूप, दीपादि विधि संयुक्त, आठ महिने तक प्रभात समय सुणें । ऋषिमण्डल में जो, मूल मन्त्र है सो शुभदिन शुभ-घड़ी । हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेई, गुरूके पास जावे । भेट धरके, विनय संयुक्त मूलमन्त्र ग्रहण करै । उस्का ८००० जाप, महिनामे करै । आंबिल करनेकी शक्ति होय तो, सदा करै । नहिं तो, आठम, चवदस, दो आंबिल जरूर करै । आठ महिना हुवा बाद ऊजमणो करे । उज-

मणेके दिन १०८ वेर सुणें। पीछे शक्ति होय तो, विधि संयक्त, ऋषिमण्डल स्थापन करायके, पूजा करे। विशेष शक्ति होय तो, २४ प्रकारी पूजा करावे। पूजामें सामग्री ज्यों पहली नवपदजीकी विधके ठिकाणें लिखी है सो, सर्व सामग्री इहां २४ चोईस लेणी। एक एक महाराजकी पूजा पढ़ायके, प्रथम जल, पीछे चन्दन, ऐसे अष्टद्रव्य अनुक्रमसे चढ़ावे। पीछे, सम्पूर्ण पूजा हुवा बाद, गुरुभक्ति करै। साहमी वच्छल करै। इहां, विशेष विधि गुरुके सुखसे समझ के करणी। यह ऋषमण्डल सुणने वाले पूजने वाले भव्य जीवोंके घरमें कभी उपद्रव न होगा। सदा आनन्द उच्छाह रहेगा। इत्यलंविस्तरेण। इति ऋषिमण्डल सुणने (वा) पूजन करनेकी विधि।

॥ इति ऋषिमण्डल २४ प्रकारी पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ ❀ अथ श्री समेत शिखर पूजा ❀ ॥

॥ अथ प्रथम पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौवीसे जिनवर तणा, प्रणमी जावे पाय। समेत शिखर गिरि रायनी, पूज करूं मन लाय १ ॥ शिखर समेत सिरोमणी, ए गिरवर कैलाश अति उत्तम मनोहरू, ए जोगिन्द्र विलास ॥ २ वीश प्रभू मुगतें गया, कर अणशण इह ठोर। तातें सुर किन्नर सबे, वन्दत हैं कर जोर ॥ ३ महिमा जाकी महियलै, कहि न सके कवि कोय मुक्ति महिल निश्रेणिका, ए तीरथ जग होय ॥ ४ ॥ मिथ्यामत राची रह्या, तिनकुं ए न सुहाय

चूकतणे मन किम गमे, दिनकर सब सुखदाय ५ ॥ अजित जिनन्द दिनन्द सम, दूषम सुषमा काल । कुशल करण जग जय हरण, प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥

॥ श्रीराग ॥

॥ हांहांरे देवा बावना चन्दन घस कुकुमा (एचाल) ॥

हांहांरे देवा) समेत शिखर गिर गायना, गुण गावां मन धर प्रेम ए । हांहांरे देवा । सुर गुरु पिण ए गिरतणी, बहु महिमा वरणे केम ए ॥ १ हांहांरे देवा ॥ वीश प्रभु मुगतै गया, अजितादिक श्रीजिन चन्द ए । हांहांरे देवा । इन कारण ए गिरवरू, निश्रेयस सुरतरु कन्द ए ॥ २ हांहांरे देवा ॥ कोड़ा कोड़ी मुनिवरू, सीधा बहु इन गिर आय ए । हांहांरे देवा । ए गिर फरस्यां भावथी, पापी पिण पावन थाय ए ॥ ३ हांहांरे देवा ॥ श्रावक सुध समकित धरै, ते विध पूर्वक धर प्रेम ए । हांहांरे देवा । बालकहै जिन चन्दनां करै भक्ति सदा निजखेम ए ॥ ४ हांहांरे देवा ॥ १ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

॥ पूर्वमुख सावनं, करि दर्शण पावनं (एचाल) ॥

अजित जिनचन्द सुरवृन्द सेवित सदा, सुभग पद-कज तणी सेवना । हांरे अईयो सेवना ए । जगत दुर्लभ

भणी रत्नपर जीवकुं, पूजीये चरण जिन देवना ए ॥ हांरे० १ तारण तरण भवोदधि भविक जीव केई, परम उपगार करः निस्तऱ्या । हांरे० । शिखर गिर राय पर पाय निर्वाणपद सिद्ध निजरूप गुण सम्भऱ्या ॥ हांरे० २ ॥ अष्टविध पूजना द्रव्य भावै करै, भाव मन सौच धर जे नरा । हांरेअ० । ते शिखर तीर्थ शिव सौख्य सम्पद वरै, बाल जिन भक्त वत्सल करा ॥ हांरे अईयां वत्सल० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तए जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीअजित जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति प्रथम पूजा ॥ १

॥ अथ द्वितीय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसंभव भवदल अनघ, जलधर सम जिनराज । पर उपगारी परम गुरु, भए भविक सुख काज ॥ १ ॥

॥ राग वेलाउल ॥

॥ विलेपन कीजै श्री जिनवर अङ्ग (एदेशी) ॥

पूजियै जिन मनरङ्ग जिनेसर । पूजि० । जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करी, नेवज फल मनचङ्ग ॥ जिने० १ ॥ सेना मात जितारी तात सुत, श्रीसम्भव जिन अङ्ग । हार सुगट कुंडल

वर भूषण, चाढ़ो भवि सुभढङ्गै ॥ जिनं० २ पूजि० ॥ शिखर शिखर पर शिखर भए है, अनन्त चतुष्क सुरङ्गै । बालचन्द्र प्रभु अधम उधारन, प्रभुता परम प्रसङ्गै ॥ जिनं० ३ पू० ॥
ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० संम्भव जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति द्वितीय पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अभिनन्दन जिनचन्दकी, महिमा वरणी न जाय । परम रूप परमातमा, सदानन्द सुख-दाय ॥ १ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

॥ सांझसमें जिन वन्दो भवि० (एचालमें) ॥

अभिनन्दन जिन वन्दो, भविजन । अभि० । (आंकणी) संवरतात सिद्धारथमाता, जाके कुल नभचंदो ॥ भ० १ अ० अधम उधारन भव दुःख वारन, शिव सुरतरुनो कंदो । इन्द्र चन्द्र असुरेन्द नमै नित, वन्दित सुर नर वृन्दो ॥ भ० २ अ० समेतशिखर पर शिवसुख पायो, मिटगयो भव भय फन्दो । बालचंद्र प्रभु तरण तारणको, पूजनकरी चिरनंदो ॥ भ० ३ अ०
ॐ ह्रीं श्री प० अभिनंदन जि० स्वाहा । इति तृतीय पूजा ॥ ३

॥ अथ चतुर्थी सुमति जिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुमतिनाथ सम सम्पदा, सदा सुमति दातार ।
सेवै सुर नर अमर सहु, चरण शरण चितधार ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

॥ चरणकी चरणकी चरणकी वारीजाउं मैं॰ (एचाल) ॥

बलिजाउं मैं सुमति जिनन्दकी । ब॰ । (आंकणी) ।
पूरणब्रह्म भए परमातम, मेघ कुलांबर चन्दकी ॥ ब॰ १ ॥
भविकुल कमल बिकास करणकुं, प्रगट प्रताप दिनन्दकी ।
सवि गुणलायक बंछित दायक, शासन सुर तरु कन्दकी ॥
बलि॰ २ ॥ करन सुसेवा खचर अमर नर, मात सुमङ्गला
नन्दकी । बालचन्द्र प्रभु पतित उधारण, सबगुण रतन समं-
दकी ॥ ब॰ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने॰ श्रीसुमतिजिनेन्द्राय
अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति चतुर्थ पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पञ्चमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पदम प्रभू पद पद्मकी, सरण गही सुख
दाय । दर्शण बिन अनदेवको, सङ्ग कबून सुहाय
॥ १ ॥

॥ राग सोरठ मल्हार ॥

॥ अणियारे नैन जिनके, सखि मुनि सङ्ग बालक क्किनके (एचाल) ॥

प्रभुसेती प्रीत लागी, मेरी भाग्यदिसा अब जागीरे ॥ प्रभु० आंकणी ॥ पद्मप्रभुजीके दरशण अन्तर, आगल अब मेरी भागीरे ॥ प्र० १ ॥ प्रभु परमातम मैं बहिरातम, अनुभव आतम सागी । प्रगट प्रताप प्रभू प्रभूतालख, अब मैं भयों अनुरागी ॥ प्र: २ ॥ अन्तरगतकी वेहीज बूझै, क्या बूझै जो दागी । बालचन्द्र निज नाथ निहारत, कुमति कुट लता त्यागीरे ॥ प्र० ३ ॥ इति ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्रीपद्मभूजिन अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति पंचम पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठी सुपार्श्वजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

लोह धातु सम आतमा, परमातम चिद्रुप ।
कञ्चन रूप करै प्रगट, श्रीसुपास जिन भूप ॥ १
श्रीसुपास जग जीवके, पारस सम जिनराज ।
थण घड आतम लोहकुं, कञ्चन करै सुकाज ॥ २

॥ राग वसन्त ॥

दादा कुशल अरिंद तुम दरशणतैं परमानंद, दा० (एचाल)

भवि पूजो सुपास, सहुनी वंछित पूरै आस । भवि० । जाकां कमल सम सुगन्ध सास, आहार नीहार अदृश्य जास भवि० १ ॥ न घटै न वधै नख केश पास, मांसासृग उज्वल वर्णतास । भवि० । अतिशय चौतिश तणो प्रकाश, तरण तारण जग जस सुवास ॥ भवि० ॥ श्रीसमेत शिखर पर कर निवास, प्रभु पायां मुक्ति महिल सुवास । भ० । प्रभुके समरणसें कर्मनास, कहै बाल सदा मैं प्रभुको दास ॥ भवि० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मनं० श्रीसुपार्श्व जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति षष्ठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चन्द्रा प्रभुकी चन्द्र सम, मुख शोभा मनुहार।
देखत दृग आनन्द लहै. सूरत अति सुखकार ॥ १

॥ राग ॥

॥ मल्हि मनोहर तुझ ठकुराई (एराग) ॥

श्री चन्दा प्रभु अरज सुणीजै । श्री चन्दा० (आंकणी) त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर, दीन दयाल निवाजस कीजै ॥ श्री चन्दा० १ ॥ अधम उधारण विरुद तुमारो, मोसो अधम न ओर कहीजै । श्री० । इह संसार अपार अगाधमैं, साहिब

शरणागत रख लीजै ॥ श्री चन्दा० २ ॥ मो पतितनकुं पार उतारो, निज निर्यामक विरुद वहीजै । श्री० । बालचन्द्र प्रभु शिव सुख दायक, आतम सम्पद अव मोहि दीजै ॥ श्री चन्दा० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीचन्द्रा प्रभु अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति सातमा पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुविध जिनन्द दिनन्द सम, जग जीवन हितकार । मिथ्या मोह अग्यान तम, दूर हरण दिनकार ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ जिया चतुर सुजाण नवपदके गुणगायरे (एहनी) ॥

भेटो भविक सुजाण सुविध जिनन्द सुभ भावरे । भे० । उत्तम कुल नरभवतें पायो, फिर अैसो नही दावरे ॥ भे० १ भक्त उधारण भवि निस्तारण, भवसागरकी नावरे । भे० । तन मन वस कर निज आतमको, प्रभु समरण लय लायरे ॥ भे० २ ॥ द्रव्य भाव युत पूजन करीयै, मनधर अधिक उच्छा-वरे । भे० । बालचन्द प्रभु पतित उधारण, मिल गये पुन्य पसावरे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० श्रीसुविध जिनें द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति अष्टमी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीशीतल मुनि इन्दकी, महिमा अजब अपार
ज्ञानानलथी जिणदीशा, कर्म अष्टेंधन जार ॥ १

॥ ढाल ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेव्यारे धनभाग्य हमारा (एहनी) ॥

श्री शीतल जिन वन्दो रे भविजन सुखकारा । श्री० । पतित उधारन दुरगति बारक, दायक शिवसुख सारा रे ॥ भ० १ ॥ भक्त भविक भव भय अपहारी, ए प्रभु परम सुप्यारारे । भ० । मिथ्या ग्रीषम ताप निवारन, प्रभु चन्दन अनुकारा रे ॥ भ० २ ॥ पर उपगारी परम महागुरु, परमातम अविकारा रे । भ० । बाल कहै प्रभुको भव भवमै, चरण शरण मन वारारे ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० शीतल जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति नवम पूजा ॥ ९

॥ अथ दशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांस जिनन्दनी, चरण शरण सुखकार ।
पुन्य प्रशाद मिल्यो मुझै, भव २ सुख दातार ॥ १

॥ ढाल ॥

॥ दादा चिरञ्जयो सेवक जन सुखदाई दरशण
सदा दीयो (एचाल) ॥

भवि भावधरी श्री श्रेयांस जिनेसर पूजो मनरली । भ०
ए प्रभु सम अवरन को देवा, जाकी चौसठ इन्द्र करै सेवा।
ते लहै सुर सुख शिवसुख मेवा ॥ भ० १ ॥ प्रभु परतिख
सुरतरु सम स्वामी, जाकी पुन्य प्रसाद सेवा पामी । प्रभु
जग जीवन अन्तर जामी ॥ भ० २ ॥ प्रभु दीन दयाल परम
दाता, जग वत्सल जग बन्धव त्राता । कहै बाल सकल
दायक साता ॥ भ० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री श्रेयांस
जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति दशम पूजा ॥ १०

॥ अथ इग्यारमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

परमातम परमेसरू, श्री तेरम जिनराज ।
ध्यावो सेवो भविक जन ज्युंपावो सुखसाज ॥ १

॥ राग कनड़ो ॥

॥ मेरी लागी लगन जिन चरणे, मेरी० (एचाल) ॥

मन मोह्योरी मेरो जिन चरणे । म० । दुःख दोहग
सब हरणे । म० । विमल जिनन्दकी अदभुत तनुछवि ।

सोभत सोवन वरणै ॥ म० १ ॥ दीन दयाल दयानिध दाता, सब जीवन सुख करणै । म० । परमातम प्रभु परम परम गुरु, प्रभु भए तारण तरणें ॥ म० २ ॥ पुन्य प्रसाद लह्यो प्रभु दरशण, सास्वत शिवमुख धरणें । म० । बालकहै प्रभु सेवक जाणी, रख लीजै मोहि शरणै ॥ म० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्ता० जन्मज० श्रीमत्० श्रीविमल जिनें० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति इग्यारमी पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्री अनन्त जिन देवको, सेव करो मनलाय ।
मन वंछित सुख जिम लहै, दुरगत दूर पुलाय ॥ १

॥ राग मालवी गौड़ी ॥

॥ सब अराति मथन मुदार धूपं, करत गंध रसाल रे देवा० (एचाल) ॥

ध्यावो सेवो भविजन भक्तै, अनन्त जिनन्द महाराज रे देवा । ए सुर तरु सम जगमे जिनवर, तारण तरण जिहाज रे देवा ॥ ध्या० १ ॥ कृपासिन्धु भगवान परम गुरु तीन भुवन सिरताज रे देवा । ध्या० । जिन सेवातें शिव सुख पामें, सफल हुवै सब काज रे देवा ॥ ध्या० २ ॥ इह

सन्सार असार भजन विन, कैसें रहै निज लाज रे देवा । बालचन्द प्रभु पर उपकारी, दायक अविचल राज रे देवा ॥ ध्या० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्त जिनेन्द्राय अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति बारमी पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

धर्म जिनेशर परम गुरु, पर उपगारी देव ।
परमातम प्रभु चरणकी, कीजै नित प्रति सेव ॥ १

॥ राग भैरवी ॥

॥ पंचवरणी अङ्गी रची कुसुमजाती कुसुमजातीरे अईयो कुसुम० पां० (एचाल) ॥

सुखकारी रे देवा सुखकारी । धर्म जिनन्द सेवो सुख-कारी, सुखकारी रे देवा । धर्म० । तीन भुवनके साम शिरो-मणि, सब जीवनको है हितकारी ॥ धर्म० १ ॥ जग जीवन जग बन्धव जग गुरु, परम पुरुष प्रभु उपगारी । अकल सकल अघहर पर अनुपम, अचल अगोचर अविकारी ॥ ध० २ ॥ भव सन्ताप निवारण तारण, जिन सेवा मोहि अति-प्यारी । सुर तरु सम प्रभु चरण शरणको, बालचन्द कहै बलिहारी ॥ धर्म० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री धर्म जिनें-द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ चवदमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शांति करण सब दुःखहरण, शांति जपो सुख कार। शिव सुख दायक जगत गुरु, परमातम अविकार ॥ १ ॥

॥ राग गौड़ी ॥

॥ केसरीया नें ज्याजको लोक तिरायो, ए अचिरिज मोहि आयो कं० (एचाल) ॥

शांति जिनेसर ध्यावो, भविजन शांति०। तरण तारण भव सागर जिनको, तीन जगत जस चावो ॥ भ० १ शा० शांति सुधारस नाम प्रभुको, समरन कर मन भावो। कर्म कोट सतखण्ड हुवै तब, सुद्ध सरूपी थावो ॥ भ० २ शां० ॥ भक्ति करो मन सुध भगवन्तकी, मन सुध प्रभु गुण गावो। बालकहै प्रभुके सेवनसे, मन वांछित फल पावो ॥ भ० ३ शां० ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्रीशांति जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा। इति चवदमी पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पनरमी पूजा ॥

॥ सोरठा ॥

कुन्थु जिनेशर देव, भविजन पूजो भावथी। चरण कमल की सेव, इंद्रादिक नित प्रति करै ॥

॥ राग सोरठ ॥

॥ कुन्द किरण शशी ऊजलोजी देवा, पावन घसि घनसारोजी आछो (एचाल) ॥

चन्द्र किरण जैसो ऊजलारे देवा, जग जश प्रभु विस्तारोजी । आछो । अनन्त गुणेंकरी सोभतारे देवा, कुन्थु जिनन्द जग सारोजी ॥ आछो १ ॥ कामित दायक सुर तरूरे देवा, सर्व जीवन प्रति पालोजी । आछो । भवि जन पूजो भावधारे देवा, ए प्रभु परम आधारोजी ॥ आछो २ शिव सुख दायक साहिवारे देवा, पतित उधारण हारोजी । आछो । वालचन्द्र जिनचन्द्र नोरे देवा, शरण गह्यो सुख कारोजी ॥ आछो ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री कुन्थु जि॰ अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा । इति पनरमी पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ सोलमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्री अरनाथ जिनन्दनी, पूजा अष्ट प्रकार ।
करियै मन सुध भावसो, भव भव सुख दातार ॥

॥ राग कालिङ्गड़ो ॥

॥ मनारे जिन चरणा चितलावो, मनारे (एहनी) ॥

श्री अरनाथ कुं ध्यावो मनारे, त्रिभुवन पति गुणगावो

म० त्रि०। ऐसो अवरन देव जगतमैं, जाकों जग जश चावों म० १ त्रि०॥ सूर नरेशर नन्दन प्रभुजी, मात प्रभावती छावों। तन मन लगन लगावों प्रभूसें, नरक निगोद नजावों म० २ त्रि०॥ परम पुरुष परमेशर प्रभुकी, चरण शरण मन भावों। दीन दयाल दयानिध पूजत, बाल परम सुख पावों म० ३ त्रि०॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा। इति सोलमी पूजा॥ १६॥

॥ अथ सतरमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कुम्भ समुद्भव जगधणी, मल्लि जिनेशर देव।
जसु पद पङ्कजकी करै, इंद्र चंद्र नित सेव॥ १

॥ राग कल्याण ॥

॥ तेरी पूजावनी तेरसमैं, ते० (एचाल)॥

मेरी लगन लगी जिन चरणें, मल्लि जिनन्द सुख करणै होमेरी०। त्रिभुवन नायक सब सुख दायक, ए प्रभु अशरण शरणें॥ होमेरी० १॥ अनुपम रूप बिराजित प्रभुजी, सोभत सोवन बरणै। होमेरी०। अकल अगोचर प्रभु उपगारी, ध्यावो सब दुख हरणै॥ होमेरी० २॥ जो निज आतम कुं सुख चावो, लावो चित्त समरणै। होमेरी०।

बालकहै प्रभु अधम उधारण, राख लीजै मोहि शरणे ॥ हो मेरी० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने श्री मल्लि जिनेन्द्राय अष्ट-द्रव्यं यजामहे स्वाहा। इति सतरमी पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ अठारमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विंशतितम जिनवर नमुं, मुनि सुव्रत जिनचंद।
भावै भविजन भेटियै' छूटलै भविफन्द ॥ १ ॥

॥ राग मल्हार ॥

॥ चिहुंओर बदरिया बरसै (एचाल) ॥

मुनि सुव्रत स्वामी दरसै, आज आनन्द घन बरसै हो। मु०। समेत शिखर पर प्रभु पद पङ्कज, पुन्य प्रसादे फरसै हो ॥ मु० १ ॥ प्रभु दरशण घनघोर घटालख, मोर नयन युग तरसै हो। मु०। भविजन चात्रक प्रभुगुण गावत, भावत भावन झरसै हो ॥ मु० २ ॥ धर्म ध्वनि जाकै उप-जत खेती, कर्म निरस होय निरसै हो। मु०। बाल प्रसाद प्रभुजीके आतम, परमातम प्रभु सरसै हो ॥ मु० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्त। जन्म० श्रीमत० श्रीमुनि सुव्रत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं स्वाहा। इति अठारमी पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ उगणीसमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नमिजिन पूजो भावसों, भविक भक्ति मनलाय
भाव सुद्ध जिन पूजतां, दुरगति दूर पुलाय ॥ १

॥ राग मालवी गौड़ी ॥

॥ सव अराति मथन मुदार धूपं (एचाल) ॥

नमि जिनेसर जग दिनेसर, पूजो भविजन भावरे
जगतपति जिनराज साहिव, भव समुद्रनो नावरे ॥ न० १
इन्द्र चन्द्र सुरेंद्र नर सुर, पूजनको जसु चावरे. तरण तारण कृपा सागर, सेवनको अव दावरे ॥ न० २ ॥ पुन्य उदय प्रभु दरशन पायो, आनन्द कन्द सुभ भावरे । बाल कहै प्रभुके चरणकी, शरण मोहि सुहावरे ॥ न० ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने० अनं० जन्म० श्रीमत्० नमि जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः । इति उगणिसमी पूजा ॥ १९ ॥

॥ अथ बीशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पारश पारशनाथका, गुणगातां गहिगट्ट ।
कष्टटलै संपति मिलै, मनवंछित फलथट्ट ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ सांवरीया स्वामीजी अब मोहि तारो (एचाल) ॥

सांवरीया साहिबकी बलिहारी। सां०। अश्वसेन तात वामा देवी माता, पाश जिनन्द है सुखकारी ॥ सां० १ ॥ जाके गुणको पार न पावै, इन्द्र नरेंद्र नर नारी। सां०। भव भव भमतां प्रभुजीमें पाया, दुरगति दूर निवारी ॥ सां० २ ॥ अबमें प्रभुविन और न चाहुं, एही तुझमन इकतारी। बालकहै प्रभु साहिब मेरै, शिव सुखदो मो हितकारी ॥ सां० ३ ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

॥ तेज तरण मुख राजै। हांओ मुख० (एचाल) ॥

भविजन शिखर समेत वधावो। भ०। वीश जिनेसर मुगत सिधाए, ए तीरथ जग चावो ॥ भ० १ ॥ द्रव्य भावकरी पूज रचावो, त्रिभुवन पति गुणगावो। समकित पुष्टालम्बन कारण, ए सम ओर न भावो ॥ भ० २ ॥ सकल सङ्घ मुर्शिदाबादमें, आनन्द अधिक वढ़ावो। भक्ति भावसें प्रभुजीकुं पूज्या, मन वंछित फल पावो ॥ भ० ३ ॥ सम्वत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ, कार्त्तिक सुदि पणचावो। जिन सौभाग्य सूरी सर गुणनिधि, खरतर गछपति चावो ॥ भ० ४ ॥ अमृत लाभ समुद्र पसायें, पूज रची भवि भावो।

बालचन्द परमातम प्रभुका, हरष हरष गुण गावों ॥ भ० ५
ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनन्तानन्त ग्यानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमत् पार्श्व जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः। इति बीशमी पूजा ॥ २० ॥

॥ राग कड़खो ॥

शिखर गिरि तीर्थंकर वीश जिनवर मुदा, भक्ति भर भविक वर पूज करीयै। अष्टविध विविध धरि सिद्धि नवनिधि सही, सुघट घट सम्पदा प्रगट वरियै ॥ शि० १ ॥ विकट वटकर्मकी जाट दूरै करां, विबुध बुध आतम निज सुद्धि धरियै। चरण जिन शरण गहि भव तरण जन लहै, चरण दरशण लही ज्ञान चरियै ॥ शि० २ ॥ धन्य दिन आज जिन राज गिरराज चढ़, दरस लहि सरस सन्सार दरियै। धर्म धर मगन जिन भक्ति पूरण गही, दुराति गति दुःखसे दूर टरियै ॥ शि० ३ ॥ अष्ट नभ निधि सदा सिद्धि सुद मायमें पूज करि शक्ति निज भक्ति भरियै। बाल प्रतिपाल सुविसाल गुण गावतां, धार भव वार निधि पार तरियै ॥ शि० ४ ॥

॥ * इति श्री बालचन्दजी उपाध्याय कृत समेत
शिखर गिरि पूजा सम्पूर्णम् * ॥

॥ अथ नवपद मण्डल पूजा विधि ॥

प्रथम सुन्दर अङ्गोपाङ्गवाले नव स्नात्रिया मन्त्रित जलसे स्नान करे। (स्नानमन्त्र) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृत श्रावय २ स्वाहा। इस मन्त्रसे जलमन्त्रे। पीछे ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पांपां वांवां अशुचि शुचि भवामि स्वाहा। इस मन्त्रको सातबेर पढ़ता हुआ स्नान करे। पीछे, ॐ ह्रीं आं क्रों नमः। सातबेर इस मन्त्रसे वस्त्र शुद्ध करके पहरे। पीछे, ॐ आं ह्रीं क्रों अर्हते नमः। इस मन्त्रसे सातबेर गुरुपास केसर मन्त्रायके तिलक करे। पीछे, ॐ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वल्गु २ सुमणसे सोमणसे महु महु रे। ॐ कवली कः क्षः स्वाहाः। इस मन्त्रसे मोली मेंढल मरोड़ा फली मन्त्रायके हाथमे बांधे और, नव मण्डलजीके चारुं तरफ मोली मेंढल बांधे, सोभी इसी मन्त्रसे मन्त्रायके बांधे। इसीतरे अपना अङ्ग शुद्ध करणे

स्नात्रिया गुरुके सन्मुख हाथ जोड़के बैठे। जब गुरु, ॐ परमेष्ठि० स्तोत्र पढ़के अङ्गरक्षा करै। अङ्गरक्षा मन्त्र। ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं। आत्मरक्षा करं वज्रं, पञ्जराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहन्ताणं, शिरस्कं शिरसिस्थितं। ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटम्वरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अङ्गरक्षाति शायिनी। ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्वसाहुणं, मोचके पादयो शुभे। एसो पञ्च नमुक्कारो, शिला वज्र महीतले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणा सणो, वप्रोवज्र मयोवहिः। मङ्गलाणञ्च सव्वेसिं, खादिराङ्गार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहान्तञ्च पदं ज्ञेयं, पढ़मं हवइ मङ्गलं। वप्रो परिवज्रमयं, पिधानं देह रक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी। परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्व सूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदै सदा। तस्यनस्याद्भयं व्याधि, राधिश्चापि कदाचिनः ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा वज्रपिञ्जर स्तोत्र। यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै। पीछे, तीनवेर नवकार मन्त्रसे मन्त्रायके चोटीमें गांठ देवै। तथा, तीन नवकार गुणके सर्व स्नातियाके कानमें फुंक देवे। इतनी विधीता, हरकोई पूजा प्रतिष्ठा मण्डलादिकमें स्नातियांको प्रथम अवश्य करणी कराणी चाहियै। पीछे, मन्दिर-

जीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय, उन सबको पूजा करावे अष्टद्रव्य चढ़ावे। पीछे, चमेलीका तेलमें, हिंगलू वा सिंदूर मिलके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे। चांदीका वरग वा मालो प्रमुखसे अङ्ग रचना करै। अत्तर चढ़ावे। फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य, ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ऐसा बोलता हुवा चढ़ावे। पीछे, मण्डलजी के दहिणे पासे, १० दश दिग्पालके पट्टकी थापना करे। एकेक दिग्पालकी पूजा पढ़के, जल चन्दनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढ़ाता रहे। दशुं दिग्पालकी पूजा हुए पीछे, ऊपर कसुंबल वस्त्र बांधे। आगे सर्व द्रव्य चढ़ावे दीपक करै। पीछे, वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै। पीछे, सर्व स्नात्रियाकुं १८ स्तुतिसे देव वन्दन करावे। इहां १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मन्त्र तथा देव वन्दनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है. सो, परे शांति पूजामें लिखेंगे. इसी मुजब, सर्व विधि करावे. पीछे, मण्डलजीकी प्रतिष्ठा करे।

॥ अथ मण्डल प्रतिष्ठा विधि ॥

प्रथम दोनु पासे मोली सुत्रकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करें। इन दोनु दीपककों चार पहर अखण्ड रक्खे।

पीछे सोने, चांदी आदिका कलशमें अबोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करै। हाथमे कलश लेके ७ सात नवकार गुणें। ॐ ह्रीं जीरावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहा। इस मन्त्रसे ७ वार जलको मन्त्रायके मण्डलजीके चारो तरफ धारा देवै ऊपर जरा छींटा देके पवित्र करै। धूप खेवै. पीछे नवतारी मोली सुत्रका साढ़े तीन फेंटा मण्डलजीके बाहर कर देवै। पूर्वोक्त मन्त्रसे मन्त्रके मोली तथा मेंढ़ल मरोड़ा फली चारो तरफ बांधे। पीछे केशरकी कटोरी हाथमे लेके। ॐ आं ह्रीं श्रीं अर्हते नमः। इस मन्त्रसे मन्त्रके मण्डलके ऊपर केशरका छींटा देवे। ऊपर चावलको साथियो करै। टीकी देवे. मण्डलके अगाड़ी चावलको साथियो वा नन्द्यावर्त्त करके ऊपर नारियल रुपियो भेट धरे। पीछे केशर, चन्दन, कुंकुम लेकर मण्डलजीके चारो तरफ तीन रेखा आलेखन करे। पीछे वाशक्षेप, पुष्प हाथमे लेके। ॐ भूरसी भूतधात्री विश्वाधारे नमः। इस मन्त्रसे सातवेर मन्त्रके मण्डलभूमि तथा पीठकी पूजा करै। फेर आचार्य गुरु वाशक्षेप हाथमे लेके। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पीठाय नमः। इस मन्त्रसे ७ वेर मन्त्रके मण्डल पीठकी पूजा करे। पीछे स्नातिया हाथमे पुष्प, चावल लेलेके तीन वेर मण्डलको वधावे। नीचे चावलको साथियो करके रुपियो नारियल थापनाको धरै। पीछे स्नातिया मन्दिरके

भीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रिगड़ा ऊपर मन्त्र पड़के स्थापन करै। स्थापन मन्त्र। ॐ नमो अर्हत परमेश्वराय, चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग् कुमारी परिपुजिताय। चतुषष्टि सुरासुरेन्द्र सेविताय, देवाधिदेवाय त्रैलोक्य महिताय. अत्र पीठे तिष्ठ २ स्वाहा। इस मन्तको ७ वेर पढ़के, नवप्रतिमा वा एकप्रतिमा स्थापन करे। इसितरे मण्डल प्रतिष्ठा करके, पीछे सिद्धचक्र पूजा शुरू करे। प्रथम एक रकेवीमे सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद ध्वजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत, फल, दीप, धूप हाथमे लेके अरिहन्त पदकी पूजा पढ़ै। यथा, अथाष्टदल मध्याब्ज, कर्णिकायां जिनेश्वरान्। आर्हिभतो-ल्लसद्बोधा, नाम्नतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषेंधन धूमकेतु, नपार सन्सार समुद्रसेतून्। यजे समस्तातिशयैक हेतून्, श्रीमज्जिनान्जाम्बुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मन्त्रसे अर्हत पदकी थापना पूजा करे, सर्व द्रव्य चढ़ावे। पीछे रकेवीमें लाल गोला, लाल ध्वजा, लाल वस्त्र, ८ मानक रत्न, ३१ मूंगा, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके सिद्ध पूजा पढ़े। यथा, तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्तादि गुणात्मकान्। निःश्रेय सम्पदं प्राप्तान्, निदधे भक्ति निर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्व पत्र परितः प्रणष्ट दुष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि। प्राप्तान्नरान्सिद्धि गतंत वोतान्

सिद्धान् यजे शान्तिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा । पूर्व दिशकी तरफ सिद्ध पदकी स्थापना पूजा करै, सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ इति ॥ पीछे रकेबीमें पीलो गोली पीली ध्वजा, पीलो वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमे लेके आचार्य पदकी पूजा पढ़ै । यथा, स्थापयामिततः सूरीन्, दक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पंचधाचारान्, षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा, नाचारयंतः स्वपरान् यथेष्टं । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थः, मभ्यर्च्चयाम्यक्षतगन्धधूपैः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरिभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशको तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ पीछे हरितगोलो हरित वस्त्र, हरामुंगका लड्डु, हरी ध्वजा, ४ इन्द्रनील, २५ मरकत रत्न पन्ना, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमे लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढ़ै । यथा । द्वादशांग श्रुताधारान्, शास्त्राध्ययन तत्परान्. निवेशयाम्युपाध्यायान, पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्यै, पठंन्तियेन्यानपि पाठयन्ति । अध्यापकां स्तानपराब्जपत्रे, स्थितान्यविन्नान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा पश्चिम दिशकी तरफ उपाध्याय पदकी स्थापना पूजा करै । इति ॥ पीछे रकेबीमें श्याम गोलो, श्याम वस्त्र, श्याम

ध्वजा, उड़दकालड्डू, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्ट रत्न, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमे लेके साधूपदकी पूजा पढ़ै। यथ व्यख्यादिकर्म कुर्वाणान्, सुभध्यानैक मानसान्। उदक प गतान् वरान्, साधुवाशीस सुव्रतान्॥ ९॥ वैराग्यमन्तर्व चसि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादसधा शरीरे। येषा मुदक्यवग तान् सुकृतान् पवित्रान्, साधून्सदातान् परिपूजयामि॥ १०॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व साधुभ्योनमः स्वाहा॥ ५॥ उत्तर दिशकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे॥ इति॥ पीछे रकेबीमें सपेद गोलो, सपेद ध्वजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि श्वेतद्रव्व हाथमे लेके दर्शण पदको श्लोक बोलके चढ़ावे यथा॥ श्लोकः॥ जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा। लक्षणे दर्शनेयजे॥ मिथ्यात्व मथनं शुद्धं। नक्त मीशान् सद्दले॥ ११॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहा॥ ६॥ ईशान कूणें दर्शन पदकी स्थापना पूजा करे॥ इति॥ पीछे रकेबीमें ५१ मोती श्वेत गोलो, श्वेत ध्वजा, चावलका लड्डु आदि श्वेतद्रव्य हाथमे लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढ़ावे॥ श्लोक॥ मशेष द्रव्यपर्याय। रूपमेवाव भासकं॥ ग्यानमाग्नेय पत्रस्थं पूजयामि हितावहं॥ १२॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा॥ ७॥ अग्निकूणकी तरफ ग्यानपदकी स्थापन पूजा करे॥ इति॥ फेर रकेबीमें सपेद गोलो, सपेदध्वज

७० मोती, श्वेत वस्त्र आदि श्वेत द्रव्य हाथमे लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढ़ावे ॥ श्लोकः ॥ सामायिकादिभिर्भेदै श्चारित्रं चारु पंञ्चधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं । पत्रैह नैऋते क्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग चारित्राय नमः स्वाहा ८ ॥ नैऋत कूणकी तरफ चारित पदकी स्थापना पूजा करे इति ॥ पीछे रकेबीमें ५० मोती, श्वेत गोलो, श्वेत ध्वजा, आदि सर्व द्रव्य हाथमे लेके, तप पदको श्लोक बोलके चढ़ावे श्लोकः ॥ द्विधा द्वादशधाभिन्नं । पूतेपत्र तपःस्वयं ॥ निधाय यामि भक्त्यात्र । वायव्यां दिशि शर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ अथ अर्घं ॥ निःस्वेद-त्यादि दिव्यातिशय मयतनून् श्री जिनेन्द्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदाचार साराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुन्दरण्यादि संज्ञं । स्तत्सिद्ध्यै पाठ-कानां यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थमष्ट दलं पद्मं । पूरये दर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतै प्रणवाद्यश्च । पदै-र्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असि आउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानन्त चतुष्टय परमात्मने तुभ्यं नमः ॥ इति मूलमन्त्रः ॥ इति सिद्धचक्र प्रथम वलय

मूल पूजा विधि सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

प्रथम वलयमे एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एवं अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मण्डलके मध्यभागमे होय। उनोंकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करे। पीछे दूसरा वलय में चूड़ीके आकार १६ कोठा होय। जिसमें, एकेक कोठाके अनन्तर आठ कोठामे अ वर्गादि आठवर्ग स्थापन करे। और एकेक कोठा वीचमे खाली रहा है। उसमे अनाहत पद, ॐ ह्रीं नमो अरिहन्तानं। ऐसा पद स्थापन करे। पीछे एक रकेबीमे मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां लेके खड़ा रहे। अनाहत पदमें मिश्री, लवङ्ग चढ़ावे। और आठ वर्गमें दाखां चढ़ावे। यथा, ॐ ह्रीं नमो अरिहन्तानं। मिश्री लवङ्ग चढ़ावे ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॐ ह्रीं स्वर वर्गाय नमः ॥ २ ॥ इहां १६ दाख चढ़ावे। ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं। मिश्री लवङ्ग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ। ॐ ह्रीं वञ्जन क वर्गायै नमः ॥ ४ ॥ १६ दाख चढ़ावे। ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ ५ ॥ चछजझञ। ॐ ह्रीं च वर्गायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ ७ ॥ टठडढण। ॐ ह्रीं ट वर्गायै नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ ९ ॥ तथदधन-

ॐ ह्रीं त वर्गाये नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ ११ ॥ पफबभम। ॐ ह्रीं प वर्गाये नमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ १३ ॥ यरलव। ॐ ह्रीं य वर्गाये नमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं नमो अरिहन्ताणं ॥ १५ ॥ शषसह। ॐ ह्रीं श वर्गाये नमः ॥ १६ ॥ पहला अ वर्गसे, प वर्गतक, वर्गदीठ १६ सोले दाख चढ़ावे। सब १६ द्राख (और) यरलव १ शषसह २ यह दो वर्गमे ६४ द्राख चढ़ावे। इति दूसरा वलय पूजा विधिः सम्पूर्णम्।

॥ अथ तिसरी वलय पूजा ॥

अब तीसरा वलयमे चार दिश, चार विदिशमे आठ परमेष्ठी पद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै। इस आठ कोटाके बीच बीचमे वलाका तीन तीन देवे। तीनुं वलाका में २४ खाना हुवै। एकेक खानेमें दोय दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें २४ घरमे ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना।

॥ अथ लब्धिपद पूजन विधिः ॥

आठ परमेष्ठी पदोंमे, ॐ ह्रीं परमेष्टिने नमः स्वाहा। ऐसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढ़ावे और लब्धिपदका नाम बोलके, खारकां ४८ चढ़ावे. यथा, ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिनांणं १

ॐ ह्रीं अर्हं नमो ओहि जिनाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमो परमोहि जिनाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वोहि जिनाणं ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धिण ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वीय बुद्धिणं ॥ ७ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं संबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वोहि बुद्धाणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जु मईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्विणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्विणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठङ्ग निमत्त कुशलाणं १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्ढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लद्धीणं २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पणासमणाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेणं २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पियासवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइ महावीर वद्धमान बुद्ध रिसीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं

अर्हं णमो उग्गतवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महानसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वद्धमानाणं ॥ ३३ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महतवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाण ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गणाणं ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमो सही पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताण ॥ ४२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताणं ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमा सव्वोसही पत्ताणं ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मनवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण वलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीणं ॥ ४८ ॐ ह्रीं अर्हं अडयाललब्धि पदेभ्यो नमः। इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमे वलयमे खारकां सब ४८ चढावे। पीछे मंडलजीके गलेके स्थानके ह्रींकारजी स्थापन किया है, (जहांसे) साढातीन बलाका, मंडलजीके चौतरफ देके नीचे (क्रों) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम बलयमें आठे दिशःये आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाड़मफल चढावे। यथा, ॐ ह्रीं अर्हत पादुकाभ्यो नमः ॥ १ ॥ दाड़म चढावे) ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्यो नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य

पादुकाभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरु पादुकाभ्यो नमः ॥ ४ ॐ ह्रीं परमगुरु पादुकाभ्यो नमः॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरु पादुकाभ्यो नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तगुरु पादुकाभ्यो नमः ७ ॥ ॐ ह्रीं अनन्तानन्त गुरु पादुकाभ्यो नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री अष्टगुरु पादुकाभ्यो नमः स्वाहा । इसीतरे छठावलयमे ८ दाड़म चड़ावे । पीछे सातमा वलयमे आठ दिशायें जयादिक ८ देवीकों स्थापन करके ८ नारङ्गी चड़ावे । यथा, ॐ ह्रीं जयायै नमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं जंभायै नमः स्वाहा २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायै नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः स्वाहा । ५ ॥ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अपराजितायै नमः स्वाहा ७ ॥ ॐ ह्रीं अंधायै नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ऐसें सातमा वलयमे ८ नारङ्गी चड़ावे । पीछे आठमा वलयमे १६ विद्या देव्याकों स्थापन करके चांदीका वरग लगाइ भइ १६ सुपारयां चढ़ावे यथा, ॐ ह्रीं रोहण्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्तै नमः ॥ २ ॐ ह्रीं बज्रसृंखलायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं बज्रांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं चक्रश्वयै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरषदत्तायै नमः ६ । ॐ ह्रीं कालै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महाकालै नमः ॥ ८ ॐ ह्रीं गौ यें नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्य्यैं नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यै नमः

१२ ॥ ॐ ह्रीं वैरोट्याय नमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अच्छुताये नमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मानस्यै नमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं महा-मानस्यै नमः ॥ १६ ॥ इसीतरे आठमा वलयमे चारुं तरफ १६ विद्यादेवीका १६ सुपारी चढ़ावे । पाछे नवमा वलयके वामपासे २४ शाशन देव्यांको स्थापन करके २४ सुपार्‍यां चढ़ावे । यथा, ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ अजित वलायै नमः ॥ २ ॥ ॐ दुरितार्‍यै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायै नमः ॥ ६ ॥ शान्तायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियै नमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतार-काय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायै नमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ चण्डायै नमः ॥ १२ ॥ ॐ विदितायै नमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ कन्दर्पायै नमः ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यै नमः ॥ १६ ॥ ॐ वलायै नमः १७ ॥ ॐ धारण्यै नमः ॥ १८ ॥ ॐ धरण प्रियायै नमः ॥ १९ ॥ ॐ नरदत्तायै नमः ॥ २० ॥ ॐ गान्धार्यै नमः ॥ २१ ॥ ॐ अम्बिकायै नमः ॥ २२ ॥ ॐ पद्मावत्यै नमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायै नमः ॥ २४ ॥ इसीतरे वामपासे, २४ देव्यांकी स्थापना करे । पीछे, दक्षिणपासे २४ यक्ष राजकी स्थापना करके २४ सुपारी चढ़ावे । यथा, ॐ ब्रह्म-शान्तये नमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वाये नमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमे-

धाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ भृगुटये नमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ २० ॥ ॐ कुवेराय नमः ॥ १९ ॥ ॐ यक्ष राजाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ गन्धर्वाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ गरुड़ाय नमः १६ ॥ ॐ किन्नराय नमः ॥ १५ ॥ ॐ पातालाय नमः ॥ १४ ॐ षण्मुखाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमाराय नमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्ष राजाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ ॐ अजिताय नमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ मातङ्गाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ तुम्वरवे नमः ५ ॥ ॐ यक्ष नायकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखाय नमः ॥ ३ ॐ महा यक्षाय नमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखाय नमः ॥ १ ॥ इसीतरे नवमा वलयके दहिने पासे २४ पदकी थापना करके २४ सुपारी चढ़ावे। पीछे, चार दिशांये ४ द्वारपालकी स्थापना करके। पीला वल वाकुल चढ़ावे। यथा, ॐ कुमुदाय नमः ॥ १ ॥ (पूर्वदिशि) ॐ अञ्जनाय नमः ॥ २ ॥ दक्षिणादिशि) ॐ वामनाय नमः ॥ ३ ॥ (पश्चिमादिशि) ॐ पुष्प दन्ताय नमः ॥ ४ ॥ (उत्तरदिशि)। पीछे चार विदिशकी तरफ चार वीरपदे कृष्ण वलवाकुल चढ़ावे। यथा, ॐ माणभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूणभद्राय नमः ॥ २ ॐ कपिलाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ पिङ्गलाय नमः ॥ ४ ॥ इसी तरह दशमा वलयमें आठुं दिशायें। ४ द्वारपाल। ४ वीर

स्थापन करै। पीछे, पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसे किया हुवा, सिद्धचक्रजीके गलेके स्थानक, नव विधान पदे, नव सोने चांदी आदिकका कलशामे यथाशक्ति रोकनानो घालके स्थापन करे। यथा, ॐ नैसर्प्पिकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ पांडुकाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पिङ्गलाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्व रत्नाय नमः ॥ ४ ॥ महा पद्माय नमः ॥ ५ ॥ ॐ कालाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ महा कालाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ मानवाय नमः ॥ ८ ॐ शङ्खाय नमः ॥ ९ ॥ इसीतरे मुखस्थानके नवविधान पदे ९ कलश स्थापन करे। पीछे, कोहलोफल हाथमे लेके। दक्षिण नेत्रके बराबर पासमे बङ्गलीका आकार किया है। जहां, ॐ ह्रीं विमल स्वामिने नमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढ़ावे फेर, कोहलोफल हाथमे लेके वाम नेत्रपासे बङ्गलीमें, ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ २ ॥ ऐसा कहके चढ़ावे। पीछे, तीसरो कोहलोफल हाथमे लेके, अधःपींदीके दहिणे पासे बङ्गलीमे, ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ॥ ३ ॥ ऐसा बोलके चढ़ावे। पीछे, चौथी कोहलो फल हाथमे लेके नीचे पींदाके वामपासे बङ्गलीमे, ॐ अमसिद्ध सिद्धचक्राधिष्ठायकाय नमः ॥ ४ ॥ ऐसा बोलके चढ़ावे। पीछे, दशे दिशाये इन्द्रादिक दश दिग्पालको स्थापन करे। बन सकेतो अपना २ वर्ण मुजब वस्त्र, नैवेद्य, पुष्पादि द्रव्य चढ़ावे। अथवा सर्वको एक द्रव्य सर्व समान

चढ़ावे। यथा, ॐ इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण, चन्दन, केशर, चम्पो, द्राख, पीलो वस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणा, आदि सर्व द्रव्य चढ़ावे ॥ १ ॥ अग्निकोणे, ॐ अग्नये नमः ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ २ ॥ दक्षिणदिशे, ॐ यमाय नमः ॥ ३ ॥ कालेवर्णका वस्त्रादि चढ़ावे ॥ ३ ॥ नैऋतकोणे, ॐ नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादि चढ़ावे ॥ ४ ॥ पश्चिमदिशे, ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ धूसर वर्णका सब द्रव्य चढ़ावे ॥ ५ ॥ वायवकोणे, ॐ वायवे नमः ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक छढ़ावे ॥ ६ ॥ उत्तरादिश, ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ७ ॥ ईशाणकोणे, ॐ ईशाणाय नमः ॥ ८ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ८ ॥ अधोदिशि, ॐ नागाय नमः ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ९ ॥ ऊर्द्धदिशि मस्तके, ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावे ॥ १० ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करे। पीछे, नीचे पींदी स्थापनके बीचमे ९ कोठा किया हुवा है. तहां, नवग्रहकी स्थापन पूजा करे। यथा, ॐ सूर्याय नमः १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे। ॐ सोमाय नमः सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ २ ॥ ॐ भोमाय नमः लाल रङ्गकी वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय नमः।

मुङ्गेरङ्गका वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतये नमः पीलेवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः। सपेद वर्णका नांदोल वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चराय नमः। नील रङ्गका वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ७ ॥ ॐ राहवे नमः। काले रङ्गका वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवे नमः। छींटरङ्ग वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावे ॥ ९ ॥ इसीतरे नीचे नवग्रहकी स्थापना करे। पीछे, स्नात्र नवपदजीकी पूजा करायके, आरती नवपदजीकी करै। पीछे, नवपदको चैत्यवन्दन करै। उप्पन्नसन्नाण० तथा, जो धुरि श्रीअरिहन्त मूलदढ़ पीठ पइठ्ठियो। सिद्ध सूरि उवज्झाय साहु चिउ साह गरठ्ठिउ। दंशण नाण चरित्त तव पड़िसाहे सुन्दरू। तत्तक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पय दल डम्बरू। दिशि वाल जक्ख जक्खणी पमुह सुर कुशमेहि अलङ्कियो। सो सिद्धिचक्क गुरु कप्पतरु अह्ममन बञ्छिय दियउ॥ १ ॥ पीछे, जंकिंचिणमोत्थुणं० नमोर्हत सिद्धा० कहके, जय वीयं राय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे। नवपदं स्तुति कहे। पीछे, गुरुके पास आयके वाशक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरुपूजा करै। धूपखेवै। रोकनाणा चढ़ावे। पीछे, यथाशक्ति साधर्मी वात्सल्य करै। इति नवपद मण्डल पूजा विधिः।

—

अब जानना चाहियं कि जब कांई श्रीमन्त ओलीकी तपस्या करै तब तो छए महिने मण्डल पूजा विस्तार विधी साथ करता रहै । और तपस्या ४॥ साढ़े चार बरसमे पूरण होय तब, बड़ा उच्छवके साथ । मण्डल रचना पूजा करै । उद्या- पन करै । सम्पूर्ण देवखातै, ग्यानखातै, गुरुखातैका उपग- रण नव नव करायके । प्रथम धर्मशालामे सुशोभित करै । दश पनरैदिन जल जात्रादि अनेक तरैका उच्छव करै । पीछे देवका देवखातै देवै । ग्यानका ग्यानखातै । गुरुका गुरुखातै उपगरणादि द्रव्य देवै । और, ऋद्धि रहित क्रिया भावसे सम्पूर्ण करै । द्रव्य पूजा अपनी शक्ति मुजब करै । और, पञ्चायती सङ्घ तरफसे मङ्गलीक अर्थ छए महिनेसे मण्डल रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधि सहित करता रहै. ओली करनेका विधि (तथा) नवपद पूजा, स्तवन, थूई, सम्पूर्ण जाननेका मतलब होय, तो, बहुदर्शी विद्यान गुरु, यतियोंसे जानकर, उस मुजब करै करावै ।

॥ * इति श्री सिद्धचक्र बड़ी नवपद मण्डल पूजा विधि सम्पूर्णम् * ॥

॥ ❀ अथ शांति पूजा विधिः ❀ ॥

शुभदिन शुभ मुहुर्तिमे श्रीसङ्घ वा कराने वालेके नामसे चन्द्र बलवान देखकर, श्री गुरु महाराजके उपदेशानुसार, समस्त श्रीसङ्घ मिलकर जिन गृहमे आकर प्रथम समाशरण पर जिन प्रतिमा और पञ्च परमेष्ठीका पट्ट स्थापन करे। जिनराजके सन्मुख धोया हुवा, पवित्र निश्चल एक पाटिया स्थापन करै। तदुपरि केशर चन्दनादि द्वारा तिलक करके ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ इस प्रकार अनुक्रमसे चावलकी ढिगली स्थापन करै। तथा, श्री मूलनायकजीके दक्षिण पासे इन्द्र १ अग्नि २ यम ३ नैऋत ४ वरुण ५ वायु ६ कुबेर ७ ईशान ८ ब्रम्ह ९ नाग १० यह दिग्पाल स्थापन करै। और वाम पासे आदित्य १ सोम २ मङ्गल ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनि ७ राहु ८ केतु ९ यह नवग्रह स्थापन करै। पश्चात् उसी दिशामे चैत्त देवता १ क्षेत्रपाल देवता २ देश

देवता ३ स्थापन करे। इसी प्रकारसे २५ ढिगली स्थापन करे। भगवानके सन्मुखमे एक बड़ा तथा एक छोटा तांबे, पीतल, मिट्टी आदिका हण्डा, खड़िया मिट्टी या सुफेद मिट्टा पुता हुआ, तथा, चार चार केशर कुमकुमका साथिया किया हुआ रक्खे। एक ऊंची तथा एक नीची काठकी तिपाई रखना चाहिये। निची तिपाई पर बड़ा हण्डा तथा ऊंची तिपाई पर छोटा हण्डा रखना चाहिये। छोटे हण्डेके निचे एक छेद करदे. दोनो मटकेके भितर साथिया करना चाहिय. बड़े हण्डेके तिपाईके नीचे चावलका साथिया करके उस साथियके ऊपर नारियल और स्थापनाका रुपया रखना चाहिये. हण्डे ऊपर मोली सुत्र वटके एक एक कोनेमे इक्कीस. पञ्चरङ्गी खजली पोवे। इस तरह चारो कोनेमे ८४ खजली पो कर तनी बांधनी चाहिये। नारियलके आकारमे मोली, सूत्रका गोला बनाकर बड़े हण्डेके भीतर जोकि नीचे है लट-कता रहे। ऊपरकी मोली छोटे हण्डेके नीचेके छिद्रमे पो कर उस हण्डेके भीतर देकर ऊपर जो तनी बंधी है उसके साथ बांध दे। यदि श्री सङ्घके तरफकी शान्ति पूजा होवे तो श्री मन्दिरजीसे अथवा एक सज्जन करावे तो उनके घरसे एक चतुरञ्चल सधवा अर्थात् माता, पिता, सासु, ससुर, चारो जीता हो, उस स्त्रीको अच्छा वस्त्र अभूषण पहराय कर कह-

सके भीतर कुंकुम केशरका स्वस्तिक करके चावल सुपारी पञ्च रत्नकी पोटली धर कर मुख पर नारियल १ ढकनेकी तरह लगाय कर लाल कपड़ा मौली सूत्रसे बांधे। ऊपर चार साथिया कर पूर्वोक्त स्त्रीके मस्तक पर रक्खै। गीत गान पूर्वक नाना प्रकार वाजित्रादि उच्छव सहित जिन मन्दिरमे लावे समवसरणके सन्मुख चावलका साथिया कर ऊपर कलश स्थापन करै। पश्चात् पांच दश सज्जन द्रव्य-भावसे अपना अङ्ग शुद्ध करै। केशर मन्त्रायके तिलक करै दक्षिण हस्तमे मौली कङ्कन डोरा मन्त्रायके बांधे। और गुरुके पास मन्त्रसे आत्म रक्षा करावै (सर्व विधि श्रीमंडल जीके पूजासे जानना) पश्चात् एक खुमचामे २५ नागरवेल का पान रखे। हर एकमे फूल, अक्षत, नैवेद्य, फल, द्रव्यादि धरके तैयार रखे और पञ्चामृत, फूल, फूलमाला, अक्षत, नैवेद्य, फल, मेवा, अत्तर, गुलाबजल, केशर, कपूर, रोली, मोली आदि पूजापे का सर्व द्रव्य यथा शक्ति तैयार रखे।

॥ अथ दश दिग्पाल पूजा विधिः ॥

प्रथम श्री ज्ञानपूजा अष्टप्रकारी करावे। पश्चात् ज्ञान, दर्शन, चारित्रके ढिगले पर वासक्षेप करके, तीन पानके सहित चढ़ावे, और चैत्य देवता क्षेत्र देवताके ढिगले पर द

पान चढ़ावे, पश्चात् १० दिग्पालके पटे पर एक एक दिग्पाल जीको जलका छिंटा देकर वासक्षेप कर, टीकी दे फूल तथा चढ़ापे सहित पान चढ़ा कर मन्त्र सहित पूजा करे। ॐ इन्द्राय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिकराय, इह अस्मिन् जम्बुद्वीपे दक्षिण भारतार्द्ध क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक जिन चैत्ये शांति पूजा महोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ उदय अभ्युदयं कुरु २ स्वाहा। ॐ इन्द्राय नमः॥ १॥ ॐ अग्नये सायु॰ सवा॰ सपरि॰ अस्मिन् जंबु॰ दक्षि॰ अमुक॰ अमु॰ शांतिपूजा॰ आग॰ बलि॰ उदय म॰ स्वाहा। ॐ अग्नये नमः॥ २॥ ॐ यमाय सायु॰ स्वाहा। ॐ यमाय नमः॥ ३॥ ॐ नैऋताय सायु॰ स्वाहा। ॐ नैऋताय नमः॥ ४॥ ॐ वरुणाय सायु॰ स्वाहा। ॐ वरुणाय नमः॥ ५॥ ॐ वायवे सायु॰ स्वाहा। ॐ वायवे नमः॥ ६॥ ॐ कुवेराय सायु॰ स्वाहा। ॐ कुवेराय नमः॥ ७॥ ॐ ईशानाय सा॰ स्वाहा। ॐ ईशानाय॥ ८॥ ॐ ब्रह्मणे सायु॰ स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे नमः॥ ९॥ ॐ नागाय नमः सायु॰ स्वाहा। ॐ नागाय नमः॥ १०॥ पश्चात् लाल वस्त्र मोलीसे उस पाटिये पर बांधे। और १० दीपक उसके सब दिशोमे रखे। और १ दीपक आगे जगा कर रखे। इसी तरह अष्टद्रव्य चढ़ापे सहित पान चढ़ा कर नवग्रहकी पूजा करे।

॥ अथ नवग्रह पूजन मन्त्र ॥

ॐ नमो आदित्याय, सायु० सवा० सपरि० अस्मि० दक्षि० अमु० अमु० शांति० आ० बलि० उदय मभ्युदयं कुरु २ अत्र पीठे तिष्ट २ स्वाहा। सूर्याय नमः ॥ १ ॥ ॐ नमो चन्द्राय सायु० स्वाहा। ॐ चन्द्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ नमो भौमाय सायु० स्वाहा। ॐ भौमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ नमो बुधाय सायु० स्वाहा। ॐ बुधाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये सायु० स्वाहा। ॐ बृहस्पतये नमः ॥ ५ ॥ ॐ नमो शुक्राय सायु० स्वाहा। ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ नमो शनैश्चराय सायु० स्वाहा। ॐ शनैश्चराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ नमो राहवे सायु० सवा० स्वाहा। ॐ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॐ नमो केतवे सायु० स्वाहा। ॐ केतवे नमः ॥ ९ ॥ पश्चात् पूर्ववत भगवानके वाम पासे पाटिये पर लाल वस्त्र मौलीसे बांधे वा दीपक ९ धरे और दीपक १ आगे धरे पश्चात् शुद्ध जलसे सधवा स्त्रीके हाथसे किया हुवा पांच रङ्गके धानका बाकुला वा पांच रङ्गकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करबो, मालपूवा, पांच रङ्गका लड्डु इत्यादि उत्तम २ खाद्य वस्तु सहित एक परातमे घृत, चिनि, अत्तर, गुलाब जल, पांचवर्ण फूल आदि सुगन्धि द्रव्य मिलाकर बल बाकुल तैयार करे और तिनवार इस मन्त्रसे उसपर वासक्षेप करावे।

॥ अथ वासक्षेप मन्त्र ॥

ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ नमो अरिहन्ताणं । ॐ नमो सिद्धाणं । ॐ नमो आयरियाणं । ॐ नमो उवाज्झायाणं । ॐ नमो लोए सव्व साहुणं । ॐ नमो आगास गामीणं । ॐ नमो चारण लद्धीणं । जे इमे किन्नर । किंपुरस, महोरग, गरुड़, गन्धर्व, जक्ख, रक्खस, पिशाअ, भूअ, डाइण पपभइओ । जिणघर निवासिणो । सन्निहियाय. तेसव्वे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसनाहिं । बलिपड़िच्छंता तुट्ठिकरा भवन्तु । पुट्ठिकरा सन्तिकरा भवन्तु । सव्वं जणं कुर्वन्तु । सव्व जिणाणं संहाण प्रभावओ । पसन्न भावतणे । सव्वत्थ ररकन्तु कुर्वन्तु । सव्व दुरियाणी नासन्तु । सव्वासिव मुवसमन्तु । सन्ति तुट्ठि पुट्ठि सिव सत्थयण कारिणा भवन्तु स्वाहा ॥ पश्चात उस बलवाकुलसे आधा विसर्जन के निमित ढाकके रख देना, और आधा मन्दिरजीके ऊपर स्नात्रिया १ चोटीका केश खोलकर दोनु हाथोमे लेकर खड़ा रहे। स्नात्रिया १० इस मुजब रखे। केशर १ फूल २ आरसी ३ धूपीया ४ दीपक ५ चँवर ६ घण्टा ७ जलकलश ८ मङ्गल वाजित्र १० फेर एकेक दिग्पालकी आह्वान मन्त्र उच्चारण कर क्रमसे उस दिशामे जल, केशर, फूल, बलवाकुल चढ़ावे। चामर करे, काच दिखावे, वाजित्र घण्टा बजावे, धूप खेवे,

और दीपक जगावे।

॥ अथ दशदिग्पाल आह्वान मन्त्र ॥

पूर्वकोणे–ऐरावत समारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः। सङ्घस्य शांतयेसोस्तु, वलि पूजां प्रतीच्छतु ॥ १ ॥ अग्निकोणे सदावन्हि दिशोनेता, पावको मेष वाहनः। सङ्घस्य० वलि० २ ॥ दक्षिण कोणे–दक्षिणस्यां दिशः स्वामी, यमो महिष वाहनः। सङ्घ० वलि० ॥ ३ ॥ नैऋत कोणे–याम्यापरांतरा लेसो, नैऋतः शव वाहनः। सङ्घ० वलि० ॥ ४ ॥ पश्चिम कोणे–यः प्रतीच्या दिशोनाथो, वरुणो मकरस्थितः। सङ्घ० वलि० ॥ ५ ॥ वायुकोणे–हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिम्मरुत्। सङ्घ० वलि० ॥ ६ ॥ उत्तरकोणे–निधान नवका रूढ़, उत्तरस्यां दिशः प्रभुः। सङ्घ० वलि० ॥ ७ ॥ ईशान कोणे–सिते वृषेधिरूढ़ः, ईशानांच दिशोविभुः। सङ्घस्य० वलि० ॥ ८ ॥ अधोकोणे–पातालाधिपति योंस्ति, सर्वदा पद्म वाहनः। सङ्घ० वलि० ॥ ९ ॥ ऊर्द्धकोणे–ब्रह्मलोक विभुर्योस्तु, राजहंस समाश्रितः। सङ्घस्य० वलि० ॥ १० ॥ पश्चात् कलशके भितर श्री शांतिनाथ भगवानकी प्रतिमा निश्चल पने स्थापन करे और वासक्षेप करके कलशके आगे कुसुमाञ्जलि १ लवणउतारण २ पहरावणी ३ मङ्गल दीपक ४ करे। उस दीपकमे मौलीकी बॅटी भई वत्ती और घृत

ऐसा रखे कि शांति पूजा पूरण होय वहां तक अवश्य अखंड रहे। चतुर्विध सङ्घ सहित गुरु इरिया वही पड़िक्कम ४ नव कार का काउसग्ग करके लोगस्स कहे। पश्चात् चैत्य वन्दन शक्र स्तवन कहे। अरिहन्त चेइयाणं०। बन्दन वत्तिया० अन्नत्थु०। एक नवकारको कावसग्ग करे। नमोर्हत सिद्धा० कहके, थुईकी गाथा कहे। यथा, यदं हि नमना देव, देहिनः सन्ति सुस्थिता। तस्मै नमोस्तु बीराय, सर्व विघ्न विघातिने १॥ लोगस्स० बन्दन० अनत्थु० कहके १ नवकार०। दूजी थूई कहै। सुरपति नत चरण युगा, न्नाभेय जिनादि जिनपति न्नौमी. यद्वचन पालन पराः, जलांजलिं ददतु दुःखेभ्योः २॥ इहां पुक्खरवरदी०। वन्दनवत्तिया०। कहके कावसग्ग करे। तीसरी स्तुति कहे। वन्दाति बन्दारु गणाग्रतो जिनाः सदर्थतो यद्र चयन्ति सूत्रतः। गणाधिपास्तीर्थ समर्थन क्षणे तदाङ्गिना मस्तु मनन्त सुकृये ॥ ३ ॥ इहां सिद्धाणं बुद्धाणं० अनत्थु० कहके १ नवकारको कावसग्ग करे। चौथी स्तुति कहे। यथा, शक्रःसुरा सुरवरैः सह देवताभिः, सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः। श्री बर्द्धमान जिनदत्त मति प्रवृत्तान्, भव्यान् जनाः भवतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ पीछे बैठके नमोत्थुणं० कहके खड़ा हुवे। श्री शांति नाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करोमि काउसग्गं। बन्दन वत्तिया०। अन्नत्थु०

कह्के १ नव० । रोग शोगादिभिर्दोषै, रज्ञिताय जितारये ।
नमः श्री शान्तये तस्मै, विहितानत शान्तये ॥ ५ ॥ ततः
श्री शान्ति देवता निमित्तं करेमि० । अन्नत्थु० १ नवकार ।
श्री शान्ति जिन भक्ताय, भव्याय सुख सम्पदं । श्री शान्ति
देवता देया, दशान्ति नपनीयतं ॥ ६ ॥ ततः श्री श्रुत-
देवता नि० । सुवर्ण शालिनी दयात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा,
श्रुतदेवी सदामह्य, मशेष श्रुतसम्पदं ॥ ७ ॥ ततः श्री भुवन
देवता निमित्त० । चतुर्बणाय सङ्घाय, देवी भूवन वासिनी ।
निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुख मक्षतं ॥ ८ ॥ ततः श्रीक्षेत्र
देवता निमित्त० । यासां क्षेत्र गतास्सन्ति, साधवः श्रावका
दयः । जिनाग्यां साधयं तस्ता, रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥ ९ ॥
ततः श्री अम्बिका देवता निमित्त० । अम्बानिहित डिम्बामे
रसिद्ध बुद्ध सुतान्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, बितनोतु
समीहितं ॥ १० ॥ ततः श्री पद्मावती देवता निमित्तं० क०
धराधिपति पत्नीया, देवी पद्मावती सदा, क्षुद्रो पद्रवतःसामां
पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ततः श्री चक्रेश्वरी देवता नि०
चंचश्चक्रधरा चारु, प्रवाल दल सन्निभा । चिरं चक्रेश्वरी देवी
नन्दता निवभाच्चमां ॥ १२ ॥ ततः श्री अच्छुप्ता देवता नि०
खड्ग खेटक कोदण्ड, वाण पाणि स्ताड्वित् द्युतिः । तुरङ्ग
गमना च्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे ॥ १३ ॥ ततः श्रीकुवेर

देवता निमित्तं० क०। मथुरा पुरी सुपार्श्वे, श्रीपार्श्व स्तूप राक्षिका। श्रीकुबेरा नगरारुढ़ा, सुतांकाऽवतुवो भयात् ॥ १४ ततः श्रीब्रह्म देवता निमित्तं० क०। ब्रह्मशांति समांपाया, दपायाद्वीवर सेवकः। श्रीमत्सत्य पुरेसत्या, येनकीर्त्तिः कृता निजा ॥ १५ ॥ ततः श्रीगोत्र देवता निमित्तं०। यागोत्रं पालयत्येव, सकला पायतः सदा। श्री गोत्र देवता रक्षां, शङ्करांतु नतां गिरां ॥ १६ ॥ ततः श्रीशक्रादि समस्त देवता निमि०। श्रीशक्र प्रमुखा यक्षा, जिन शासन संस्थिता। देवा देव्य स्तदन्येपि, सङ्घ रक्षंत्व पायतः ॥ १७ ॥ ततः श्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता निमि०। अन्नत्थु० चार लोगस्सको का० स्तुति कहै। श्रीमद्विमान मारुढ़ा, यक्ष मातङ्ग सेविता सामां सिद्धायिका पातु, चक्र चापेषु धारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स० कहके बैठै। चैत्य वन्दन० नमोत्थुणं० जयवीयराय पर्यन्त कहै। इसी तरे १८ स्तुतिसें देववांदै। (पीछे) सुन्दर सङ्गोपाङ्ग वाले सुशील स्त्री पुत्रादिक सहित। विवेक गुण धारक, आठ स्नात्रिया मुख कोश बांधके तीन तीन नवकार गुणे. जिसमे, दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनु तरफ खड़ा रहे। एक स्नात्रिया धूप खेतो रहै। १ स्नात्रिया फूल, चन्दन, वासक्षेप चढ़ातो रहै। दो स्नात्रिया लोटामे जल भरके दोनु तरफ धारा देनेंवाला कल-

शाने पूरता रहे। दो जना दोनुं तरफ चामर ढालता रहे। (प्रथम) गुरु आदि, सकल सङ्घ सांत सात वार नवकार गुणे। स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे। ऐसे सात धारा दे चूके (तब) गुरु मधुर स्वरे स्पष्ट अक्षरोसे, नमोर्हत् सिद्धाचार्यो० कहके, अजित शांति प्रमुख साते स्मरण गुणे। पीछे, भक्तामर बड़ीशांति, छोटी शांति गुणे। तथा सकल सङ्घमें जिसको साते स्मरण शांति शुद्ध आती होय। जब तो गुरुके साथे अपने मनमे साते स्मरण शांति गुणे। और नहि आवे सो सर्व सङ्घ नवकार मन्त्र गुणता रहे। साते स्मरण, तथा शांति गुणे। जहांतक अखण्ड ऊपर ले छोटे कलशेमे धारा देता रहे। छींक कोई न करे। कोई आपसमे अन्य सन्सारी कथा न करे। साते स्मरणादि सम्पूर्ण सर्व गुण चूके। पीछे तीन तीन नवकार गुणके कलश धरे। पीछे, नीचेका कलशमेसे, जिन प्रतिमा को निकालके अच्छीतरे अङ्ग लूणा करके केशर पुष्पादिकसे पूजा करे। भगवानकी अच्छीतरे अङ्गी रचना करावे। नाना प्रकारका नैवेद्य फल चढ़ाके, आरती उतारे। मङ्गल दीप करे। पीछे, शांति जल सर्व सङ्घ लगावे। घरमे लेजाके छींटे। शांति पूजाकी मोली गुरुके पास लेके राखड़ी बांधे. इससे, सम्पूर्ण सङ्घमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग

दोष दूर होके, शांति होय । अनेक प्रकारसे ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यको प्राप्त होय । पीछे, जो आधा बल बाकुल परात मे रखा हुवा है, सो लेके पूर्व वत् स्नात्रिया गुरुके साथ मंदर उपर जायके दश दिग्पालको विसर्जन करावे ।

॥ अथ दश दिग्पाल विसर्जन विधिः ॥

विसर्जन करनेका विधि पूर्व वत् जाननी इतना विशेष है, की आगच्छ २ के ठिकाने गच्छ २ कहै । यथा–ॐ नमो इन्द्राय । पूर्व दिग अधिष्ठाय काय. ऐरावत् वाहनाय. सहस्र नेत्राय. वज्रायुधाय. सपरिकराय. अस्मिन् जम्बुद्वीपे. अमुक नगरे. अमुक मन्दिरे. अमुक महोच्छवे. सर्वोपद्रवाद् बलिरक्ष रक्ष गच्छ २ स्वाहा । पूर्वदिशकी तरफ । ॐ इन्द्राय नमः ॥ १ ॥ अग्निकोणे–ॐ नमो अग्नि मूर्त्तये. शक्ति हस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष २ गच्छ गच्छ २ स्वाहा ॥ २ ॥ दक्षिण दिशे– ॐ नमो यमाय । दक्षिण दिगाधिष्ठाय काय । महिष वाहनाय । दण्ड आयुधाय । कृष्ण मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मिन० अमुक० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष रक्ष गच्छ गच्छ स्वाहा ॥ ३ ॥ इति नैऋत कोणे–ॐ नमो नैऋताय । खड्ग हस्ताय । सायु०

सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद् । बलिं रक्ष रक्ष गच्छ २ स्वाहा ॥ ४ ॥ पश्चिम दिशे—ॐ नमो वरुणाय । पश्चिमदिगाधिष्ठाय काय । मकर वाहनाय । सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवा० गच्छ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ वांयव कोणे— ॐ नमो वायवे । वायवाधिपति, ध्वज हस्ताय हरिण वाहनाय, सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवा० गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ उत्तर दिशे—ॐ नमो धनदाय उत्तर दिगाधिष्ठाय काय । नर वाहनाय । गदा हस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन० अमु० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष रक्ष गच्छ गच्छ स्वाहा ॥ ७ ॥ ईशान कोणे—ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । ईशानाधि पतये । वृषभ वाहनाय, सायु० सवा० सप० अस्मिन० अमु० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष रक्ष गच्छ गच्छ स्वाहा ॥ ८ ॥ ऊर्द्ध लोके—ॐ ब्रह्मेण । राजहंस वाहनाय । ऊर्द्ध लोकाधिष्ठाय काय । सायु० सवाहना० सप० अस्मिन० अमु० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष रक्ष गच्छ गच्छ स्वाहा ॥ ९ ॥ अधोलोके—ॐ नमो नागाय । पाताल निवासाय । पद्म वाहनाय । सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद् बलि रक्ष रक्ष गच्छ गच्छ स्वाहा ॥ १० ॥ इसी तरे क्रमसे दश दिग्पाल विसर्जन करै ।

पीछे, नीचे आकर दश दिग्पाल नवग्रहादि देवता को श्लोक पढ़के विसर्जन करै । यथा, शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्म्मसक्ताः । आयाता स्नात्र काले कलुष हृति कृते तीर्थनाथस्य भक्त्या ॥ न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिव सुखाः स्वास्पदं सांप्रतन्ते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमति कृत मुदो यांतु कल्याण भाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनंच यत्कृतं । तत्सर्वं क्षमृतं देवः, प्रसीद परमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानं नैवजानामि, नैवजानामि पूजनं, विसर्जनं नैव जानामि, त्वमेव शरणं मम ॥ ३ ॥

पीछे) यथा शक्ति ग्यान पूजा, गुरु पूजा, साहमी वात्सल्य करै । जैन याचकानें दान देवै ।

॥ * इति श्री शांतिक स्नात्र पूजा
विधि सम्पूर्णम् * ॥

॥ ❀ अथ श्री अबीर चन्दजी कृत चौदे सुपनाकी पूजा लिख्यते ❀ ॥

॥ दोहा ॥

आगम अगोचर अलख अज, अविनाशी अविकार। जिनवर बाणी सारदा, वशि मुझ मुख मझार ॥ १ ॥ अनुभव गुण दायक सदा, हित-उपदेशक जेह। प्रेमे प्रनमुं भावसे, सद गुरु पद कज तेह ॥ २ ॥ चवदह सुपना गायसुं, नव २ राग बनाय। आगम अनुसारे सही, सुनत शिव सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ राग ॥

॥ निरमोहिया तोसें अब न बोलुंरे (एचाल) ॥

जिस दिन जिनवर कुखमे आए, उस दिन माता बहु सुख पाए। तारण तरण जिनेसर प्यारा, सब दुख दूर निवारण हारा ॥ ता० १ ॥ पुण्य प्रबल प्राणी के योगा। उत्तम

घर भीतर बहु भोगा । ता० । ताविच सुन्दर सेजमें सूती, जिन माता सुष सहज सपूती ॥ ता० २ ॥ आधी राति समे बड़भागी, चवदह सुपना देखके जागी । ता० । कुञ्जर वृष सींह श्रीदेवी, कुशुमदाम शशी रवि ध्वज श्रेवी ॥ ता० ३ ॥ कुम्भं कलशने पदम सरोवर, समुद्र विमान रतनढिग सुंदर ता० । धूम रहित पावक सुख करणां, कहत अबीर ए चवदह सुपना ॥ ता० ४ ॥ इति पदम् ।

॥ अथ पहिली सुपना (गज) ॥
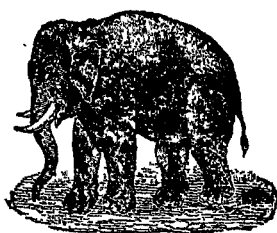
॥ दोहा ॥

अब अनुक्रम करिके कहु, चउदश सुपन विचार । देखा माता जिसतरै, तैसै मति अनुसार ॥ १ ॥ पहिलै देखा गज सुपन, गगन थकी उतरन्त । निज मुख माहे पैसता, त्रिकरण योग हसन्त ॥ २ ॥

॥ राग ॥

॥ नदी किनारे चामलके थांरा मन्दिर वन्यो केशो दासजी (एचाल) ॥

जय २ जिनमाता जग जननी निरखै सुपना सारजी। जय० । पहिले गजका सुपना देखा जैसा मोतीका हारजी जय० १ ॥ अति उन्नत वलवन्त गम्भीरा, लक्षण सहित उदार जी । जय० । सजल जलद सम गहिरा गाजै, रदन मनोहर च्यारजी ॥ जय० २ ॥ चन्द किरण अस रजत गिरीसा, उज्जल उदक फुंहारजी । जय० । कहत अवीर पुरंदर हाथी, सुख सम्पति दातार जी ॥ जय० ३ ॥ इति पहिला सुपना सम्पूर्णम् ।

॥ अथ दुसरी सुपना (वृष) ॥

॥ दोहा ॥

सुपन दुसरा वृषभको, करता सदा कल्याण ।
उसका अब वरणन करुं, सुनियो चतुर सुजाण ॥ १

॥ राग ॥

॥ मेरे जिनजीकी माता देखा दुजा सुपनां । मेरे० । पूण्डरीक कज दल सम तनका, अनुपम रूप कुशल करना ॥ मेरे० १ ॥ जाके तेज दिशा दश दिपै, ककुद प्रधान दुरित हरणा । मेरे । अवयव सुन्दर है जिसका, दशन वरोवर शित बरणां ॥ मे० २ ॥ सकल मङ्गल माहि मङ्गल धोरी, सरल सुकोमल गुण धरणा । मेरे० । लक्षण सहित सुधानन सोहै, कहत अचिर तारण तरणा ॥ मे० ३ ॥ इति दुसरी सुपना सम्पूर्ण ।

॥ अथ तिसरी सुपना (सिंह) ॥
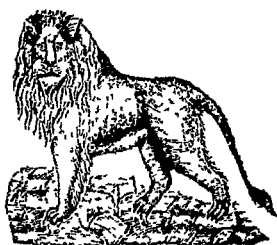
॥ दोहा ॥

जिन माताजी देखिया, तीजै सुपनै सिंह

उकर अति अदभुत नला, लीलावंत अवीह ॥

॥ राग ॥

॥ आज गईथी शमव शरणमे (एचालमे) ॥

कुछ सूती कुछ जागती माता, तृतीय सुपनकुं देखा जी । कु० । क्षीर पयोनिधि पानी जैसा, सिंह धवलसु विशेषाजी ॥ कु० १ ॥ नील कमल दल सरिषो शोभै, जाकै अधरकी रेखाजी । कुछ० । फजदल अशणसी मृदु जिम रसना, चपला जिम दृग पेषाजी ॥ कु० २ ॥ कुडण्लाकार लांगुल विराजै, केशा टोप निमेषाजी । कुछ० । गगनसे आवत जावत मुखमे, कहत अवीर सुवेषाजी ॥ कुछ० ३ ॥ इति तृतीयं सिंह स्वप्नम् ॥ ३ ॥

॥ अथ चौथो सुपना (श्री देवी) ॥

॥ दोहा ॥

त्रुरिय सुपन लक्ष्मी तणा, देखै जिनवर माय
अरथ विजावरीने समें, प्रमुदित चित हुलसाय ॥

॥ राग ॥

॥ कहरवाकी चालमे ॥

देखा सुखकारी रे, देखा सुखकारी, लक्ष्मी देवीका सुपन लक्ष० । कनक कमठ सम जावक जोगे, पयतल लाल बहु मनुहारी ॥ ल० १ ॥ ऊंचा हिमवन्त परवत ऊपर, अतिहं गम्भीर पदम दह भारी । ल० । ताविच कमल करिणा कमां है, तहां बशै श्री देवी महतारी ॥ ल० २ ॥ चामी क कटी मेषला करिके, कमर प्रदेशकी जाउं बलिहारी । ल० अञ्जन भमरा घन घटा जैसा, श्याम सरल केशो पर वारी ल० ३ ॥ थन युग कुम्भ हीयै हार टङ्कावली, युगल कुंडल का श्रवण सुधारी । ल० । कमल नयन लियै हाथमे पंखा, कहत अबीर ए बचन विचारी ॥ ल० ४ ॥ इति चौथी सु०

॥ अथ पांचमी सुपना (कुसुम दाम) ॥

॥ दोहा ॥

विविध जांतिके कुसुमकी, दाम युगल श्रीकार ।
माता सुपनै पांचमे, देखै अति मनुहार ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ मेरा हीरामण तोता, जरा० (एचाल) ॥

देखा २ गगनसे आता फूलमालाका जोड़ा सुरङ्गारे। चम्पा चम्पेली दमणा मरुवा, वउलसीरी हार सिङ्गारे ॥ दे० १ ॥ गुल मेहदी गुल सब्बो गेंदा, करण कुसुम बहु चङ्गारे दे०। मालती केतकी कुन्द मचकुन्दा, कमल गुलाब उतङ्गारे ॥ दे० २ ॥ पञ्चरङ्गे फूलणकी माला, मांनु मदनकी गङ्गारे। दे०। दशुं दिशामे परिमल पशरी, करत गुञ्जारव भृङ्गारे ॥ दे० ३ ॥ मुखमे जावत निरखै माता, हरषित अङ्ग उपङ्गारे। दे०। कहत अबीर ए सुपना गाया, मनमे धरीय उमङ्गारे ॥ दे० ४ ॥ इति पांचमी सुपना ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी सुपना (शशी) ॥

॥ दोहा ॥

चन्दा वदनी चांद्रमा, निरख हियै हरषाय।
छठै सुपनै निरमला, बहुत सुभग सुखदाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥

॥ जिया चतुर सुजान (एचाल) ॥

देखा जिनजीकी माय, शरद शशी सुख दायर । दे० । त कलश गो क्षीर सरिखा, उज्जल वरण सवायरे ॥ दे० १ रिपु ग्रहगण सुखको मण्डण, नलिणी वन विकसाय रे ॥ । मीन केतन शर पूरण वाला, रोहिणी कन्त कहायरे ॥ दे० २ ॥ जलनिधी जलकी वेल बढ़ावे, गगण प्रदीप शोभाय रे । दे० । सरब ओषधी नायक सुपना, कहत अबीर वनाय रे ॥ दे० ३ ॥ इति षष्ठम सुपना ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी सुपना (रवि) ॥
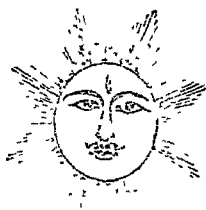
॥ दोहा ॥

सूरज देखा सातमे, सुपणे अतहि उदार ।
दिल राजी मन मोजमै, हरषित होय अपार ॥ १ ॥

॥ राग चैतीमें ॥

॥ जिनजी हमे कुछ दिजै ए चालमे ॥

सहस किरण अवतारी, देखा जिनजीकी महतारी । सह० । ऊगै उदयगिरी पर आई, दश दिशामे तेज सवाई ; रयणी तम दूर निवारी ॥ सह० १ ॥ केसूके कुसुम समाना शुक चञ्चु जेम बखाना ; अैसा अरुण बरण मनुहारी । स० घन शीत समूह नसावे, सब कज वनकुं विकसावे ; ग्रहगन को है अधिकारी ॥ सह० २ ॥ सुर गिरिकी प्रदक्षणा देता, हिम पडल गला वत जेता ; चन्दादिक तेज विडारी । स० ऊगते आथमती वेला, दोय वखत दरशका मेला ; कहै वचन अवीर सुधारी ॥ स० ३ ॥ इति सप्तम स्वप्नम् ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी सुपना (ध्वजा) ॥

॥ दोहा ॥

सुपन ध्वजाका आठमां, अति उत्तम आकार ।
निरखे हरषै चित्तमे, जिन माता जय कार ॥ १ ॥

॥ राग खेमटामे ॥

॥ क्या खड़ी चिमनमें तूं वुल वुल पुकार (एचाल) ॥

क्या खूब ध्वजा दे मजाकी वहार, कुन्दनका सोनेके दण्ड मझार । क्या० । काली नीली धोली लाल पीली, पञ्च रङ्गी पताका बड़ी विसतार ॥ कुन्दन० १ ॥ मृदु मारुतसै फर हर करती, अधिक सोभाते सौभै सार । कु० । संष अङ्क मचकुन्द फटिकके जैसा, सिंह धवल उसमै श्रीकार कुन्दन० २ ॥ निरुप द्रव आकाशमे उड़ती, मानूं नभ भेदन कुं तयार । कुन्दन० । कहत अबीर गगनसे आती, करती आनन्द हरष अपार ॥ कुं० ३ ॥ इति अष्टम सुपना ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी सुपना (कुम्भ कलश) ॥

॥ दोहा ॥

पूरण कुम्भ कलश व्रतै, नवमै सुपन मझार ।
जिन माता देखा सही, मङ्गल रूप उदार ॥ १ ॥

॥ राग पोटो ॥

॥ मेरो मन वश करिलीनो (ए चालमें) ॥

शुभ कल्याण का करता, कुम्भ सुपण सुखकन्द । शु० जातिवन्त सोना करिकै, दीपत रूप दिनन्द ॥ शुभ० १ ॥ निरमल जलसै भरियो, उत्तम तेजनो वृन्द । शु० । थानक सरव मङ्गलका, दूरकरै दुख दन्द ॥ शु० २ ॥ कण्ठ फूलंणकी माला, रतन सहित अरविन्द । शु० । दशदिशि उद्योत कारी निरखत अति आनन्द ॥ शु० ३ ॥ सम्पदा तीन वरगकी, करकै श्रेष्ठ अमन्द । शुभ० । नयनोंकुं करत आनन्दा, कहै वाचक इन्द्र चन्द ॥ शु० ४ ॥ इति नवमी सुपना ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी सुपना (पदम सरोवर) ॥
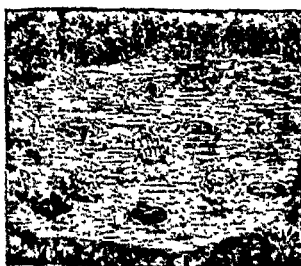
॥ दोहा ॥

पदम सरोवर देखियो, गगन थकी उतरन्त ।
दशमे सुपनाके विषै, जिनमाता जयवन्त ॥ १ ॥

॥ भरथरीकी चालमे ॥

॥ तुम बाला ब्रह्मचारी नेमजी (ए चालमे) ॥

दशंम सुपनै देखा जननी, पदम-सरोवर भारी । अभि-नव सूरज किरणसै करिकै, विकशै कमल हजारी ॥ दश० १ बहुत सुगन्धित जल अरुनाई, गहिरा बहुत गम्भीरा । मच्छ कच्छ ए जलधर जीवोसे, निरमल भरिया नीर ॥ दश० २ ॥ शोभा सुन्दर जेहनी देखी, भमरी भमर लुभावे । उड़ उड़ शकुन पक्षीका जोड़ा, जलमें चोंच डुबावै ॥ द० ३ ॥ कमल दलोंपर पानीका टबका, परतक्ष मोती जैसा । कहत अबीर वचन चतुराई, उत्तम सुपणां असा ॥ द० ४ ॥ इति दशर्मा सुपणां ॥ १० ॥

॥ अथ ईग्यारमी सुपना (समुद्र) ॥

॥ दोहा ॥

सुपण भला इग्यारमे, क्षीर समुद्र बखाण ।
देखत मन राजी भया, करत सदा कल्याण ॥ १

॥ राग ॥

॥ सहस फना मेरा साहिबा (ए चालमे) ॥

क्षीर सागरके सुपणेकुं, देख जिन जननी चित लोभारे क्षीर० । चन्द किरणके राश सरीषा, बिचमे श्रीवच्छ शोभा रे ॥ क्षीर० १ ॥ वेद दिशामे पशरत पाणी, उरमी चपल हजारारे । क्षीर० । प्रचुर प्रचण्ड पवनके योगे, उठत कल्लोल अपारारे ॥ क्षीर० २ ॥ चवदे सहस महा मोटी गङ्गा, नदीयोंका जल आयारे । क्षीर० । व्याकुल जहां तहां भमर पड़तहै, खलहल शबद सुनायारे ॥ क्षी० ३ ॥ जलचर जल ऊछाले बहुला, उठे फेण कपूरसा उचलारे । क्षीर० । चन्दा बदनी सुपना देखा, कहत अबीर सुबिमलारे ॥ क्षीर० ४ ॥ इति ईग्यारमो सुपना ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमो सुपना (बिमान) ॥
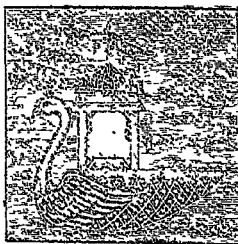
॥ दोहा ॥

चन्द बदन मृग लोयणी, देखा देव बिमान ।
मन विकशै तन उल्लशै, हरषित होय निदान ॥ १

॥ राग ॥

॥ मेरे दीन दयाल (ए चालमे) ॥

देखा देव बिमान सुपन बारमे अति परधान । देखा० अभिनव सूरज मण्डल तेज, तिम प्रभा तेहनी अधिक सहेज देखा० १ ॥ सुवरण मणि रतनोंसे तयार, आठ सहित थम्भ एक हजार । दे० । दीपक सम नभ तल दीपन्त, कनक पत्र मुगता लटकन्त ॥ देखा० २ ॥ सुर पादप फूलोंकी माल, बिविध चित्रामके रूप बिशाल । दे० । सजल जलद जिम गाजै जोर, दुन्दुभि शवद बजै चिहुं ओर ॥ देखा० ३ ॥ उत्रम धूपनो परिमल पूर, दशदिशि महकै अतहि शनूर । दे० । धवल वरण नित करत उद्योग, कहत अबीर ए वचन की ज्योत ॥ दे० ४ ॥ इति बारमी सुपना ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी सुपना (रतन ढिग) ॥
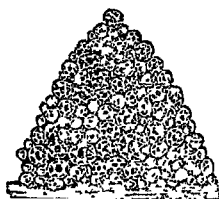
॥ दोहा ॥

विविध रतनके पुञ्जका, देख सुपन जिन मात ।
तिन करण त्रिक जोगसे, प्रमुदित पुलकित गात ॥

॥ राग ॥

॥ नाथ कैसा गजका फन्द छोड़ाया (ए चालमे) ॥

रतनकै पुञ्जका सुपन देखाया, जिन मातानें सुख पाया रतन० (ए टेर) पुलक वज्र नील रयण सासक फुनि करकेतन सुखदाया । लोहिताक्ष मरकत विद्रुमवली, फटिक सौगन्धिक भाया ॥ रतन० १ ॥ हंस गरभ अञ्जन चन्द्र प्रभ, प्रमुख ए रतन वताया । भूमण्डल सै गगन मण्डल तक, बहुत प्रकाश कराया ॥ रतन० २ ॥ वसुधा तल पर थापित ऊंचा, मेरू समान सवाया । तेरमे सुपनैकी ए महिमां, अवीर चन्द गुण गाया ॥ रतन० ३ ॥ इति अवीर चन्दजी कृत तेरमी सुपना ॥ १३ ॥

॥ अथ चौदमी सुपना (धूम रहित पावक) ॥

॥ दोहा ॥

वैश्वानर निरधूमका, चउदशमा गुण खांण ।
दुरित हरै मङ्गल करै, आगम वचन प्रमाण ॥ १ ॥

॥ राग, ठुमरीमे ॥

क्या खूब वहार ए सुपणेकी, सखी आज अजब छवि बन रही रे । क्या खूब० । विगत धूम विशाल धनञ्जय, पीत सुकल रङ्ग युत भईरे ॥ क्या खूब० १ ॥ झल झलती तेज करके मनोहर, धग धग शबदकुं कर रहीरे । क्या० । तर तम योगे चढती जुवाला, मांहों मांहें मिल गई रे ॥ क्या खूब० २ ॥ मिल मिल एकमे एक धसतुहै, सम सत एणै घृत सींची हुईरे । क्या० । ऊंची जुवाला गगनकुं जाती वेगसे बहुत चपल थईरे ॥ क्या खूब० ३ ॥ ऐसी अगनी चउदमै सुपनै, देख मगन मन हूवा सही रे । कहत अबीर ए वचन की रचना, घर घर रङ्ग रली भई रे ॥ क्या खूब० ४ ॥ इति चौदमी सुपना ॥ १४ ॥

॥ राग ॥

॥ गिरवर दरशन विरला पावे (ए चालमे) ॥

दश चार सुपना एह बताया, देखत प्रभु माता सुख पाया । दश० । गज जिम अन्तर वैरी भगावै, सञ्जम भार

वृषभ ज्युं उठावे ॥ दश० १ ॥ भाव रिपू जैसे सिंहसै नाशै, अनुभव श्री लक्ष्मीजुं प्रकाशै । दश० । कुशुमदाम जिम सुयश ते पशरे, चन्द ज्युं प्रभु मुख देखी सुख करै ॥ दश० २ ॥ रवि जैसे तम अज्ञान हरैगा, ध्वजा देखै जिन शिर छत्र धरैगा । द० । कलशंत मङ्गल श्रेणी विशेषे, सुर नर सेवे पद्म शर देखै ॥ द० ३ ॥ सागर जेम गम्भीर वखानै, सेवै अमर सुरी देव बिमानै । द० । ग्यानादिक गुण राशि रतनसै वधै तप तेज निरधूम अगनसै ॥ दश० ४ ॥ चउदे सुपनका फल ए वताया, आगम गण धरने फुरमाया । दश० । मकशुदावाद अजिमगञ्ज नांमे, श्री सङ्घ सुवश वसै सुख पामै ॥ द० ५ ॥ श्री वड़ तप गङ्गा नदि नन्दा, श्री पूज श्रीपार्शचन्द सूरिन्दा । दश० । वरतमान भट्टारक छाजै, श्री हेमचन्द सूरिन्द विराजै ॥ द० ६ ॥ भवि कज विकशन दिनकर जैसा श्री लब्धीचन्द सूरीश गणेशा । द० । तास शीश वाचक इंद्रा चन्दा, तस पद सेवक कहै गुण बृन्दा ॥ द० ७ ॥ कलशः, इम त्रुषार गुप्ती नन्द वसुधा, श्रावण मास वखानिये । सुदी पञ्चमी बुध करी रचना, सुगुण जन मन मांनियै ॥ मुनि वालचन्दकी प्रेरणासै, कहै ऋषि अबीरे दुना । कछु कसर होय सो शुद्ध कीजो, पण्डितसे करूं वन्दना ॥ १ ॥ इति श्री अबीर चन्दजी कृत चौदे सुपना पूजा सम्पूर्णम् ॥ * ॥

॥ कजली ॥

राणी त्रिसलाने देखा भला चउदे सुपना । चउ० । आधि-रात जगत जननी जी, कुछ सूती कुछ जागी सुमना ॥ रा० १ ॥ गइ गज गामिनी मधुर वचनसे, पूछत फल जिहां पीउ अपना ॥ रा० २ ॥ खतरी कुण्डमे हरष वधाई राय सिद्धारथके अङ्गना ॥ रा० ३ ॥ चैत सुदी तेरस प्रभु जीका जनम कल्याणक दिन थपना ॥ रा० ४ ॥ श्री महा-वीरके चरण कमलकुं, करत अबीर मुनी बन्दना ॥ रा० ५ इति पदं सम्पूर्णम् ।

---o:o:o---

॥ स्तवन ॥

॥ पीलु बारमा ॥

प्रभु पदकी सेवा कीयो न करेरे । प्र० । प्रभुपद सेवा अघ सब नासे, धरम ध्यानकी धूंस पड़ेरे ॥ प्रा० १ ॥ प्रभु पद सेवा न करे जड़ मतीया, लाख चौरासीगे फेरा फिरेरे प्र० २ ॥ सूरी आभ देवताये कीनी, राय प्रशेणीमे पाठ सिरेरे ॥ प्रा० ३ ॥ वाचककी अब एही अरज है, अगम अगोचर सुख वरेरे ॥ प्रा० ४ ॥ इति पदं ।

॥ मङ्गल ॥

॥ रागिणी वाहार ॥

आज महोच्छव रङ्ग रलीरी, जायो सुत त्रिमला देराणी कामित पूरण काम कलिरी । आ० । सझि सिनगार सकल सूर वनिता, आपन अ.पन मेल चलिरी ॥ आ० १ ॥ आवत सिद्धारथ के आङ्गन, पूरत मोतीयन चौक मिलिरी आ० । इन्द्र हुकुम्म करी धनद पठायो, सव बसुधा धन धान्य भरिरी ॥ आ० २ ॥ कनक रतमणि पञ्च वरणके, कुसुम विषरत गलीय गलीरी । आ० । इन्द्राणी मिल मङ्गल गावे, नाचित नाटीक सूर कुमरीरी ॥ आ० ३ ॥ वाजित घहर सवद कर दुन्दुभी, बीणा वेणु मृदङ्ग भलिरी । आ० । जय जय कार भयो तिहुं जगमे, व्याधि बिथा सव दूर टलिरी आ० ४ ॥ हरखचन्द जनमे प्रभुमेरे, मनकी आस्या सफल फलिरी ॥ आ० ५ ॥ इति पदम् ।

॥ चेतावरकी चाल ॥

मङ्गल राजे गिरनार, नेमपद मङ्गल है । देवा० । मङ्गल राज मतीपद पङ्कज, मङ्गल रह नेमिराय ॥ ने० देवा० ॥ मङ्गल गणपति मङ्गल पाठक, सप तपसि विचसार । ने० । मङ्गल धनधन्या मुनि नायक, मङ्गल सव अनगार ॥ ने० दे० जय जय जय खेम कुशल गुरू, आनन्द घन अवतार ॥ ने० ॥

॥ बधाई ॥

॥ राग धन्यासिरी ॥

बाजत रङ्ग बधाई नगरवामे, बाजत रङ्ग बधाई । जै जै कार भयो जिन शासन, बीर जिनन्दकी दुहाई ॥ बा० १ सब सखियन मिल मङ्गल गावे, मोतियन चौक पुराई ॥ बा० २ ॥ केतकि चम्पा फुल मङ्गावो, जिनजीनी अङ्गिया रचाई ॥ बा० ३ ॥ न्याय सागर प्रभु चरण कमलसे, दिन दिन जीत सवाई ॥ बा० ४ ॥ इति पदम् ।

॥ * श्रीरस्तु सुखम् * ॥